

कलियुग का चलन छोड़
सतयुग की संस्कृति अपनाने हेतु



HUMANITY FEST 2019

A Fest for the Quest of Self



प्रकाशक

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

“वसुन्धरा” ग्राम भूपानी—लालपुर रोड फरीदाबाद—121002 (हरियाणा)

ई—मेल: info@satyugdarshantrust.org

website: www.satyugdarshantrust.org

© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

ISBN : 978-93-85423-25-3

प्रथम संस्करण

जुलाई, 2020

A fest for the Quest of self

HUMANITY FEST 2019

6 June to 9 June 2019



29 December to 31 December 2019

SUMMER & WINTER EDITION

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

तो सब मिल कर बोलो

हम एक हैं, हम एक हैं, हम एकता के प्रतीक हैं।

तभी तो कहते हैं

मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद,

मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस संदर्भ में हम वायदा करते हैं

आत्मा और तन-मन के सहयोग से

हम रक्षा करेंगे, रक्षा करेंगे, रक्षा करेंगे

मानवता के सिद्धान्त की।

Humanity Fest - Summer Edition

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम दिवस (दिनांक 6 जून 2019)		
सांय: काल - 8.00 बजे		
1.	प्रार्थना- हे श्री साजन प्रभु हमारे	3
2.	जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे	3
3.	हम कौन शरीर या आत्मा ? (जिन्दगी एक मेला है)	6
द्वितीय दिवस (दिनांक 07 जून 2019)		
प्रातःकाल 6:00 बजे		
4.	प्रार्थना- हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम	12
5.	जीवन एक खेल	13
6.	विभिन्न खेल	15
प्रातःकाल 10 बजे		
7.	प्रार्थना - हे प्रभु बल बुद्धि और हमको	19
8.	Drill	21
9.	अनमोल मानव जीवन की सार्थकता (मानवता की शान की खातिर)	23
10.	आत्मिक ज्ञान (आत्मिक ज्ञान धारणा द्वारा)	33
दोपहर -3 बजे		
11.	Cooking without fire	41
12.	Games	44
सांय:काल 6 बजे		
13.	सदाचार के मार्ग पर प्रशस्त होने हेतु आत्मनिरीक्षण (में जो कहने लगा हूँ)	47

क्रमांक विषय पृष्ठ संख्या

तृतीय दिवस (दिनांक 8 जून 2019)

प्रातःकालीन सत्र समय 6.00 बजे

- | | | |
|-----|---|----|
| 14. | प्रार्थना-श्री साजन वन्दना | 61 |
| 15. | जूम्बा | 62 |
| 16. | अक्षर का अभ्यास घड़ी की टक-टक के साथ | 65 |
| 17. | Rain Dance | 69 |
| | प्रातःकाल 10 बजे | |
| 18. | Drill | 72 |
| 19. | चरित्र | 76 |
| 20. | व्यक्तित्व | 79 |
| 21. | मैं सजन हूँ सबको सजनता में लाना मेरा काम है (कव्वाली) | 81 |
| 22. | मौन | 84 |

सांयःकाल 6 बजे

- | | | |
|-----|------------------------|----|
| 23. | चौपाटी और टेलेन्ट हन्ट | 90 |
|-----|------------------------|----|

चतुर्थ दिवस (दिनांक 09 जून 2019)

प्रातःकाल 6 बजे

- | | | |
|-----|-------------------------------------|-----|
| 24. | हे श्री साजन प्रभु हमारे | 97 |
| 25. | योगा | 98 |
| 26. | क्रिकेट मैच | 99 |
| | प्रातःकाल 10 बजे | |
| 27. | सत्संग | 101 |
| 28. | ओ झ्म् दे विच मैं चमक रिहा (कीर्तन) | 102 |
| 29. | News clippings | 104 |
| 30. | Humanity Fest - Winter edition | 107 |

day ONE | प्रथम दिवस



Morning Session

6:00 am



प्रार्थना

हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
शीश अपना तेरे चरणों में झुका कर धर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
हे दयामय तूने जग को भर दिया निज प्यार से
जो भी आया शरण में खाली न लौटा द्वार से
खाली न लौटा द्वार से

हैं करोड़ों लोग तेरे दर से झोली भर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
माँगने से क्या मिलेगा हमको इस संसार से
सत्य है हर सुख मिलेगा आपके दरबार से
आपके दरबार से

फिर क्यों न हर श्वास तुम पर ही सदा निर्भर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
न ही वैभव न ही धन का कोष हमको चाहिए
तेरे चरणों में पिता संतोष हमको चाहिए
संतोष हमको चाहिए

सत्य वाणी कर्म में तुम मन सदा सुन्दर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे



जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे, महाबीर जी दे वचनां ते चल चल के
हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे, जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे





हम कौन शरीर या आत्मा?

जानो व मानो कि हम मानव रूप में एक शरीरधारी आत्मा हैं। हमारी चेतन आत्मा, माया के आवरण में ढँकी हुई है। सर्वमहान चित्रकार यानि परब्रह्म परमेश्वर ने प्रत्यक्ष इस अद्भुत मानव-शरीर का रेखांकन (Life Drawing) किया है। निवास स्थान की दृष्टि से यह भूलोक हम जीवों के रहने का लोक है जिसे जीव जगत अर्थात् प्राणियों का संसार कहते हैं तथा यह शरीर हम सब जीवों का गृह है। हम मानवों के साथ-साथ इस जगत में अन्य जीव-जन्तु व छोटे प्राणी भी कीड़ों-मकोड़ों के रूप में यहाँ रहते हैं। पृथ्वी, जल और वायुमंडल से हम सब प्राणियों के जीवन का पोषण होता है तथा हृदय स्थित जीवात्मा यानि प्राण शक्ति हम सब प्राणियों के जीवों की वृद्धि और विकास की कारणभूत शक्ति कहलाती है।

इसके अतिरिक्त जीवात्मा होने के नाते, हम में जीवित होने का भाव विद्यमान है और इसी के साथ-साथ हमारे अन्दर इतनी मानसिक दृढ़ता यानि हिम्मत भी है कि हम अगर चाहें तो खुद पर विश्वास रखते हुए इस जगत में ऐसी क्रांति ला सकते हैं जिससे जीवन के सत्य पथ से भटका हुआ हर मानव, पुनः सत्य धर्म की आराधना कर, सतयुग में प्रवेश कर सकता है।

सजनों अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को पहचान, हम सब ऐसा करने में पूरी तरह से कामयाब हो सकें, उसके लिए हमें न केवल अपने अन्दर जीवात्मा होने का भाव जाग्रत करना होगा बल्कि अपने मन-मन्दिर में सुशोभित परमात्मा के साथ तादात्म्य (अभिन्नता, एकरूपता) भी स्थापित करना होगा ताकि हम एक साहसी इंसान की तरह सदा अपने यथार्थ गुणों यानि धर्म पर स्थिरता से बने रह सकें।

यहाँ आत्मा और शरीर के मध्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए हम बताना चाहते हैं कि जहाँ अपने अंशी परमात्मा का अंश होने के कारण आत्मा अकर्ता, अजन्मा, पूर्ण, नित्य, अजर-अमर, अविनाशी, परम चैतन्य, रूप-रंग-रेखा से रहित निराकार, निर्विकारी चेतन सत्ता है और सब नामों व सब युगों से परे है, वहीं रज-वीर्य से उत्पन्न, पंच महाभूत से निर्मित, अन्न से बढ़ने वाला तथा जीवात्मा को सर्वोत्तम आश्रय प्रदान करने वाला यह परिवर्तनशील, नाशवान, जड़, विकारी शरीर, रागग्रस्त होने के कारण, कर्तापन के अभिमान, कर्म भोग, रूप-रंग-रेखा, जन्म-मरण व काल-चक्र में बँधा हुआ है। इसी कारण जाग्रत अवस्था में स्थूल जगत के सारे कार्य सम्पन्न करने वाला यह स्थूल शरीर, हर युग में नित नए नामों से अलंकृत होता है और द्वेष युक्त, भयग्रस्त व

तीनों तापों से संतप्त रहता है। इसके अतिरिक्त व्यायाम से इस शरीर को बहुत शक्तिशाली बनाया जा सकता है। इसके विपरीत आलस्य, चिंता या क्रोधाग्नि से यह शनैः-शनैः दुर्बल व पतित हो क्षीण हो जाता है यानि मरण अवस्था को प्राप्त हो नष्ट हो जाता है।

यहाँ यह भी जानो कि जहाँ आत्मा के साथ जुड़ने पर इंसान के अन्दर नित्यता, निर्मलता, निश्चलता, निर्विकारिता, निर्दोषता, निर्भयता, निष्कलंकता, समता, समदर्शिता, सज्जनता आदि का भाव पनपता है वहीं शरीर के साथ जुड़ने पर उसमें द्वि-द्वेष, नश्वरता, मिथ्यता, चंचलता, विकार-वृत्ति, दुष्टता, विषमता, दुर्जनता व मलिनता पनपती है। यही नहीं इस शरीर से ही उसमें औलाद की तरह रोग व विषय-वासना यानि काम-वासना आदि उत्पन्न होती है और शरीर के साथ जुड़ा वह इंसान उपद्रवी हो, शैतान की भांति झगड़ालू व शरारती प्रवृत्ति का बन जाता है। स्पष्ट है सजनों जहाँ आत्मीयता अनुरूप भाव-स्वभाव अपनाने वाला इंसान सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण होता है, वहीं शारीरिक भाव-स्वभाव अपनाने वाला इंसान दुराचारी, भ्रष्टाचारी व व्यभिचारी होता है और वह जीवन में जो कुछ भी करता है स्वार्थपरता के भाव से ही करता है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों यदि वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि आज का इंसान देहबद्ध हो, अपने ही शरीर का मानसिक चित्रण करने तक सीमित रह गया है यानि उसका बौद्धिक स्तर शारीरिक क्रियाकलापों तक ही सीमित हो सदा इसी विचार में खोया हुआ है कि मेरा शरीर दूसरों को कैसा लगता है?

स्पष्ट है आज का मानव आत्मवृत्ति के स्थान पर शरीर सेवा में ही रत हो शरीर वृत्ति से ही सब कुछ कर रहा है इसलिए उस स्वार्थी को केवल अपने शारीरिक सुख की ही चिंता सताती रहती है और वह आत्मिक गुणों व शक्तियों की अनमोल संपदा को विस्मृत कर, आत्मोन्नति हेतु कुछ नहीं कर पा रहा है। शायद इसी भ्रम की वजह से ही आज का कमज़ोर मानव आधि-व्याधि से त्रस्त हो, दीन-हीनों की भांति निरर्थक जीवन जी रहा है और अपने जीवन प्रयोजन को सिद्ध नहीं कर पा रहा है।

इसी भयावह परिस्थिति से कुल मानव जाति को उबारने हेतु सजनों वेद-शास्त्र हर मानव को पुकार-पुकार कर, देहासक्ति त्याग कर, अपने तन-मन को परमात्मा के प्रति निष्काम भाव से अर्पित कर, अपने मन को सदा परमात्मा में लीन रखने का आवाहन् दे

रहे हैं और कह रहे हैं कि हे जीवो ! परमात्मा को पति परमेश्वर मानते हुए उसी के हुकम अनुसार सदा अच्छे व नेक कर्म करो और ए विध् सदा सौभाग्यशाली बने रहो । जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही प्राणी के अन्दर जीवित होने का भाव स्थिरता से बना रह सकता है और इस प्रकार वह मौत से निर्भय रहते हुए इस जगत में जो कुछ भी करने आया है उसे सहज सिद्ध कर अपने जीवन का महान लक्ष्य प्राप्त कर सकता है ।

इस बात को स्मरण रखते हुए सजनों आपके लिए भी बनता है कि आप इस सिद्धान्त को मानते हुए कि 'जीवन का आधार तत्त्व आत्मा है, स्थूल शरीर नहीं', अपने मनोरोगों की चिकित्सा खुद आप करो और इस हेतु सांसारिकता के भाव-स्वभाव त्याग कर, आत्मिक भाव-स्वभाव अपनाने में किंचित मात्र भी विलम्ब न करो । जानो यह अपने आप में वह जीवनदायक बात है जिसका पालन करने पर आपका, उस जीवनदाता के साथ अटूट संयोग बना रहेगा और आप इस विचार पर कि 'ईश्वर है अपना आप', सुदृढ़ता से खड़े हो जाओगे । यही नहीं ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आपका इस तरह काया-कल्प भी हो जाएगा कि स्वतः ही आपके मन में अन्य प्राणियों के प्रति दया भाव जाग्रत हो उठेगा ।

यकीन मानो सजनों ऐसा शुभ होने पर आप इन्द्रिय निग्रही बन यानि अपनी विकार विकृतियों का दमन आप कर, एक परोपकारी इंसान की तरह, सद्मार्ग से भटके हुए हर इंसान को, जन्म-मरण के चक्रव्यूह से उबारने में सक्षम हो जाओगे । इस तरह आप प्राणयुक्त होकर सहज ही, गिरते हुआँ को उठाने में, रोते हुआँ को हँसाने में, उजड़े हुआँ को बसाने में, कुरस्ते पड़े हुआँ को रास्ते पर लाने में व बिछुड़ी हुई सुरतों को उनके वास्तविक अजर-अमर कंत से मिलाने में सक्षम हो जाओगे । कहने का तात्पर्य यह है कि अपने अन्दर विद्यमान जीवन शक्ति को पहचानने पर ही आप, उसका उचित ढंग से, समय व परिस्थिति अनुसार प्रयोग करने में सक्षम बन, अपना यथार्थता अनुरूप समुचित विकास कर, ओजस्वी व तेजस्वी, श्रेष्ठ मानव बन पाओगे ।

इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों मानो कि यह जीवन परमात्मा की अद्भुत देन है और हमारे वास्तविक अस्तित्व का आधार और कोई नहीं अपितु वह आत्मा ही है । अतः अपनी उस जीवनशक्ति आत्मा का बोध करने हेतु, अपने जीवन का अध्ययन करने वाले विज्ञानी बनो और इस प्रकार अपनी मानवीय विशिष्टताओं के अनुरूप निर्विकारी, जीवन जीना आरम्भ कर दो ।

इस संदर्भ में सजनों यह तो सर्वविदित है कि आज के कलुषित समयकाल में चाहे इस जगत में मानवों की भीड़ है परन्तु उनमें से कोई विरला ही वास्तविक जीवन जीने में समर्थ है अर्थात् अधिकतर मानव रोने-झुखने के स्वभाव में उलझ, सत्य-धर्म के पथ से भटक चुके हैं व दानवता अपनाकर कष्टों भरा जीवन जी रहे हैं।

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होते हुए सजनों हमारे साथ ऐसा न हो, इस हेतु हमें चाहिए कि हम सदा परिपूर्ण चेतन अवस्था को प्राप्त रह, मानव-धर्म अनुरूप, निरासक्त जीवनयापन करने के प्रति उत्साहपूर्ण होकर, प्रसन्नता से सक्रिय तो रहें ही, साथ ही परम पुरुषार्थ द्वारा अपने असलियत स्वरूप में स्थिर बने रहते हुए, अपने मन-वचन-कर्म द्वारा अन्यो को भी जीवन देने का गुण खुद में विकसित करें और ए विध् जगत हितकारी नाम कहाएं।

ऐसा सुनिश्चित करने हेतु सजनों कुछ भी बुरा देख या पढ़-सुन, बुराई को ग्रहण कदापि न करो यानि अपने जीवन को आप संकट में न डालो अपितु ब्रह्म शब्द विचारों के ग्रहण द्वारा, अपने जीवन की रक्षा आप करते हुए अपना जीवन चरित्र पावन, उज्ज्वल व परम पवित्र बनाओ। इस तरह अपने आप को उस चैतन्य का सूक्ष्म अंश मानते हुए, काल्पनिक जगत के साथ जुड़ने की भूल न करो तथा इसके स्थान पर जीवन दाता को ही परम प्रिय मानते हुए सदा उस जीवन आधार परमात्मा के ही संरक्षण में समर्पित भाव से बने रहो। निश्चित रूप से सजनों ऐसा करने पर आपके अन्दर स्वतः ही जीवन सम्बन्धी विचार पनपेंगे और आत्मनिर्भरता का भाव जाग्रत होगा। तभी तो आप परोपकार के निमित्त सेवा भाव से जीवन जीते हुए अपने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त की जीवन यात्रा को सुखकारी बना सकोगे।

जानो हकीकत में यही अपने प्राणाधार यानि जीवन के स्वामी के मार्गदर्शन में सही ढंग से जीवन जीने की विधि है। इसलिए तो बार-बार कहा जाता है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का मन लगाकर अध्ययन करना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो और परम पुरुषार्थ द्वारा जीवन के सार तत्त्व को जान यानि जीवन दशा में ही आत्मज्ञान प्राप्त कर, जन्म-मरण के बंधन से छूट परमानन्द को पाओ। अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि:-

जिन्दगी एक मेला है

जिन्दगी एक मेला है
तू कहाँ अकेला है
यह भी है, यह भी है
वह भी है, हाँ वह भी है

इसलिए तो कहते हैं
मिलजुल कर चलो
समभाव समदृष्टि अपना
सजन भाव फड़ो

फिर जीवन में जो भी करो
मिल कर करो, मिल कर करो
वही करो हाँ वही करो
जो सबके लिए अच्छा हो

ऐसा सुनिश्चित करके ही
सब मानव बनो, हाँ मानव बनो
और मानवता में आकर के
जितना चाहो पर उपकार करो

day TWO | द्वितीय दिवस



श्री साजन वन्दना

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

शंख - चक्र - गदा - पद्मधारी ।
ये दर्शन है बड़ा महान ।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

न जप न तप न भजन बन्दगी होगी ।
एक अवस्था होगी जगत जहान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

सतयुग में सतजबान होगी ।
एक दृष्टि एकता होगी महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

कुदरती कला से सब उपजेगा ।

दिव्य दृष्टि होगी महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

एक दृष्टि और एक ही दर्शन होगा ।

होगी युवा अवस्था महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

जीवन एक खेल

सजनों हम सब जानते हैं कि यह संसार ईश्वर द्वारा रचित एक विचित्र खेल है जिसके अंतर्गत वह परमात्मा स्वयं ही सर्गुण स्वरूप में विभिन्न रूप, रंगों, आकारों-प्रकारों में भासित होकर अपने ही रचाए खेल को निर्लिप्तता से खेल रहे हैं। इस तथ्य से सजनों स्पष्टतः जाहिर होता है कि यह खेल ईश्वर के हुक्म से चल रहा है व उसको बहुत पसंद है। जब ईश्वर को यह खेल बहुत पसन्द है, तो परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति मनुष्य होने के नाते हम इस खेल से कैसे दूर रह सकते हैं? हमें भी अपने तन-मन को स्वस्थ व निरोगी रखने के लिए व आत्मिक विजय प्राप्त करने के लिए, इस जीवन रूपी खेल को हँसते-हँसते, विवेकशीलता के साथ, ईश्वर के हुकम अनुसार पूरी चैतन्यता व मुक्त यानि निरासक्त भाव से खेलना है व सदा निष्पाप बने रहना है।

कहने का आशय यह है कि ईश्वर के हुकम के विरुद्ध चल, विकार-वृत्तियों व मोह-माया के कारण, जीवन में आने वाले सुख-दुःख, हार-पराजय, रोग-सोग, उतार-चढ़ाव, मान-अपमान, तेरी-मेरी, वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि द्वंद्वों में फँसकर इस जीवन को तनावयुक्त नहीं बनाना अपितु समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन द्वारा, हँसते-हँसते जीवन के उन्नति पथ में अवरोध उत्पन्न करने वाली इन बाधाओं को संतोष व धैर्य बल द्वारा पार कर, पूरी तरह से अपना ख्याल व ध्यान लक्ष्य पर केन्द्रित रखना है और परस्पर सजनता का वर्त-वर्ताव करते हुए, सच्चाई-धर्म के रास्ते पर निष्कामता से सीधे चलते जाना है। निःसंदेह ऐसा करने से जीवन पथ सत्य की ताकत से आलोकित हो जाएगा और अज्ञान स्वरूप सांसारिक विकृतियाँ व परेशानियाँ स्वतः मिट जायेंगी। इस तरह जीवन उपवन खिल उठेगा और उसकी सुगंधि से सारा गुलशन महक जाएगा। सजनों यदि चाहते हो कि ऐसा ही हो तो फिर मिल कर बोलो:-

आओ खेलें मिल कर खेल
जिससे हो दिलों का मेल
हाथ पकड़ कर इक दूजे का
आगे ही बढ़ते जाएं
जब तक मंजिल न मिले
यह कदम न रुकने पायें
ए विध् पहुँच अपनी मंजिल पर
जीवन सफल बनायें

यहाँ खेलों के महत्त्व से परिचित कराते हुए हम आप सबको बताना चाहते हैं कि खेल मनोरंजन का हेतु हैं। खेलने से शरीर का व्यायाम हो जाता है तथा पसीने के रूप में शरीर में जमा मल बाहर निकल आता है। शरीर और मन में ताजगी आती है, माँसपेशियाँ सुगठित होती हैं। मन की ऊब मिटाने और चित्त में प्रसन्नता लाने के लिये खेलों की भूमिका अतुलनीय है। यही नहीं खेलों से शारीरिक, मानसिक क्षमता व शक्ति बढ़ती है, नवस्फूर्ति आती है, आलस्य व थकावट मिटती है। ऊंचे स्तर का आत्मविश्वास पैदा होता है, जीवन में अनुशासन आता है तथा एकाग्रता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त खेलों द्वारा हम में टीम भावना व परस्पर सहयोग की भावना जाग्रत होती है, झिझक मिटती है। मानसिक तनाव व चिन्ताओं से मुक्ति प्राप्त होती है और हम मानसिक व बौद्धिक रूप से स्वस्थ यानि निरोगी रहते हैं। इस तरह खेल कूद स्वास्थ्यवर्द्धक होते हैं व इस द्वारा मनुष्य में पूरी तन्मयता से उद्देश्य सिद्ध करने की लगन व अपनी समस्त शक्तियों को केन्द्रीभूत कर विजय प्राप्त करने का साहस भी जाग्रत होता है। इसी के साथ-साथ खेलों से खिलाड़ी के मन में गिर-गिर कर उठने की चाहना यानि पराजित होने पर भी आत्मग्लानि नहीं अपितु पुनः संघर्ष द्वारा दक्षता हासिल करने की भावना, चोट लगने पर भी प्रतिशोध नहीं अपितु सहनशीलता का गुण उदित होता है। इस तरह जीवन की सफलता, प्रगति और समृद्धि के लिए खेलों द्वारा विकसित गुण व्यक्ति के जीवन में नींव के पत्थर साबित होते हैं।

जीवन में खेलों के महत्त्व को देखते हुए सजनों सारतः हम तो यही कहेंगे कि जीवन रूपी इस खेल में सुनिश्चित रूप से विजयी होने के लिए, अपनी योग्यता और शक्ति पर दृढ़ विश्वास रखते हुए, आत्मसंयम द्वारा यानि अपनी इन्द्रियों और मन को वश में रखते हुए, जोश के स्थान पर होश में बने रहते हुए, खेलने के तौर तरीके सीखो। इस तरह मनोवेगों से मुक्त रह व हार-जीत में समता रखते हुए जीवन रूपी खेल को ईश्वर द्वारा प्रदत्त विवेकशक्ति द्वारा, सत्य-धर्म युक्त नीति-नियमों अनुसार, पूरी दिलचस्पी में आकर निष्कामता व निपुणता से शुद्ध खिलाड़ी भावना से युक्त होकर खेलने की आदत विकसित करो। इस हेतु जीवन का हर छोटा-बड़ा कार्य ईश्वर के निमित्त समर्पित कर, सेवा भावना से करो। इस तरह अपने समस्त सांसारिक कार्यों को ईश्वर की आराधना में बदल दो और कर्म-बन्धन से मुक्त हो जग से आज्ञाद हो जाओ यानि जगत विजयी घोषित हो अखंड सुख-समृद्धि को पाओ।







Morning Session

10:00 am



प्रार्थना

हे प्रभु बल बुद्धि और हमको ऐसा ज्ञान दो।
जो भी जीवन में करें , वह हर कर्म निष्काम हो।।

धैर्य धर कर धीर हों, निर्भय बन हम वीर हों।
ख्याल निर्विकार हो और स्वस्थ अपने शरीर हों।।
हे प्रभु बल बुद्धि और

जो भी सोचें सत्य हो, सत्य निहित हर बात हो।
जो कर्म भी हम करें, वह सत्य के प्रतीक हों।।
हे प्रभु बल बुद्धि और

मन में हो न लोभ मोह, इतना सुदृढ़ संतोष हो।
प्रसन्नता हो हर हाल में, दुःख-सुख में चिंता मुक्त हों ।।
हे प्रभु बल बुद्धि और

धर्म में निष्ठा हमारी, ईश्वरीय गुण अनुकूल हों।
सदाचारी ऐसे बने कि भूल कर भी न भूल हो।।
हे प्रभु बल बुद्धि और

पढ़ लिख जो भी बनें, मन में न अभिमान हो।
त्याग और दया का भाव, हम में सदा प्रधान हो।।
हे प्रभु बल बुद्धि और



Drill

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

तो सब मिल कर बोलो

हम एक हैं, हम एक हैं, हम एकता के प्रतीक हैं।

तभी तो कहते हैं

मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस संदर्भ में हम वायदा करते हैं

आत्मा और तन-मन के सहयोग से

हम रक्षा करेंगे, रक्षा करेंगे, रक्षा करेंगे

मानवता के सिद्धान्त की।



समभाव
देखो सजनो
जनघर बनघर,
समभाव
देखो
जगत जहान।

ओथे
पात पात न
सीरी गरीबी,
एहो दृष्टि
सजनों

अनमोल मानव जीवन की सार्थकता

सजनों सर्वप्रथम अपने आप को भाग्यशाली मानो, अपने आप को भाग्यशाली मानो क्योंकि कई जन्म-जन्मांतरों के पश्चात् आपको ईश्वर की अपार कृपा से यह मानव चोला प्राप्त हुआ है।

हाँ.. हाँ...देखो.. ध्यान से देखो इस सर्वोत्कृष्ट मानव चोले को जो अपने आप में सुन्दरता व शांति-शक्ति का प्रतीक है।

किस का प्रतीक है?

सुन्दरता व शांति-शक्ति का प्रतीक है।

यही नहीं ईश्वर ने आपके इस मानव चोले को विशेष विवेकशक्ति से भी नवाज़ा है। जानते हो विवेकशक्ति क्या होती है?

मौन।

विवेकशक्ति वह मानसिक शक्ति होती है जिसके द्वारा हम अच्छे और बुरे अथवा करने योग्य तथा न करने योग्य कार्य को समझ पाते हैं और सत्य और असत्य का ज्ञान प्राप्त कर, अच्छी समझ वाले सकारात्मक इंसान कहलाते हैं।

इसके अतिरिक्त विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा ही हमें प्रकृति (वह मूल शक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत का विकास किया है तथा जिसका रूप दृश्यों में दृष्टिगोचर होता है) और पुरुष (अकर्त्ता तथा असंग चेतन पदार्थ जो प्रकृति से भिन्न तथा उसका पूरक अंग माना जाता है, परमात्मा) के अंतर का ज्ञान प्राप्त होता है और हम सुनिश्चित रूप से सत्य धारणा कर भ्रमरहित निर्दोष जीवन जी पाते हैं।

इसी तथ्य के दृष्टिगत तो सजनों कहा जाता है कि हमें प्रत्येक काम, अन्य किसी के प्रभाववश नहीं, अपितु सदा अपने विवेक से अच्छे-बुरे का निर्णय करके ही, करना चाहिए। निश्चित रूप से ऐसा करने वाला इंसान ही विचारवान व न्यायशील बन तत्त्वज्ञानी नाम कहा सकता है। अब पता चला विवेकशक्ति क्या है और इसका मानव जीवन में क्या लाभ है?

हाँ जी ।

तो फिर इसी संदर्भ में यह भी जानो कि इसी शक्ति के प्रयोग द्वारा हम जीव, माया के आवरण में ढकी चेतन आत्मा और प्राणियों के इस मिथ्या जगत को भी भली-भांति जान पाते हैं ।

क्या आप मानते हो कि जो हम कह रहे हैं वह सत्य है ?

हाँ जी ।

तो फिर मानो कि इस शरीर में व्याप्त चेतन आत्मतत्त्व यानि आत्मा का यथार्थ ज्ञान होते ही हमारे मन में, जीवित होने का भाव उत्पन्न होता है और हम मानसिक रूप से इस सिद्धान्त पर कि 'जीवन का आधार तत्त्व अजर अमर आत्मा है, नश्वर शरीर नहीं', सुदृढ़ता से डटे रहने का साहस जुटा पाते हैं ।

यह हिम्मत दिखा पाते हैं तभी तो अपने वास्तविक गुणों व शक्ति को पहचान पाते हैं और हमारे मन में जगतीय बन्धनों से मुक्त रहने का भाव बना रहता है ।

इस तरह सजनों इस आत्मिक भाव से युक्त रहने पर फिर हमारे मन में सांसारिक राग-रंग, सम्बन्धों आदि के प्रति आसक्ति नहीं पनपती और हम वैरागियों की तरह मोह-ममता आदि से रहित रह, मोक्ष यानि बार-बार जन्म लेने और मरने के बंधन से छुटकारा पाने के निमित्त, आत्मविश्वास के साथ, परम पुरुषार्थ दिखा पाते हैं ।

जानो इस अंतिम पुरुषार्थ को दिखाने पर मोक्ष का द्वार सहज ही खुल जाता है और मोक्ष के योग्य प्राणी इस जगत से आज़ाद हो यानि परम तत्त्व में विलीन हो विश्राम को पा जाता है । यह है सजनों इस अनमोल मानव जीवन की सार्थकता ।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हर मानव के लिए आवागमन के बंधन से छुटकारा पा, सुनिश्चित रूप से परमपद प्राप्त करने हेतु आवश्यक होता है कि वह:-

1. एक तो समुचित पुरुषार्थ दिखाकर, सांसारिक मिथ्या पदार्थों के साथ-साथ, अपने शारीरिक गुणों व शक्ति से परिचित होने के लिए, भली-भांति भौतिक ज्ञान प्राप्त करे ।

2. दूसरा अपनी आत्मिक गुणों व शक्ति को धारण करने के लिए अपने ख्याल को

आत्मस्वरूप में ध्यान स्थिर रखते हुए, विधिवत् विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा सम्पूर्ण आत्मिक ज्ञान प्राप्त करे।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि इस क्रिया में सफलता कैसे प्राप्त करी जाए?

तो जानो इस क्रिया में सफलता प्राप्त करने हेतु हमारे लिए:-

1. शारीरिक गुणों व शक्ति का वर्धन करने हेतु, वैसी ही गुणवत्ता वाले सात्विक व पौष्टिक आहार का सेवन करना अनिवार्य है।

2. आत्मिक गुणवत्ता अनुसार, शास्त्र विदित विचारों को धारण कर, ऐसा सशक्त ओजस्वी व तेजस्वी इंसान बनने की जरूरत है, जो स्वावलंबी बन, अपने आत्मबल के प्रयोग द्वारा, अपनी शारीरिक गुणवत्ता व शक्ति का, जगत कल्याण के निमित्त, उचित ढंग से प्रयोग कर पाने में पूरी तरह से सक्षम हो।

3. अपनी विवेक की आँख खुली रखने की आवश्यकता है ताकि हृदय सदा एकरस प्रकाशित रहे और अंतर्निहित वास्तविक सत्य उजागर हो व हमारी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी बाणा निर्मल बना रहे और हम सदाचारिता पूर्ण जीवन व्यतीत करें। याद रखो यदि ऐसा न किया यानि अगर विवेक की आँख फूट गई तो हृदय आकाश में घना अंधकार छा जाएगा। परिणामस्वरूप अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हो नकारात्मक ही सोचेंगे, बोलेंगे व करेंगे और इसी पराधीनता के कारण जीवन बोझ बन जाएगा।

ऐसा न हो इसलिए कह रहे हैं कि एक विदूषी व विवेकशील इंसान बनने हेतु, पूर्ण एकाग्रचित्तता से, अध्ययन क्रिया द्वारा, मन-चित्त लगा कर, भौतिक ज्ञानी बनने के साथ-साथ आत्मिक ज्ञानी बनने की भी दिल से चेष्टा करो और गुणवान व बलवान नाम कहाओ।

यही नहीं इस संदर्भ में यह भी याद रखो कि अगर हमारे पास आत्मिक ज्ञान होगा तो हमारी सुरत यानि ख्याल का सदा परमतत्त्व के संग योग बना रहेगा और हमारा मन, परमेश्वर के इलाही रंग में रंग, आत्मतुष्ट अवस्था में सधा रहेगा। ऐसा होने पर इस मिथ्या जगत में शारीरिक रूप से विचरते हुए भी हमारे मन में किसी प्रकार का कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत नहीं होगी। जिसका सीधा सा अर्थ होगा कि हम इस जगत की मिथ्यता यानि माया के खेल की रमज भली-भांति जान गए हैं और समझ गए हैं कि यहाँ से कुछ भी धारण करना हमारे लिए हानिकारक है।



उपरोक्त तथ्य के दृष्टिगत समझ में आता है कि ख्याल का प्रभु चरणों में सदा जुड़े रहना, अपने मन में दीनबंधु भगवान के प्रति निर्मल प्रेम विकसित कर, उन संग मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की बात है। इस पुरुषार्थ द्वारा जिस किसी भी हिम्मतवान की एक दफा प्रभु संग अटूट मित्रता स्थापित हो जाती है वह सदा मैत्री-भाव में सुदृढ़ बने रह, इस संसार के उद्धार के निमित्त अपने इस पाँच तत्वों के शरीर को अर्पण करने में ही अपनी शान समझता है। यह अपने आप में पुनः अनमोल मानव जीवन के परम प्रयोजन की सार्थकता का सूचक होता है।

इस बात को समझते हुए सदा ख्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल कर, प्रभु संग अपनी मित्रताई जोड़े रखो और दिनचर्या के दौरान आचार-विचार व व्यवहार की तरफ से खुद पर सतर्क रहो कि किसी भी अवस्था या परिस्थिति के कारणवश हमारा परमेश्वर से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध न टूटे यानि उस सच्चे मित्र से हमारा सदा स्नेह बना रहे। सुनिश्चित रूप से ऐसा करने हेतु सजनों सार्थक शब्द ब्रह्म विचारों पर अपना सर्वस्व निष्ठावर कर हर हालत में उन पर डटे रहो और ए विधु ईश्वर के स्नेह पात्र बन अपना व सबका कल्याण करते हुए परोपकार कमाओ।

इस संदर्भ में जानो कि जहाँ कहीं भी ऐसा निर्मल मैत्री भाव होता है वहाँ तेरी-मेरी, वड-छोट, अपने-पराए, अमीरी-गरीबी, मान-अपमान, वैर-विरोध आदि का सवाल नहीं पैदा होता अपितु सजन भाव अनुसार जीवन में परस्पर आनन्ददायक सजनता का ही व्यवहार चलता है। कहने का तात्पर्य यह है कि तब हर बात व कर्म धर्मसंगत व सत्य का प्रतीक होती है। फलतः ऐसे सौभाग्यशाली इंसान के लिए इस जगत में अपने समस्त कर्तव्यों का पालन शास्त्रविहित् करते हुए, अपने मन-वचन-कर्म द्वारा सत्य को प्रतिष्ठित करना सहज हो जाता है। इस तरह इस क्रिया द्वारा जिस किसी के भी हृदय में सत्य स्थापित हो जाता है वह स्वतः ही अपने अंतर्निहित आत्मिक गुणों व शक्ति को जान इस तरह परिपूर्ण चैतन्य अवस्था को प्राप्त हो जाता है कि उसके चित्त में शुभ वृत्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं और इंसान स्वतः ही निष्काम कर्म करने की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

यकीन मानो सजनों हकीकत में ऐसे सात्विक यानि सत्त्वगुण से युक्त सतोगुणी इंसान के भाव-स्वभाव का ताना-बाणा ही विशुद्धता का प्रतीक होता है और वह श्रेष्ठ आचरण करने वाला प्राणवान ही, धीरता से, अपने आत्मिक गुणों पर स्थिर बने रह, आजीवन

निष्कंटक सत्य-धर्म के रास्ते पर टिका रह पाता है। तभी तो वह सदाचारी व धर्मात्मा सजन पुरुष परमात्मा का सुपुत्र कहलाता है और अपने उस इलाही मित्र से सब कुछ यानि संसारी व परमार्थी राज्य प्राप्त करने का योग्य अधिकारी सिद्ध होता है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अपने मानव जीवन को सकार्थ करने हेतु आप भी ईश्वर के योग्य सत्यनिष्ठ सपुत्र बनने के प्रति अपने मन में तीव्र उत्कंठा पैदा करो और प्रणव के अजपा जाप द्वारा अपने ख्याल को मौन में उतरने दो और गहराने दो। ऐसा करने से ख्याल ब्रह्म सत्ता से जुड़ता जाएगा और अपना असलियत स्वरूप नज़दीक प्रतीत होने लगेगा। विश्वास रखो निरंतर अभ्यास से जो सत्य स्वरूप समीप अनुभव हो रहा है वह आपके हृदय में प्रकाशित हो जाएगा।

इस प्रकार आप जान जाओगे कि सर्वोत्तम चेतना के रूप में अंतर्व्याप्त सत्य हमारे जीवन का वह सबसे उपयोगी अंश है जो हममें भरपूर शक्ति का वर्धन करता है। इसके विपरीत रजोगुण (जिससे भोग-विलास, चंचलता तथा दिखावे की रुचि उत्पन्न होती है) व तमोगुण (जिसके प्राधान्य से मनुष्य बुरे से बुरे कार्य करता है) की प्रधानता के कारण जिस मानव शरीर के हृदय में यह सत्य नहीं रहता यानि अज्ञान के कारण आलोप हो जाता है, वह नीरस हो जाता है।

इस बात की गहनता को समझते हुए सजनों रजोगुण व तमोगुण त्याग कर, अपने अस्तित्व के आधार स्वरूप सत्य तत्त्व का सत्कार करो और पुण्य कर्म करने में प्रवृत्त हो इस मानव चोले को सम्मानित करते हुए अखंड यश कीर्ति को प्राप्त करो। जानो ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही अपनी वास्तविक सत्ता को आत्मसात् कर, सर्वश्रेष्ठ मानव बन पाओगे।

इसके विपरीत यदि किसी कारण भी वास्तविक अपनी इस नित्य सत्ता से विद्रोह कर, सांसारिक सत्ता स्वीकारी तो ख्याल इस कदर मिथ्यता यानि नश्वरता से जुड़ जाएगा कि फिर सत्यनिष्ठा से जीवन जीना असंभव हो जाएगा। इस तरह यह बड़ी भूल कर, सत्य का रास्ता छोड़ असत्य पथ के अनुगामी हो जाओगे और छल-कपट करते हुए निराधार, निर-उद्देश्य पापयुक्त जीवन व्यतीत करोगे। फिर चाह कर भी मन में आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के प्रति अभिरुचि उत्पन्न नहीं होगी और आपका समुचित स्वाभाविक विकास भौतिक ज्ञान तक ही सीमित रह जाएगा।

ऐसा होने पर सजनों भौतिक संपदा उपलब्ध होते हुए भी, अन्दर असंतोष का भाव पनपेगा और मन में सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति के प्रति कामना का भाव जाग्रत हो जाएगा। ऐसे में यदा-कदा कामना सिद्ध होने पर मूर्ख लोभी इंसान की तरह हर्षा उठोगे और कामना पूरी न होने पर क्रोधित हो दूसरों के प्रति वैर-विरोध और द्वि-द्वेष का भाव अपना बैठोगे। कहने का आशय यह है कि आपके मन में सद्गुणों के स्थान पर ऐसे दुर्गुण भर जाएंगे जो आपकी वृत्तियों को विकृत कर मानव धर्म पर स्थित रहने के अयोग्य बना देंगे। परिणामतः आप एक अनैतिक व दुराग्रही यानि मनमत अनुसार चलने वाले जिद्दी इंसान की तरह स्वार्थ सिद्धि के लिए अपने पद व शक्ति का बेईमानी के साथ उपयोग करने से भी नहीं सकुचाओगे और इस जगत में दानवता के भाव से विचरते हुए भ्रष्टाचार और व्यभिचार करने पर विवश हो जाओगे। व्यभिचारी बन गए तो किसी स्त्री या पुरुष के साथ अनुचित यौन सम्बन्ध रखने से भी नहीं सकुचाओगे और अस्थिर बुद्धि इंसान की तरह जीवन में प्रत्येक कार्य नियम के विरुद्ध करने में ही आनन्द मनाओगे। यह अपने आप में सद्व्यवहार के नियम और रीतियों से गिरने व जीवन के विचारयुक्त मार्ग से भटकने जैसी दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी क्योंकि इस तरह से नैतिक पतन होने पर आप अपने जीवन का कोई भी कर्त्तव्य समाज की नैतिक मान्यताओं के अनुसार नहीं निभा पाओगे। कहने का आशय यह है कि फिर चारित्रिक अधम अवस्था को प्राप्त हो, एक दुश्चरित्र इंसान की तरह धर्म, नीति आदि की दृष्टि से अनुचित व निंदनीय चलन अपना, उत्तम व्यवहार कर पाने में असक्षम हो जाओगे और अनमोल मानव जीवन व्यर्थ गँवाओगे।

उपरोक्त पतनोन्मुख अवस्था को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपने आज के चारित्रिक रूप का सही तरीके से आंकलन करें। इस आंकलन के दौरान यदि लगे कि किसी भी दुष्प्रभाव में आकर हम मानव धर्म हार चुके हैं तो अपने साथ कुछ भी अनिष्ट होने से पूर्व ही विचारशील बन खुद को संभाल लें। इस तरह नकारात्मक वातावरण से उबर, मन-वचन-कर्म में सकारात्मकता अपना, उत्तम मनुष्य कहलाने हेतु पुनः चरित्रवान बनें।

यहाँ याद रखने की बात यह है कि यदि चरित्र बिगड़ा तो जीवन व्यर्थ हो जाएगा और अगर अच्छे आचरण द्वारा चरित्र उज्ज्वल हो गया तो सहज ही जीवन का मुख्य अर्थ सिद्ध हो जाएगा। सजनों यदि चाहते हो कि ऐसा ही हो तो फिर संकल्प लो कि आज के पश्चात् अज्ञानवश न तो हम कुछ मिथ्या सोचेंगे व बोलेंगे और न ही कोई काम धर्म

विरुद्ध करेंगे। इसके स्थान पर हम वास्तविक शब्द ब्रह्म विचार धारण कर, सत्यवादी इंसान बनेंगे और ए विध् शारीरिक व मानसिक रूप से सदा स्वस्थ बने रह, एक जितेन्द्रिय इंसान की तरह समभाव-समदृष्टि पर मजबूत बने रहने वाले सजन पुरुष कहलाएंगे। अंत में सजनों ऐसा सजनता से परिपूर्ण इंसान बनने हेतु हम तो आपको यही कहेंगे.....क्या?

मानवता की शान की खातिर
अपने जीवन उत्थान की खातिर
चरित्रवान बनो चरित्रवान बनो

मानव रूप में पैदा हुए हो
खुद को समझो खुशनसीब
निर्विकारी भाव अपनाकर
खोल लो अपनी तकदीर

आत्मिक ज्ञान पढ़-समझ कर
अपने यथार्थ गुणों को जानो
तुम कितने शक्तिशाली हो
ए विध् वह शक्ति पहचानो

झूठ को छोड़ो सत्य अपनाओ
धर्म की राह पर चलते जाओ
ए विध् परोपकार कमा कर
सच्चे इन्सान कहलाओ

फिर निर्भय हो जो करना है
निष्काम भाव से करते जाओ
इस तरह आगे बढ़ते बढ़ते
अपनी जीवन मंजिल पाओ





आत्मिक ज्ञान

आत्मिक ज्ञान क्या है?

उत्तर:-आत्मिक ज्ञान दो शब्दों से मिल कर बना है यथा आत्मिक तथा ज्ञान। आत्मिक का अर्थ है अपना 'स्वयं का', निज का तथा ज्ञान का अर्थ है जानकारी, बोध, पहचान। इस अर्थ से आत्मज्ञान का अर्थ हुआ स्वयं की जानकारी, बोध या पहचान। सरल शब्दों में आत्मज्ञान से तात्पर्य अपने वास्तविक आत्म/परमात्म शाश्वत स्वरूप को पूर्ण रूप से जानने/पहचाने से है। इसे आत्मा का स्वरूप ज्ञान या ब्रह्म का ज्ञान यानि आध्यात्मिक ज्ञान भी कहते हैं।

क्या आत्मिक ज्ञान सामान्य ज्ञान की तरह ही है?

उत्तर:-नहीं, यह सामान्य ज्ञान से सर्वथा भिन्न है क्योंकि यह बुद्धि की प्रखरता का नहीं अपितु माया के स्पर्श से दूर आत्मा की निष्कलुषता यानि पावनता का प्रतिबिम्ब है। यह आत्मा की पुकार है जिसको सुनकर व्यक्ति सन्मार्ग पर चलने के लिए स्वतः प्रेरित हो सजनता का प्रतीक बन जाता है।

आत्मिक ज्ञान को ग्रहण करना क्योंकर आवश्यक है? या आत्मिक ज्ञान प्राप्ति का जीवन में क्या महत्त्व है?

उत्तर:-इसी के द्वारा आत्मा तथा परमात्मा की जानकारी प्राप्त होती है और अपने वास्तविक नित्य ब्रह्म स्वरूप का साक्षात्कार करना सहज हो पाता है। अन्य शब्दों में पवित्र, निश्छल व निष्काम अन्तःकरण में अपने आप उपजने वाला (स्वयं स्फुरित) इसी कुदरती ज्ञान द्वारा सत्य का बोध होता है और जीव आत्मदर्शन का परमसुख प्राप्त कर आत्मतुष्ट हो जाता है। इस तरह परम संतोष प्राप्त होने पर मन में ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की रुचि पनपती है और ए विद् सुरत शब्द का सदा मेल बना रहता है। ऐसा होने पर उस इंसान के लिए ब्रह्मज्ञानी बन यानि अपने वास्तविक गुण व शक्ति पहचान, धीरता से संकल्प रहित होकर इस जगत में विचरना सहज हो जाता है। तभी तो वह सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रहते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल, मानवता के

सिद्धान्त अनुसार दूसरों की भलाई के निमित्त अपने स्वार्थ का सहर्ष त्याग करने में सक्षम हो पाता है और ए विध् परोपकार कमाते हुए परमात्मा के नाम से जाना जाता है ।

इस तथ्य को जानने के पश्चात् सजनों हमारे लिए क्या करना बनता है ?

उत्तर:-इस तथ्य को जानने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपना जीवन चरित्र सुन्दर और परम पवित्र बनाने के लिए आत्मविद्या द्वारा आत्मा-परमात्मा और प्रकृति का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर, आत्मा-परमात्मा का स्वरूप जानने वाले ब्रह्मज्ञानी बनें । जानो ऐसा सुनिश्चित करना आध्यात्मिक प्रगति द्वारा अपने ही प्रयत्न से अपना उद्धार कर आत्मविजयी होने जैसी शुभ बात है ।

तो सजनों क्या हम मानें कि यह जानने के पश्चात् आप भी आत्मज्ञान प्राप्त कर ऐसे ही आत्मविजयी इंसान बनना चाहते हो ?

उत्तर:-हाँ जी ।

तो फिर उठते-बैठते, सोते-जागते अपने मन में नित्य परमात्मा का विधिवत् चिंतन करना कदापि न भूलो ताकि आत्मिक विचार आपके हृदय में इस तरह ठहर जाएं कि वे आपकी प्रकृति का अभिन्न अंग बन जाएँ और आपके अन्दर एकरूपता का भाव जाग्रत हो जाए । आत्मसुधार हेतु सजनों इस कार्य की सिद्धि के निमित्त स्वयं को पूरी तरह से परमात्मा के प्रति समर्पित करना आवश्यक समझो । आशय यह है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की तरह केवल परमात्मा की ही भक्ति यानि आराधना व साधना करते हुए इस तरह आनन्दविभोर हो जाओ कि आपके मन में मिथ्या संसार के स्थान पर परमात्मा के प्रति परम अनुराग पैदा हो जाए और आप उन द्वारा प्राप्त शब्द ब्रह्म विचारों के समर्थक बन, उन्हीं के हुक्मानुसार इस जगत में सब कुछ करते हुए भक्त शिरोमणि कहलाओ । जानो यह अपने आप में हंगता-ममता त्याग परमात्मा के प्रति पूर्ण श्रद्धा व निष्ठा रखते हुए एक सच्चे सेवक की तरह श्रेय मार्ग का अनुगामी बन अंत श्रेष्ठता को प्राप्त होने की बात है ।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह बात सदा याद रखो कि वह अविनाशी परमात्मा भक्त वत्सल हैं

और जिस भक्त को उनका स्नेह प्राप्त हो जाता है वह कृपानिधान उस साधक के निष्काम भक्ति भाव पर शीघ्र ही प्रसन्न हो उसे अपने वास्तविक ज्ञान, गुण व शक्ति से परिचित करा देते हैं। ऐसा अद्भुत घटित होने पर वह सचेतन इंसान, सांसारिक ज्ञान, कर्म आदि अन्य तत्त्वों की अपेक्षा, सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर स्थिरता से बने रहने को अधिक महत्त्व देता है। अन्य शब्दों में वह चित्त शुद्धि हेतु अपने मन को बाह्य विषयों से हटाकर सदा अंतर्मुखी अवस्था में साधे रखता है। इस तरह जब चित्त की संसार से विरक्ति हो जाती है यानि दुःख-सुख आदि भावों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है तो स्वतः ही वह शांत हो जाता है और मन में प्रसन्नता के भाव का उद्भव होता है। फलतः इंसान के अन्दर घर कर गए सभी मानसिक दोष समाप्त हो जाते हैं और इंसान स्थिर बुद्धि हो अकलमंद नाम कहाता है। जानो यह अपने आप में मनमत से छुटकारा पा गुरुमत पर सुदृढ़ता से बने रहने का पुरुषार्थ दिखाने की बात होती है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम भी ऐसा बुद्धिमान व निर्दोष इंसान बनने हेतु स्वयं को सत्यता से परखें यानि आत्मनिरीक्षण करते हुए अपने भावों, वृत्तियों, गलतियों और दोषों को जानने-समझने का सही-सही प्रयत्न करें। इस तरह इस प्रयास द्वारा अपने हित को ध्यान में रखते हुए स्वयं निर्धारित करें कि जैसे हम इस समय बुराई के मार्ग पर प्रशस्त हैं क्या हम भविष्य में भी उसी कुमार्ग पर बने रह बुरे मानव कहलाना चाहते हैं या फिर आत्मनिरीक्षण द्वारा पाई स्वाभाविक कमजोरियों पर आत्मनियन्त्रण से विजय पा एक श्रेष्ठ मानव की तरह जीवन जीने में सक्षम होना चाहते हैं?

उत्तर:- एक श्रेष्ठ मानव की तरह जीवन जीने में सक्षम होना चाहते हैं।

सजनों अगर हकीकत में श्रेष्ठता के प्रतीक बन अपना जीवन चरित्र उज्ज्वल बनाना चाहते हो तो फिर अपने सारे कार्यों का केन्द्र आत्मा को बनाओ। इस तरह चेतनायुक्त होकर अपने व्यक्तित्व को इतना ऊँचा उठाओ कि आपका दृष्टिकोण बाह्य भौतिक पदार्थों के अनुरूप नहीं वरन् आत्मिक स्वरूप अनुसार पनपे। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर न तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आपको छू पाएंगे और न ही आप अविचारयुक्त स्वार्थपरता के अवलड़े रास्ते पर चढ़ आत्मघाती बनने की भूल करोगे।

अतः मानो कि थोड़ी हिम्मत जुटा कर आप सहजता से आत्मा की अजरता-अमरता के भाव पर स्थित रह, वह सब कुछ निर्भय हो कर सकते हो, जो भी करने इस जगत में आए हो। इस तरह पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु जीवन के हर पहलू में उन्नति के प्रति परमात्मा की कृपा प्राप्त करने के सुपात्र बन सकते हो।

इस संदर्भ में सजनों अगर कहना मानो तो चित्त वृत्तियों को विकृत करने वाले अन्य विषयों पर बातचीत करने के स्थान पर अपने विषय में विचार करने की आदत डालो और ए विध् आत्मचिंतन द्वारा, आत्मप्रत्यक्ष करते हुए इस तरह चेतनायुक्त हो जाओ कि अपने हृदय प्रकाशित कुदरती विचारों को सबके सम्मुख व्यक्त करने के योग्य बन जाओ। यहाँ याद रखने की बात है कि एक आत्मज्ञानी ही जितेन्द्रिय बन इस जगत में नीतिसंगत विचरते हुए अपने ख्याल को इस जगत से आज़ाद रख सदा निर्लिप्त व निर्विकारी बना रह सकता है।

इसके अतिरिक्त अपने ख्याल को अंतर्मुखी रखने का महत्त्व समझो और किसी विध् भी इसके विपरीत चलन अपना, अपने साथ शत्रुता मत करो।

अंत में हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि इस ऊँचे आध्यात्मिक लक्ष्य को पाने के लिए अपनी इच्छाओं और सांसारिक स्वार्थों का त्याग करने में मत सकुचाओ। यहाँ तक कि अपने धन या ज्ञान आदि का दिखावा करना या स्वयं को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णित करने की आदत भी छोड़ दो। इस तरह स्वयं के विषय में भ्रमरहित हो, मन में अपनेपन का भाव रखते हुए, सबके प्रति परमात्म दृष्टि रखो यानि समभाव नजरों में कर परस्पर समदर्शिता अनुरूप सजनता का व्यवहार करना सुनिश्चित करो। ए विध् आत्मविश्वासी बन स्वयं को मानसिक व शारीरिक कष्टों से बचा लो।

सारतः सजनों हम तो यही कहेंगे कि नकारात्मक भाव-स्वभावों को त्याग, 'सर्वत्र एकात्मा है' इस सिद्धान्त को अपनाओ और अपने मन को सदा प्रभु में लीन रखते हुए, अपनी रक्षा आप करने वाले आत्मविजयी इंसान बनो। जानो ऐसा बनने पर ही अपनी बुद्धि, योग्यता और शक्ति पर भरोसा रखते हुए, एक आत्मनिर्भर इंसान की तरह, अपने जीवन का हर पल-क्षण पवित्र निष्काम कर्म करने में लगा, आत्मज्ञान से तृप्त योगी





यानि आत्मभाव में रमण करने वाले विवेकशील इंसान बन सकोगे और ब्रह्म नाल ब्रह्म हो, ब्रह्म नाम कहा सकोगे। यह होगा सजनों आत्मिक ज्ञान प्राप्ति द्वारा आवागमन के चक्रव्यूह से विमुक्त हो अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाना व अपना जीवन सफल बनाना। आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इस हेतु ध्यान से गायकी के माध्यम से मानव जीवन में आत्मिक ज्ञान की महत्ता सुनो:-

आत्मिक ज्ञान की मानव जीवन में महत्ता

आत्मिक ज्ञान धारणा द्वारा
मन में अपने प्रकाश करो
ए विध इस ज्ञान की लौ से
मन में छाया अंधकार हरो
आत्मिक ज्ञान है निज का यथार्थ जनाता
तभी तो मानव समभाव समझ है पाता
समभाव है वह आत्मतुष्टि
जिससे मन में जाग्रत होती है धैर्य वृत्ति
आत्मिक ज्ञान से मानव बने ऐसा विद्वान
कर सकता सहजता से सत्य की पहचान
तभी तो उसमें कोई दोष नहीं पनपता
हर प्राणी के प्रति वह परमात्म-दृष्टि है रखता
आत्मिक ज्ञान से मानव बने गुणवान
उसका हृदय होता है गुणों की खान
कहलाता है वह अच्छा इंसान,
होता है जिसकी यश-कीर्ति का बखान
आत्मिक ज्ञान से मानव बने बलवान
उसे आत्म शक्ति का होता है ज्ञान
किसी विपत्ति से नहीं वह डरता
हर जन का वह शुभ है करता

आत्मिक ज्ञान से जो मानव बने धनवान
उसका मन माया से नहीं होता चलायमान
सदा रखता है भले-बुरे का ज्ञान
परोपकारिता होती है उसकी पहचान

आत्मिक ज्ञान से मानव बने बुद्धिमान
रखता यथार्थ स्वरूप की पहचान
होती है उसकी ध्यान शक्ति महान
तभी पा सकता है वह पद निर्वाण

आत्मिक ज्ञान से मानव बने ज्ञानवान
इन्द्रियजीत होती है उसकी पहचान
तभी जगत में नहीं होता गलतान
कहलाता वही है श्रेष्ठ इंसान

यह एक सम्पूर्ण मानव की पहचान है। ऐसे मानव को 'ईश्वर है अपना आप' होने का व 'जो भी चाहे कर सकने का' एहसास ही नहीं अपितु खुद पर पूर्ण विश्वास भी होता है। इसलिए उस पराक्रमी का कोई सानी नहीं होता। आत्मज्ञान के मानव जीवन में इसी महत्त्व को, युग पुरुषों ने अपनी करनी द्वारा, सिद्ध कर दिखलाया। अतः हमें भी आत्मिक ज्ञान की मानव जीवन में महत्ता को समझते हुए, इसे प्राप्त कर आत्मसात् करना है ताकि हम अपने जीवन के महान लक्ष्य 'मोक्ष' को इसी जीवनकाल में प्राप्त कर अपना जन्म संवार सकें।

Afternoon Session

3:00 pm

COOKING
WITHOUT
FIRE







GAMES





Evening Session

7:00 pm



सदाचार के मार्ग पर प्रशस्त होने हेतु आत्मनिरीक्षण

सजनों सब जानते हैं कि जीवन के दो रास्ते हैं। एक अविचारयुक्त अविवेक का मार्ग है, दूसरा विचारयुक्त विवेक सम्पन्न मार्ग है। एक सच-झूठ की परख किए बगैर ही मनमत अनुसार अपनी धारणा निर्मित कर यानि दुर्बुद्धि बन संसार में फँसने का मार्ग है, दूसरा स्थिर बुद्धि द्वारा संसार से छूटने का मार्ग है। एक कवलड़ा यानि कठिनाईयों व ठोकरों भरा रास्ता है, दूसरा सवलड़ा व सुखदायक विजय पथ है। एक क्रिया कारक और भूल का मार्ग है जो नरक की ओर जाता है और दूसरा स्वतः सिद्ध निज परमात्म स्वरूप के यथार्थ ज्ञान का मार्ग है जो सीधा परमधाम की ओर जाता है। इस तरह दोनों मार्ग परस्पर जुदा हैं तथा इनमें से उत्तम विचारयुक्त विवेक सम्पन्न मार्ग पर चलने वाला परमार्थी इंसान ही आत्मस्वरूप हो अपने मन सहित इस जगत पर विजय प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ नाम कहाता है।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों आज आप भी अंतर्निहित मानवीय गुणों के विकास हेतु, सर्वप्रथम आत्मनिरीक्षण द्वारा स्वयं द्वारा चयन किए गए मार्ग का सत्यता से जायजा लो और तत्पश्चात् आत्मनियन्त्रण द्वारा दुराचारिता का स्वार्थपर रास्ता छोड़ सदाचार के मार्ग पर प्रशस्त होने के लिए मानसिक रूप से तत्पर हो, समभाव-समदृष्टि के सबक को आत्मसात् करने के योग्य बन सजनता के प्रतीक बन जाओ:-

आत्मनिरीक्षण

क्या आप 'मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं' इस नित्य भाव पर स्थित हो? या फिर अपने शरीर को ही अपना वास्तविक स्वरूप मानकर, अपना सम्बन्ध नश्वरता के साथ जोड़, भोग और संग्रह की वृत्ति में फँस गए हो यानि राग-द्वेष, वैर-विरोध, मान-अपमान, तेरी-मेरी आदि का शिकार हो, आत्मीयता के भाव से हट सांसारिकता अपना बैठे हो?

क्या आप अपनी आत्मा की अजरता-अमरता को स्वीकारते हुए, जीवन की विभिन्न अवस्थाओं यथा जन्म मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी, सुख-दुःख आदि में अपनी मानसिक अवस्था को स्थिर रखते हुए समरस बने रह पाते हो? या फिर मन की चंचलता के अधीन हो जीवन की कठिनाईयों और कठोर परीक्षाओं से हतोत्साहित हो, एक कायर व डरपोक इंसान की तरह उनसे तनावयुक्त होकर पलायन करना पसंद करते हो?

क्या आप 'ईश्वर सत्य है और वही सत्य ही हमारा आत्मिक स्वरूप है', इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए अपनी स्वाभाविक सुन्दरता व पावनता यथा साधे रख एक चरित्रवान इंसान की तरह इस जगत में विचरने में सक्षम हो ? या फिर दुनियावी चलन अपना कर चरित्रहीनों की तरह जीवनयापन कर रहे हो ?

क्या आप भौतिक ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ आत्मिक ज्ञान प्राप्ति हेतु, धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर, उनमें विदित विचारों का चिंतन व मनन करते हो व तद्नुरूप नैतिक सिद्धान्तों और नियमों के अनुसार आचरण करना उचित समझते हो ? या फिर अपने अधर्म के रास्ते पर चलते हुए, धर्म का आडम्बर रचने वालों के अनुगामी बन चुके हो ?

क्या आप किसी बात की चिन्ता, अपेक्षा, परवाह या शिकायत किए बगैर, सदैव अपनी प्रारब्ध व हैसियत में ही संतोषी व प्रसन्न बने रह पाते हो ? या फिर हर इच्छा या कामना की पूर्ति हेतु लालायित होकर असंतोष के भाव से घिर विवेकशक्ति खो बैठते हो ?

क्या आप अपने चित्त की स्थिरता साधे रख, बहादुरों की तरह जीवन की हर ऊँच-नीच यानि सुख-दुःख व विपत्तियों का सामना धैर्य व साहस से करते हुए निर्विकारी बने रह पाते हो ? या फिर बात-बात पर या प्रतिकूल परिस्थितियों में अधीर व उतावले होकर, अन्दर-बाहर, सारा समय कोहराम मचाए रखते हो और अपनी वृत्तियों को विकृत कर - क्रोध के शिकार हो चुके हो ?

क्या आप सत्य में पूरी निष्ठा रखते हुए, परस्पर लेन-देन आदि में नेक नीयत से युक्त होकर अपनी जीविका सत्यता व ईमानदारी से चलाते हो व अपने प्रति ईमानदार बने रहते हुए अपनी कथनी-करनी में सामंजस्य बनाए रख पाते हो ? अथवा स्वार्थपरता व लोभ-लालच के कारण, अभी भी झूठ व बेईमानी का भाव आपको सताता रहता है और इस हेतु आप निज धर्म तक हार बैठने की गुस्ताखी कर बैठते हो ?

क्या आप आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानने में विश्वास तथा इन विश्वासों के अनुसार आचार-व्यवहार करते हुए सदाचारी व धर्मज्ञ इंसान बन पा रहे हो ? या फिर पाश्चात्यवादी आधुनिक संस्कृति का समर्थन करते हुए व नास्तिकवादी भौतिक प्रवृत्ति का अनुकरण करते हुए, वाद-विवाद, तर्क-वितर्क में उलझ दुराचारी व अधर्मी इंसान बन रहे हो ?

क्या आप मोक्ष प्राप्ति हेतु निष्कामता के भाव का महत्त्व समझते हुए, कर्मरत रहते हुए भी कर्मफल की आकांक्षा से अपने मन को मुक्त रख पाते हो? या फिर विषयासक्ति में फँस, फल प्राप्ति की आशा से हर कर्म करते हुए जन्म- मरण के अधिकारी बनने की तैयारी कर रहे हो?

क्या आप अंतर्मुखी होकर विरासत में मिली आत्मिक ज्ञान की संपदा का प्रयोग करते हुए, आत्मीयता युक्त भाव-स्वभाव अपना पा रहे हो ? या फिर भौतिकवादी संस्कृति का समर्थन कर व जगतीय विषयों का रसिया बन यानि बहिर्मुखी होकर, अंधाधुंध प्रतिस्पर्धा व प्रतिद्वंद्वता की होड़ में परस्पर लड़ते-झगड़ते हुए द्वि-द्वैत, वैर-विरोध, तेरी-मेरी, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा-हिंसा जैसे दानवीय/शारीरिक भाव-स्वभाव अपना बैठे हो?

क्या आप धर्म और अधर्म का विवेक रखते हुए, सदा अच्छे विचार धारण करने के प्रति सतर्क रहते हो ताकि आपके मन में सत्य प्रकाशित रहे और शांति बनी रहे या फिर असत्य धारणा को महत्त्व देते हो?

क्या आप आहार-विहार, शारीरिक क्रियाओं, रैहणी-बैहणी के साथ-साथ पारिवारिक व सामाजिक जीवन में अनुशासन अपनाकर अपने मन व इन्द्रियों को वश में रख पा रहे हो? यदि नहीं तो जानो विद्यार्थी जीवन जो भविष्य की आधारशिला है, उस दौरान अपने आचार-विचार व व्यवहार को नियन्त्रित रख, अनुशासन प्रिय बनने वाले यानि प्रत्येक कार्य युक्तिसंगत समुचित ढंग से करने वाले का ही जीवन सदा सुखदाई होता है।

क्या आप शिष्टाचार के नियम अनुसार अपनी वाणी को कंचन रखते हुए सदैव आवश्यकता अनुसार सीमित, सन्तुलित, सत्य, सार्थक, प्रिय, हितकारी और मधुर वचन बोलते हो यानि द्वि-द्वेष के स्थान पर जी-जी का, सजनता युक्त व्यवहार करते हो? इसी तरह क्या आप कुछ भी बोलने से पूर्व विवेक से उसकी जाँचना-तोलना करते हो व वाणी से सभी का सम्मान करते हो? या फिर गाली-गलौच युक्त अशिष्ट, निरर्थक, अप्रिय, असत्य, अहितकारी, कटु शब्दों का इस्तेमाल कर हर किसी को अपमानित करते रहते हो?

क्या आप प्रत्येक काम को करते समय अपने भाव, विचार या इरादे को पवित्र व निष्कपट रखते हुए व कदम-कदम पर अपने शारीरिक स्वभावों को विचार से पकड़ते

जगत ज
आथे
अ
र



हुए, संकल्प रहित अवस्था को धारने के प्रति जाग्रत हो पा रहे हो? या फिर काम, क्रोध, लोभ, मोह के कुसंग में फँस, अपने संकल्प को अस्वच्छ बना रहे हो? यदि ऐसा ही है तो जानो कि संकल्प की अस्वच्छता शारीरिक -मानसिक रोगों का हेतु होती है। अतः आप ऐसी भूल कदाचित् मत करो।

क्या आप 'सर्वव्यापक भगवान है' इस अवधारणा को आत्मसात् कर व नित्यता के भाव पर स्थिर रह, समदर्शिता अनुरूप सब को एक सा देखते व समझते हुए अपनी दृष्टि की कंचनता बनाए रख पा रहे हो? या फिर विभिन्न रूप, रंगों वाले प्राणियों के प्रति कामासक्त हो, दृष्टि की कंचनता खो बैठे हो?

क्या आप सत्-शास्त्र का विचार कर, कर्णेन्द्रिय से केवल अच्छी व सार्थक यानि विचारयुक्त उपयोगी और हितकारी बातें सुन उन्हें ही अपने हृदय में ठहराते हुए अपना हृदय स्वच्छ बनाए रखते हो? या फिर संसारी बातों को सुनने के कनरस में फँस, बुरी व अश्लील, असंगत और अप्रासंगिक यानि निन्दासूचक बातें ही सुनते व करते हुए अपने हृदय को मलीन बना अज्ञानमय अधम अवस्था को प्राप्त हो रहे हो?

क्या आप अपनी शारीरिक स्वस्थता हेतु अपनी रसनेन्द्रिय यानि जिह्वा को वश में रखते हुए रसास्वादन का गुलाम बनने के स्थान पर, सात्विक व पौष्टिक आहार-विहार ही करते हो या फिर राजसिक व तामसिक आहार से युक्त असंतुलित, अपौष्टिक आहार व माँसाहारी व नशीले पदार्थों का सेवन कर अपनी सर्वांगीण स्वस्थता का नाश कर रहे हो?

क्या आप अपनी मानसिक स्वस्थता हेतु सारा दिन अत्यन्त एकाग्रचित्तता व ध्यान से मूलमंत्र आद् अक्षर यानि प्रणव के अजपा जाप द्वारा या फिर शब्द ब्रह्म विचारों के सेवन द्वारा अपने मन-चित्त व वृत्तियों को शुद्ध व शांत अवस्था में साधे रख अपना हृदय पात्र निर्मल व उदार बना पा रहे हो या फिर हर समय व्यर्थ की सोचों व नकारात्मक बातों में बिता, अपने मन-चित्त व वृत्तियों को अशुद्ध व अशांत बना कर, हृदय पात्र को दूषित व संकीर्ण बना मिथ्याचारी बन रहे हो?

क्या आप अच्छा इन्सान बनने हेतु प्रतिदिन आत्मविश्लेषण की क्रिया को करते हो? यानि दिनचर्या के दौरान यदा-कदा व रात्रि में सोने से पूर्व कुछ मिनटों के लिए स्थिर होकर खुद को खुद देखने का प्रयास करते हो कि आपके अंतःकरण पर क्या घट रहा

है, आप क्या कर रहे हो, क्या सोच रहे हो। इस तरह क्या आप हर समय अपने ख्याल, वाणी व कर्म पर निगाहबानी रखते हुए अन्दर व बाहर के समुचित वातावरण को सकारात्मक बनाए रखते हो? या फिर बुरा सोचते हुए, बुरा बोलते हुए व बुरा करते हुए अन्दरूनी वातावरण के साथ-साथ समुचित बाह्य वातावरण को भी नकारात्मक बनाए रख एक भिक्षुक की तरह जीवनयापन कर रहे हो?

कहीं आप अविचार, आलस्य, अकर्मण्यता या लापरवाही वश आज का काम कल पर टालने के कारण, जीवन के परम पुरुषार्थों को यथासमय सिद्ध करने के प्रति हार तो नहीं खा रहे? यदि ऐसा ही है तो जानो कि अनथक शारीरिक व मानसिक क्रियाशीलता ही आत्म-उद्धार का अमोघ साधन है। अतः आप भी ऐसे ही परिश्रमी बन अपना जीवन बनाओ।

कहीं आप किसी शब्द के यथार्थ अर्थ के विपरीत, कुछ कहकर किसी को अपनी बातचीत के जाल व आडम्बर में फँसा कर धोखा तो नहीं देते अर्थात् चतुराई का भाव तो नहीं अपनाते? कहने का अभिप्राय यह है कि कहीं आप अपना हित साधने के निमित्त ऐसी बात तो नहीं करते जिससे बात बढ़े व जिससे बात के दो अर्थ निकलें और आपस में मनमुटाव हो?

क्या आप अपने मन की लालसाओं की पूर्ति के वशीभूत हो छिपकर यानि दूसरों की दृष्टि से बचाकर, उनकी वस्तुओं, धन-संपदा आदि का हरण यानि चोरी तो नहीं करते? यदि ऐसा ही है तो जान लो कि ईश्वर सर्वव्यापक और हाज़िर-नाज़िर है यानि हर पल हमारे अन्दर बैठकर सब कुछ देख रहे हैं। उनकी निगाह से कुछ बाहर नहीं है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सजनों संतोष अपनाओ और अपनी हैसियत में ही प्रसन्न बने रह, लोक-परलोक में चोर बन जन्म-मरण के रूप में मिलने वाले दंड से बच जाओ।

कहीं आप जिह्वा रस या कनरस के अधीन हो, पीठ पीछे किसी की किसी दूसरे से शिकायत, निंदा-चुगली व बुराई तो नहीं करते या सुनते? यदि ऐसा ही है तो जान लो कि यह भी चोरी का ही एक प्रकार है। चूंकि सजनों भयवश किसी के सामने हम ऐसा कृत्य नहीं कर सकते इसलिए उसकी नजरों से छिप कर ऐसा करने का दुस्साहस करते हैं और अपनी जिह्वा की स्वतन्त्रता खो, जीवन हार बैठते हैं।

क्या आप सत्य पता होते हुए भी, भय या लालचवश, अपनी गलती, दोष या चोरी छिपाने हेतु, बात-बात पर वास्तविक स्थिति के विपरीत झूठ तो नहीं बोलते? यदि ऐसा ही है तो याद रखो झूठ बोलने वाला डरपोक व विश्वासघाती होता है। ऐसा व्यक्ति कदाचित् सच का सामना नहीं कर पाता इसलिए तो पर्दाफाश होने पर रोता-झुखता है या ग्लानि से शर्मसार हो किसी के सामने नजरें नहीं उठा पाता यानि सम्मानपूर्वक जीवन नहीं जी पाता। अतः सजनों यह मानते हुए कि 'सच चानणा है व झूठ अंधेरा है' सत्य को अपनाओ और झूठ पर फतह पाओ।

क्या परमपद प्राप्ति हेतु आप अपनी इन्द्रियों पर कन्ट्रोल करके काम जो सब विकारों की जड़ है उस पर फतह पाने का यत्न कर आत्मनिग्रही बन रहे हो या अभी भी इन्द्रिय वाशना के अधीन हो, कामी व्यक्तियों की तरह, दुराचार व व्यभिचार करते हुए नारकीय दुःख भोग रहे हो?

क्या यह जानने के पश्चात् कि 'बुद्धिमान लोग कभी अकारण क्रोध नहीं करते और हर परिस्थिति व अवस्था में धीर व क्षमावान बने रहते हैं', आप क्रोध के स्वभाव पर फतह पाने में कामयाब हो पा रहे हो यानि किसी अभिलाषा के न पूरा होने पर अथवा उत्पन्न हुई इच्छा के प्रति दूसरे के विपरीत भाव, वाणी या कर्म दिखाने पर, आत्मनियन्त्रण रखते हुए, अपने भाव, वाणी व कर्म द्वारा अनुचित व्यवहार तो प्रदर्शित नहीं करते? यदि ऐसा ही है तो जानो यह अपने आप में सजन भाव के विपरीत परस्पर द्वेषपूर्ण जीवन जीने की बात है।

क्या आप इन्द्रिय विषयों यथा रूप, रस, गंध, शब्द व स्पर्श में फँस कर, आशा-तृष्णा व लोभ-लालसा का शिकार तो नहीं हो गए? अगर ऐसा है तो याद रखो जिस इंसान का मन उसके वश में नहीं होता वह अज्ञानी इंसान इच्छाओं का गुलाम बन, अपने यथार्थ अस्तित्व की पहचान खो बैठता है और इस प्रकार स्वेच्छापूर्वक इस जगत में विचरते हुए, अपने जीवनकाल में दुःखों के संग्रह के अतिरिक्त और कुछ कर पाने के योग्य नहीं रहता।

कहीं आप दुःख के हेतु, मोह रूपी अज्ञान या भ्रांति के कारण, ईश्वर का ध्यान छोड़कर शरीर तथा सांसारिक वस्तुओं को अपना तथा सब कुछ समझ उनसे प्रेम तो नहीं कर बैठे? अगर ऐसा है तो याद रखो यह विचित्र संसार मन को लुभा इंसान के अन्दर अपने प्रति मोह उत्पन्न करता है। यही मोह अपने आप में भय, दुःख, घबराहट, अत्यन्त चिंता

आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता अर्थात् मूर्च्छा का कारण बनता है। आपके साथ ऐसा न हो इस हेतु इस मोह रूपी विकार से बच समचित्त बन जाओ।

क्या आप गुरुमत यानि ईश्वरीय हुक्म की पालना द्वारा, स्वतन्त्रता से अपना संचालन आप करते हुए सदा प्रसन्नचित्त बने रह पाते हो? या फिर मनमत के वशीभूत हो, संकल्प-विकल्प की दासता स्वीकार यानि पराश्रित हो, झुखते-रोते हुए एक असंतोषी इंसान की तरह जीवनयापन कर रहे हो?

क्या आप अपने-पराए, अमीर-गरीब, तेरे-मेरे जैसे संकीर्ण भाव के स्तर से ऊपर समस्त विश्व को अपना ही कुटुम्ब मानते हुए उनके साथ समभाव से विचर पा रहे हो और तदनुकूल समदृष्टि अर्थात् सबको एक समान समझते हुए व एक ही नज़र से देखते हुए, मानवता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार कर पाते हो? या फिर सर्व प्रचलित अलगाववाद व स्वार्थपरता के प्रतीक मनगढ़ंत, कर्मकांड व आडम्बरयुक्त भक्ति भावों में फँस कर तू-मैं का, बड़े-छोटे का, मत-मतांतरों का, धर्मों-पंथों की भिन्नता का सवाल खड़ा कर भ्रमित बुद्धि इंसान की तरह भ्रष्टता से परिपूर्ण जीवन चलन दर्शा रहे हो?

क्या अपने ख्याल को अफुर अवस्था से, सच्चे घर में साधे रखने के लिए, आप मौन की वृत्ति अपनाने में कामयाब हो पा रहे हो या अभी भी मन-वचन द्वारा आलतू-फालतू बोलते हुए अपने ख्याल को जगत में बिखेर रखा है?

क्या आप अपनी सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व में बने रहने हेतु, परहित और पर पीड़ा मिटाने के निमित्त सब कुछ त्याग करने का सामर्थ्य दर्शाने के लिए स्वयं को तैयार कर पा रहे हो या अभी भी स्वार्थपरता का भाव आपको सताता है और आपके लिए परोपकार प्रवृत्ति में ढलना असंभव हो चुका है?

क्या आप बताई युक्ति अनुसार सदैव भूत-भविष्य की सोचों व कल्पनाओं से मुक्त रह वर्तमान में जीवन जीते हुए यानि समस्त कर्म-कर्तव्यों का पालन समुचित ढंग से करते हुए, स्वतन्त्र अवस्था में बने रहने में सक्षम हो पा रहे हो या बीता अतीत व भविष्य की चिंता अभी भी आपको सताती रहती है?

क्या आप युग परिवर्तन के संकेत को समझते हुए, समय के साथ आगे बढ़ने के लिए, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो हर मानव के लिए कलुकाल के अविचारी, दोषपूर्ण

भाव-स्वभाव छोड़कर, समभाव-समदृष्टि अनुरूप, पुनः विचारशील बनने की प्रयोगात्मक युक्तियाँ हैं उन्हें पूर्ण विश्वास व समर्पित भाव से अपना पा रहे हो या नहीं?

क्या आप जीवन में जो भी धारते हो या करते हो वह विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा यानि उचित-अनुचित, सत्य-असत्य, भले-बुरे का भली-भांति विचार करके यानि जाँच तोल कर ही करते हो? या अभी भी विवेकहीनों की भांति जो भी दुनियां में घटित होता देखते हो बिना सोचे समझे वैसा ही करने में प्रवृत्त हो जाते हो?

सजनों उपरोक्त समस्त बिन्दुओं पर सूक्ष्मतया अपनी जाँचना करने से आपको ज्ञात होगा कि दो तरह के इंसान होते हैं, एक अच्छा व दूसरा बुरा। दोनों का अपना-अपना स्वाभाविक रूप होता है। इस संदर्भ में आत्मनिरीक्षण कर अपने आप को परखना है कि अभी तक आप किस तरह के इंसान बन चुके हैं अच्छे या बुरे? यदि लगे कि बुरे इन्सान बन चुके हो तो स्वयं में स्वाभाविक परिवर्तन लाकर अच्छा इंसान बनना होगा। अन्य शब्दों में एक मानव होने के नाते हर हाल में ईश्वर प्रदत्त विवेकशक्ति का इस्तेमाल करते हुए संतोष, धैर्य जैसे दिव्य गुण अपनाकर, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ता से डटे रहते हुए, परोपकार कमा अपना जीवन सफल बनाना होगा। सजनों यदि सुनिश्चित रूप से इस प्रयोजन में सफल होना चाहते हो तो नकारात्मक सोचना, नकारात्मक बोलना व नकारात्मक कर्म करना बंद करना होगा व सकारात्मक यानि मानवता के सिद्धान्त को दृष्टिगत रखते हुए सर्वहित के निमित्त अच्छा-अच्छा सोचना, अच्छा-अच्छा बोलना व अच्छा-अच्छा ही करना शुरु करना होगा। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यदि अच्छा सोचोगे व अच्छों का संग करोगे तो अच्छे बनोगे तथा यदि बुरा सोचोगे व बुरों का संग करोगे तो बुरे ही बनोगे। इस तरह अच्छा या बुरा बनना यह स्वयं आप द्वारा चयन की गई विचार प्रक्रिया पर ही निर्भर करेगा।

इस संदर्भ में सजनों अंततः हम तो यही कहेंगे कि अगर सत्य-धर्म के पथ पर निष्काम भाव से स्थिर बने रह परोपकार प्रवृत्ति में ढल, श्रेष्ठ मानव बनने का निश्चय लिया है तो बिना किसी तर्क के सकारात्मकता को अपना लेना। जानो ऐसा सुनिश्चित करने के लिए ही तो मानवता विकास क्लब का गठन किया गया है। अतः अपने उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए मानवता के विकास के प्रति सदा जाग्रत रह, मानवता के उद्धार हेतु अनथक परिश्रम करने के स्वभाव में ढलो। अपने इस उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त यानि मानव धर्म पर सुदृढ़ रहने के लिए सजनों अगर तन-मन-धन भी वारना पड़े तो कदापि मत सकुचाओ। अगर ऐसा सुनिश्चित करना मंजूर है तो सब मिल कर बोलो:-





**Live for humanity
Work for humanity
Die for humanity**

इसी संदर्भ में अब ध्यान से सुनो:-

सर्व एक जोत मानो
में जो कहने लगा हूँ सुनो मेरे प्यारो
खुद को समझ कर खुद ही सुधारो,
खुद को समझ कर खुद ही सवारो।

औरों की बुराई सुनने से बेहतर,
औरों की बुराई करने से बेहतर,
कभी तो नज़र अपनी कमियों पे डालो।
इधर की उधर कह, उधर की इधर कह,
आपस में सबको लड़ाने वालो,
कभी तो नज़र घर के झगड़ों पे डालो।

बिखरते-बिखरते जो टूट चुके हो,
अपने ही सत् से यूँ छूट चुके हो,
तुम क्या हो, क्यों हो ज़रा इसको जानो।

मनुष्य हो, मनुष्यता धर्म अपना मानो,
मनुष्यता अनुरूप व्यवहार को जानो,
इसी में भलाई है यह सत्य मानो।

संतोष-धैर्य जीवन में अपनाकर,
खुद को चिंतामुक्त बना कर,
सच्चाई-धर्म की राह अपना लो।

कुछ कहना हो चाहते, कहो सुख की बातें,
ए विध सभी को दुःख से उबारो,
प्रसन्न रह फिर जीवन आनंद से गुज़ारो।

कुछ करना हो चाहते, बनो निर्विकारी,
कुछ बनना हो चाहते, बनो परोपकारी,
अपना यह जीवन जनहित पे वारो।

day THREE | तृतीय दिवस



Morning Session

6:00 am



श्री साजन वन्दना

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

शंख - चक्र - गदा - पद्मधारी ।

ये दर्शन है बड़ा महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

न जप न तप न भजन बन्दगी होगी ।

एक अवस्था होगी जगत जहान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

सतयुग में सतजबान होगी ।

एक दृष्टि एकता होगी महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

कुदरती कला से सब उपजेगा ।

दिव्य दृष्टि होगी महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

एक दृष्टि और एक ही दर्शन होगा ।

होगी युवा अवस्था महान ।

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

**ZUMBA
DANCE**







अक्षर का अभ्यास घड़ी की टक-टक के साथ

सजनों सब आलती-पालथी मारकर सीधे बैठ जाओ और लम्बी गहरी साँस लो और छोड़ो।

ऐसा करते समय प्रत्येक श्वास के साथ साँस अन्दर भरते हुए यह आभास करो कि प्राण वायु के साथ आपके अन्दर स्वच्छता प्रवेश कर रही है।

अब सब साँस छोड़ो और यह आभास करो कि अन्दर की सारी गन्दगी अशुद्ध वायु के साथ बाहर आ रही है।

यह क्रिया सहज भाव से गहरी लम्बी साँस लेते व छोड़ते हुए सात बार करो।

ध्यान रहे इस दौरान आपका शरीर, दिल व दिमाग कोई हलचल न करे।

इससे आपके अन्दर के वातावरण की सफाई हो जाएगी अर्थात् आपका मन-मस्तिष्क दोनों ही शांत होकर मौन हो जाएंगे।

मन-मस्तिष्क के खामोश हो जाने पर अर्थात् मौन सध जाने पर भीतर कोई विचार या संकल्प-विकल्प की तरंगें नहीं उठेंगी। अगर ऐसा हो रहा हो तो पहले मन को निःशब्द अवस्था में रखना सुनिश्चित करो और फिर हृदय सुशोभित आत्मा में परमात्मा का अनुभव कर अपनी सुरत उन संग अफुरता से जोड़ लो।

याद रखो जैसे-जैसे आपका मन मौन अवस्था को प्राप्त होता जाएगा वैसे-वैसे ही आपका ख्याल ब्रह्म सत्ता के साथ जुड़ता जाएगा और आपको अपना असलियत ब्रह्म स्वरूप नज़दीक प्रतीत होने लगेगा। यह शब्दों व विचारों का क्रम तोड़ कर विश्राम अवस्था का आनन्द मानने की बात होगी। अतः शब्द जाल से विमुक्त रह शून्य होने का प्रयास करो। यकीन मानो कि ऐसा करने पर आपका ख्याल मूल शब्द आद् अक्षर के साथ जा जुड़ेगा। इस पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् सजनों घड़ी की टक-टक के साथ अपने ख्याल व ध्यान की स्थिरता साधते हुए निरंतर अक्षर चलाना आरम्भ कर दो। यहाँ अक्षर से तात्पर्य प्रणव मंत्र ओ३म् से है।

प्रणव मंत्र की ध्वनि द्वारा हृदय प्रसारित परब्रह्मवाचक सार्थक शब्दों को सुन इस तरह ग्रहण करो कि वह आपके हृदय में ठहर जाएं।

जानो अगर ऐसा सुनिश्चित करने में सफलता प्राप्त हो रही हो तो आप आत्मज्ञान प्राप्त करते हुए यानि अपने यथार्थ ज्योति स्वरूप को जान, आत्मतुष्टि की ओर बढ़ जाओ। सजनो यह अपने आप में बहिर्मुखी से अंतर्मुखी हो ख्याल का यथार्थता के साथ नाता जोड़ने जैसी शुभ व आनन्दप्रदायक बात होगी।

आओ अब क्रियात्मक रूप से, घड़ी की टक-टक के साथ अक्षर चलाने का अभ्यास करते हैं:-

1. सब सजन इसी तरह शांत, स्थिर व अफुर हो विश्राम अवस्था में बैठे रहो और आँखें बंद कर लें।

2. अब प्रार्थना व चरण-शरण करो।

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सब तों श्रेष्ठ, सब तों विद्वान, सब तों गुणवान, सब तों बलवान, सब तों धनवान, सब तों बुद्धिमान सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट-कोट प्रणाम।

आद पुरुष निरंकार ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर भक्त वत्सल श्री रघुनाथ जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट-कोट प्रणाम।

चरण-शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वंदना करां बारम्बार सजन दास सीस धरे चरणां उते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

3. अब जो घड़ी की टक-टक की आवाज़ आप को सुनाई दे, ठीक उसी गति से अक्षर को अन्दर ख्याल के साथ चलाना आरम्भ करो जैसे ओ३म्....ओ३म्....ओ३म्....ओ३म्। याद रखो किसी सजन का अक्षर न ही जिह्वा से चले और न ही होंठ हिलें यानि सभी मौन अवस्था में समरस बने रहो।

4. जब तक यह टक-टक की आवाज़ बंद न हो, अक्षर निरंतर उसी गति से चलाते रहना। याद रखो जो इस तरीके से सही तरह से अक्षर चलाएगा वह ही उचित परिणाम प्राप्त कर पाएगा और वही स्थिर बुद्धि विद्वान नाम कहाएगा। सजनों सावधान रहो कि एक क्षण भी व्यर्थ न जाए। हर टक के साथ अक्षर ठीक चले।

5. फिर कह रहे हैं कि पूरी तरह से जाग्रति में बने रहो और शरीर व इन्द्रियों सहित अपने मन को वश में रखो। यदि ऐसा करने में कामयाब हो गए तो जानो स्वतः ही अक्षर चलाने की गति ठीक घड़ी की टक-टक की तरह सध जाएगी। इसलिए हिम्मत में आओ, हिम्मत में आओ और ब्रह्म शब्द के निरंतर जाप के प्रभाव से जो ब्रह्म सत्ता हृदय व्याप्त हो रही है उसे ग्रहण करने का प्रयास करो। ऐसा पुरुषार्थ दिखा अपने इलाही स्वरूप को जान लो अर्थात् अपनी आत्मिक शक्ति को पहचान लो।

6. अब मानो कि मैं शरीर नहीं, अजर-अमर आत्मा हूँ। इस विचार पर स्थिर होने के लिए अत्यन्त प्रसन्नता व दिलचस्पी में आकर इस क्रिया में आगे बढ़ते जाओ। इस के प्रति याद रखो कि आपके मुख से झलकती प्रसन्नता व प्रफुल्लता ही आपकी सफलता का प्रमाण होगी। अतः यह मानकर कि ईश्वर खुद आप, इसके प्रति आप पर नज़र रखें हैं, किसी विधि भी कमज़ोर मत पड़ना। याद रखो अगर हुकम मानकर इस आत्मानुभूति की क्रिया में स्थिरता से बने रहने का पराक्रम दिखाया तो अवश्य आपकी सुरत को शब्द का संग प्राप्त होगा और आप परमात्मा का निर्मल प्यार व दुलार प्राप्त कर आत्मतृप्त हो जाओगे।

7. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए इस आनन्दप्रदायक क्रिया के दौरान खुद को मौन अवस्था में इस तरह साधे रखो कि आपका हृदयगत वातावरण समूलतः शांत हो जाए और आप अपने हृदय में ध्वनित शब्द ब्रह्म विचारों को समझ, आत्मोद्धार हेतु उन्हें अपने निष्पाप जीवन जीने का आधार बना सको। अंत में जानो कि अगर ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाया तो इस अनमोल मानव चोले का वास्तविक लाभ उठा निश्चित रूप से जगत विजयी हो जाओगे और ए विधि अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओगे।





**RAIN
DANCE**





Morning Session

10:00 am



Drill

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ
और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

तो सब मिल कर बोलो

हम एक हैं, हम एक हैं, हम एकता के प्रतीक हैं।

तभी तो कहते हैं

मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस संदर्भ में हम वायदा करते हैं

आत्मा और तन-मन के सहयोग से

हम रक्षा करेंगे, रक्षा करेंगे, रक्षा करेंगे

मानवता के सिद्धान्त की।

LET'S LEARN WHILE HAVING SO MUCH



Community
est





चरित्र

चरित्र जीवन में किए जाने वाले कार्यों या आचरणों का स्वरूप है जो किसी की योग्यता व मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है। श्रेष्ठता, विद्वता, गुणवत्ता, सामर्थ्य, बुद्धिमत्ता, प्रवीणता, अनुकूलता, उपयुक्तता, सभ्यता, शिष्टता, व्यवहारज्ञान इत्यादि सभी इंसानियत के गुण चरित्र के अंतर्गत आते हैं। इस प्रकार इंसानियत यानि सज्जनता को धारकर जो करनी ध्यानपूर्वक अभ्यास द्वारा आचरण व व्यवहार में लाकर मनुष्य की प्रकृति यानि स्वभाव में परिणित हो जाती है और उसकी विशिष्ट पहचान बन जाती है वह चरित्र कहलाती है। अन्य शब्दों में व्यक्ति का श्रेष्ठ चरित्र मानव-धर्म पर आधारित कुदरती सिद्धान्तों पर आश्रित होता है जो उसके जीवन के प्रधान लक्ष्य व उद्देश्य की ओर इंगित करता है।

इस संदर्भ में मानव का चरित्र उसके द्वारा जीवन पर्यन्त अनुसरण किए गए सिद्धान्तों व तदनुरूप किए गए आचरण का स्पष्ट दर्शन कराता है। यह दर्शन उसके जीवन वृत्तान्त यानि प्रवृत्ति और जीवन क्रम का स्पष्ट आइना होता है। इस आइने में झाँक कर कोई भी बुद्धिजीवी, व्यक्ति विशेष के सदाचारी या दुराचारी होने का मर्म स्पष्टतः जान सकता है अर्थात् यह समझ सकता है कि अपने जीवनकाल में उस व्यक्ति विशेष ने अपनी इन्द्रियों के द्वारा किस प्रकार का चेतन व्यापार किया। संक्षेपतः कहने का अभिप्राय यह है कि कोई भी व्यक्ति जीव विषयक गुणों को समझकर जीवन मुक्ति के लिए प्रयत्न करता है या फिर मायावी दृश्यों में भ्रमित और कर्तव्य बोध से विमुख हो बंधनमान होता है यह उसके जीवन चरित्र द्वारा स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

चरित्र का गठन कैसे होता है?

एक मानव के जीवन चरित्र का रूप मुख्यतः उसके हृदय के भावों के अनुसार होता है। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों के सांसारिक पदार्थों के सम्पर्क में आने से उसके हृदय में अच्छे या बुरे भाव उदित होते रहते हैं। भाव विशेष को बार-बार कल्पना, अनुभव, विचार व स्मृति में लाने से मनुष्य के हृदय में उस भाव की प्रकृति के अनुरूप भावना सुदृढ़ हो जाती है। तत्पश्चात् मनुष्य इसी भावना के अनुरूप ही पुरुषार्थ यानि कर्म करता है। इस प्रकार क्रमशः भाव से भावना, भावना से करनी, करनी से स्वभाव एवं स्वभाव से चरित्र का निर्माण होता है। स्पष्ट है कि भावों की शुद्धता और अशुद्धता के

अनुसार ही व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक या नकारात्मक बनता है। तदनुरूप ही अच्छे या बुरे दृश्यों, ज्ञान व आहार के प्रति उसकी रुचि पनपती है और वह अपनी रुचि-अनुसार अच्छी या बुरी करनी करता हुआ सदाचारी या दुराचारी इंसान बन जाता है।

एक सच्चरित्र व्यक्ति की पहचान

एक सदाचारी, सच्चरित्र व्यक्ति विचारपूर्वक अपने भाव-स्वभावों यानि अपनी मूल प्रकृति को मानव-धर्म के अनुरूप साधे रख सदा चेतन अवस्था में बना रहता है और आत्मज्ञान प्राप्त कर आत्मप्रेरणा द्वारा अपना मार्गदर्शन स्वयं करते हुए अपना शासक स्वयं बन जाता है। तात्पर्य यह है कि आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने मन की प्रवृत्तियों पर आत्मनियंत्रण रख इन्द्रिय-निग्रह करने की कला वह बखूबी जानता है। तभी तो संतोष-धैर्य को धारण कर वह स्वार्थ भाव से रहित हो सर्वहितकारी सत्कार्य करता है। इस प्रकार निष्कामतापूर्वक सच्चाई-धर्म की राह पर चलते हुए वह मन-वचन-कर्म द्वारा परोपकार कमाता है।

स्पष्ट है कि संसार में विचरते हुए भाव-शुद्धि के कारण उसकी धारणा सदा सात्विक व दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक बना रहता है। फलतः वृत्ति, स्मृति व भाव-स्वभाव रूपी बाणे की निर्मलता उसके अंतःकरण की विशुद्धता व बुद्धि की विवेकशीलता दर्शाती है। तभी तो ऐसा बुद्धिमान व प्रतिभाशाली मानव ईश्वरीय माया के भ्रमजाल में नहीं फँसता और निर्लिप्तता व तृप्तता से इस जगत में विचरते हुए जीव, जगत व ब्रह्म के यथार्थ को जान जाता है।

यही नहीं अपने नैतिक आचरण द्वारा कर्तव्य पालन की मिसाल रखने वाला वह सदाचारी मानव सबके साथ सजन-भाव अनुरूप सात्विक व शिष्ट व्यवहार करता है और सत्यनिष्ठ व धर्मात्मा कहलाता है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि जहाँ भाव-शुद्धि व सत्य धारणा द्वारा मानव का ख्याल सत्य से जुड़ा रहता है वहीं भावों की अशुद्धता व अज्ञान धारणा द्वारा जड़ता में फँसा मानव भोगविलास व दुर्व्यसनों में ग्रस्त हो स्वार्थी व दुराचारी हो जाता है।

अंततः हम कह सकते हैं कि सच्चरित्रता एक मानव के उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल व पराक्रमी होने का प्रतीक होती है। ऐसा सदाचारी मानव ही निष्कामता पूर्वक मानव-धर्म



का पालन करते हुए अपने आचरण व व्यवहार की श्रेष्ठता अर्थात् चारित्रिक उज्ज्वलता का आदर्श रूप सबके समक्ष रख सदा स्वतंत्र, शांत व आनंदित बना रह सकता है। इसलिए ऐसा सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता का प्रतीक मानव मोक्ष का अधिकारी बनता है व यशकीर्ति को प्राप्त होता है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व व्यक्ति के वे विशेष गुण या भाव होते हैं जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता यानि वास्तविक रूप या प्रकृति सूचित होती है। इसे अंग्रेज़ी में पर्सनैलटी कहते हैं। व्यक्तित्व का अर्थ है व्यक्ति होने का भाव या किसी में असामान्य व असाधारण रूप से पाई जाने वाली विशेषता, जो व्यक्ति विशेष की रुचि या भावना से संबंध रखती है। यह व्यक्ति की निजी पहचान यानि आंतरिक गुणों के अनुरूप विकसित उसकी अंतःप्रकृति या अंतःकरण की वृत्तियों द्वारा उसके आत्मस्वरूप को दर्शाती है। ऐसा व्यक्ति अपने मन, वचन, कर्म द्वारा अपने विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति कर अपने व्यक्तित्व को परिभाषित करता है। तभी तो सुदृढ़ व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की अलग ही पहचान होती है क्योंकि उसके निजत्व से मौलिकता झलकती है। वह मूल से संबंध रखने वाला होता है और उसके हृदय में उठने वाला कोई भी विचार किसी की नकल पर आधारित या आश्रित नहीं होता अपितु अपनी उद्भावना से यानि मूल आत्मतत्त्व से विकसित होता है जिसकी प्रतीति मन में होती है और अपने आचार व व्यवहार द्वारा वह उसे प्रकट करता है। फिर यही अंतर्प्रेरणा या स्वाभाविक प्रेरणा उस व्यक्ति के भाव, भावना, मनोवृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभावों के ताने-बाने की निर्मलता का साधन यानि उसके व्यक्तित्व का सुदृढ़ आधार होती है। इस प्रकार व्यक्ति की यही चेतन अवस्था जीव, जगत व ब्रह्म के सत्य ज्ञान बोध द्वारा उसे सांसारिक अज्ञान धारणा के प्रति सावधान रखते हुए अपने निर्विकारी निज स्वरूप में स्थित बने रहने का सामर्थ्य प्रदान करती है। तभी तो ऐसे व्यक्ति को व्यक्तित्व के प्रतीक विशेष गुण अन्दर से स्वतः प्राप्त होने लगते हैं और इस हेतु उसे कहीं और यानि किसी अन्य से कुछ भी धारने की आवश्यकता अनुभव ही नहीं होती। इस प्रकार सांसारिकता का उसके हृदय में घर करना असंभव हो जाता है।

ऐसा होने पर उस व्यक्ति के हृदय में विद्यमान नैतिकता जाग्रत होते ही वह अपनी कुदरती प्रकृति अनुरूप शुद्ध व मर्यादित आचरण जैसे उच्च सिद्धांत को सत्यनिष्ठा व

धर्मपरायणता से अपनाता व व्यवहार में लाता है। तभी तो उसके आचार-व्यवहार द्वारा भद्रता, न्यायप्रियता, आदर्शवादिता, ईमानदारी, सत्यवादिता, सदाचारिता, शुद्धता व शीलता जैसे सद्गुणों की झलक प्राप्त होती है जो उसका एक अच्छा व्यक्ति होना दर्शाती है। ऐसे नैतिक मानव का मन शांति से परिपूर्ण और हृदय सचखंड होता है। इसलिए वह सच्चा, सद्गुणी व श्लील मानव छल-कपटहीन, खरा, विवादातीत, विश्वसनीय, सत्यप्रेमी, नेक, पवित्र, भला, गुणवान, सत्क्रिय, शिष्ट, सभ्य, सुसंस्कृत, सौम्य व सज्जन पुरुष होता है। तभी तो उसके आचार-विचार व व्यवहार व्यवसायोचित व न्यायसंगत होते हैं। यही नैतिक आचरण कहलाता है और ऐसे आचरण द्वारा ही उसका आदर्शवाद, उच्चमनस्कता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, ज्ञान-ध्यान, धर्मपरायणता, श्रद्धा, संयम, न्यायप्रियता, संतुलन, समानता व समदर्शन, निष्पक्षता, सदाचारिता व साधु-वृत्ति प्रकट होती है। उसमें दिव्यता व धार्मिकता होने के साथ-साथ विवाह निष्ठा यानि दांपत्य निष्ठा व सच्चरित्रता होती है जिससे उसकी एक निष्ठा, ठहराव, मन की एकाग्रता, चित्त की स्थिरता, विश्वास, निश्चय व निर्वाह की झलक प्राप्त होती है। अपने इसी आचार व्यवहार पर सुदृढ़ बने रह वह अविलासी यानि अनुशासित, आत्मसंयमी, जितेन्द्रिय, धीर, गंभीर, वैरागी व भोग विलासहीन इंसान अपनी नैतिकता का रक्षक बन अपने आप को अनैतिक आचरण से बचाए रखने हेतु कभी भी कुटिलता व कामुकता नहीं अपनाता क्योंकि वह जानता है कि कुटिलता पूर्ण व कामुकतापूर्ण आचार-व्यवहार अपनाना स्वाभाविक रूप से नैतिक पतन के गर्त में गिरना है। यही तो होता है नैतिक स्वत्व यानि अंतरात्मा से विमुखता। अंतरात्मा से विमुखता का अर्थ है, मन का आत्मिक ज्ञान से वंचित हो सांसारिक ज्ञान की प्राप्ति व धारणा की ओर झुकाव होना यानि परमार्थ का छूटना व स्वार्थ-भाव में धँसना।

इसलिए हमें समझना है कि एक मानव के लिए नैतिकता अपनाना अपने ही ऊपर उपकार करने की बात है क्योंकि नैतिक होने का भाव ही उसकी सद्-व्यवहारिकता यानि शील प्रकृति दर्शाता है। यह तो हम सब जानते हैं कि जो मानव नैतिक रूप से बलवान होता है वह सद्व्यवहार युक्त आचरण करने के कारण दूसरे के हृदय पर नैतिकता का भाव अंकित कर सदा सभी का आदर्श बना रहता है। हर मानव ऐसा कर सके इसके लिए सद्व्यवहार युक्त आचरण संबंधी नियम या कायदे जिसे मॉरल लॉ (Moral Law) कहते हैं, उसी अनुरूप अपने आप को वश में रखते हुए अपनी मानसिक अवस्था ढालनी होती है और अपने मन वचन-कर्म द्वारा उसे अमल में ला नैतिक विजय

कव्वाली

मैं सजन हूँ
सबको सजनता में लाना मेरा काम है

सजन भाव अपनवाकर
रोतों को हँसाना मेरा काम है

कुमार्ग पर चढ़े हुआं को
सत्यनिष्ठ बनाना मेरा काम है

परमार्थ से भटके स्वार्थियों को
धर्मज्ञ बनाना मेरा काम है

जो अपनी यथार्थता भूल चुके हैं
उन्हें आत्मबोध कराना मेरा काम है

कई जन्मों के बिछुड़े हुआं को
सच्चे घर पहुँचाना मेरा काम है

समभाव-समदृष्टि का सबक सिखा कर
परमेश्वर से मिलाना मेरा काम है

यह सुनने के पश्चात् सजनों हम सबके लिए बनता है कि हम समभाव- समदृष्टि के सबक अनुसार सजन भाव अपना कर, परस्पर सजनता का व्यवहार करते हुए, सबके अन्दर सजनता का संचार करें। इस प्रकार परोपकार प्रवृत्ति में ढल अपने सम्पर्क में आने वाले सभी इंसानों को बुराई व दुष्टता का अमानवीय चलन छोड़ पुनः मानवता में आने के प्रति जाग्रत करें। सजनों जानो आज के समाज की दुर्दशा को दृष्टिगत रखते हुए ही इस मानवता विकास क्लब का गठन किया गया। अतः इस क्लब के प्रत्येक सदस्य के लिए बनता है कि वह अपने इस महान कर्तव्य को समझे और खुद समभाव-समदृष्टि का पाठ पढ़-समझ कर, सजन पुरुष बनें व अनथक परिश्रम द्वारा सबके हृदयों में भी सजन भाव का विकास कर, सजन युग की बुनियाद को पक्का कर दें। ए विध् परोपकारी नाम कहा श्रेष्ठ मानव बन जाएं।

मेरा काम है





मौन

आओ सजनों आज सारतः जाने कि मौन क्या है और जीवन को सार्थक करने में इसका क्या महत्त्व है:-

जानो मौन मात्र चुप रहने का नाम नहीं है अपितु यह तो मन के खामोश यानि मिटने का नाम है।

मौन का अर्थ है निःशब्द होना। जब यह मौन सध जाता है तो मन के भीतर कोई विचार या संकल्प-विकल्प की तरंगें नहीं उठती अपितु वह तो निःशब्द हो जाता है और सच्चिदानन्द का अनुभव करता है। ऐसा शुभ होने पर स्थिर बुद्धि इंसान प्रसन्नचित्त अवस्था को प्राप्त हो सदा सचेतन बना रह पाता है। इसलिए तो वह समझदार इंसान इस मायावी जगत में निर्लिप्तता से विचर पाता है। मन के मौन के लिए प्रणव मंत्र यानि आद् अक्षर के अजपा जाप की आवश्यकता होती है। धीरे-धीरे इसके अभ्यास में प्रवीण होने पर मन स्वतः उपशम हो जाता है और व्यक्ति अंतर्मुखी हो मौन हो जाता है। यह ऐसी शांतमय निर्विचार अन्तर्दशा होती है जो बोलने से भी भंग नहीं होती।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों मौन को साधो। इस हेतु अपने ख्याल को मौन में उतरने दो और गहराने दो। ऐसा करने से ख्याल ब्रह्म सत्ता से जुड़ता जाएगा और आपको अपना असलियत स्वरूप नज़दीक व समक्ष प्रतीत होने लगेगा। इस संदर्भ में मत भूलो जब वाणी थका देती है और मानव को और बोलना बोझ लगने लगता है, तो मौन की गहराई में उतरना ऐसे लगता है, जैसे दिन भर का थका हुआ आदमी रात को सुख भरी गहरी निद्रा में सोता है। अतः शब्दों व विचारों का क्रम तोड़कर इस विश्राम अवस्था का आनन्द मानने की चेष्टा करो।

इस संदर्भ में याद रखो शब्द व विचार तो मन की खुराक है। अतः मन तो शब्दों का पान करने की ललक जगाएगा ही। लेकिन आप उस शब्द जाल से विमुक्त रह शून्य होने का प्रयास करो।

कहने का आशय यह है कि मन जितना शब्दों व विचारों में खोया रहता है उतना ही इंसान मनमत से जुड़ा रहता है। आप इन शब्दों व विचारों के जंजाल से अपने ख्याल को विमुक्त रख अर्थात् शब्दातीत हो, मनमत से आज़ाद हो जाओ।

इस तरह हृदय, दिमाग और शरीर को एक अवस्था में साधे रख, सहज उत्पन्न पूर्ण मौन की स्थिति में आ जाओ।

जानो मौन अवस्था के पनपते ही इस तरह एकाग्रचित्त हो जाओगे कि आपके लिए ख्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल स्थिर रखना सहज हो जाएगा। यही नहीं ए विध् ऐसे योग्य व्यक्ति भी बन जाओगे जो ईश्वर, धर्म और सत्य-असत्य इत्यादि जैसे सूक्ष्म विषयों का विचार करने वाला होता है। इस महत्त्व के दृष्टिगत सजनों परम पुरुषार्थ दिखा, श्रेष्ठता को प्राप्त हो जाओ।

निःसंदेह आरम्भ में मन-वचन द्वारा मौन अपनाने में कठिनाई मालूम होगी क्योंकि वृत्तियों का तीव्र आक्रमण होगा। अनेक प्रकार के मिथ्या विचार उठेंगे जो मौन वृत्ति को भंग करने की कोशिश करेंगे। पर आपको हारना नहीं होगा अपितु घड़ी की टक-टक की तरह, प्रणव मंत्र के अजपा जाप द्वारा अपनी सारी शक्तियाँ ईश्वर में केन्द्रित कर, मन को पूर्ण रूप से शब्द ब्रह्म विचार के ग्रहण में लगाए रखना होगा। ऐसा करने से आत्मज्ञानी बन, निश्चित रूप से विजयी सिद्ध होंगे।

मौन धारणा से लाभ

याद रखो जो मौन रहना सीख जाता है उसके मन की संकल्प-विकल्प उठाने की क्षमता क्षीण हो जाती है व उसका विलग अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

इस तरह वह जगत से ऊपर उठ, ईश्वरीय वाणी अर्थात् धुर की वाणी का श्रवण करने की कला सीख जाता है और उसे तत्क्षण समझ में आ जाता है कि चिरंतन शांति कहाँ प्राप्त होती है।

इस शाश्वत शांति को प्राप्त करने वाला साधक शब्दातीत हो जाता है। इस तरह सच्चा

मौन स्वयं ही भीतर से आता है, स्वाभाविक होता है और सत्य व दिव्य ऊर्जा का द्वार खोल देता है।

धीरे-धीरे आत्मनियन्त्रण द्वारा मौन होने के स्वभाव में परिपक्व होने वाले पुरुषार्थी की मानसिक शक्ति असीम रूप से बढ़ जाती है और उस उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल को परम आनन्द की प्राप्ति होती है।

स्पष्ट है कि:-

1. मौन से ही शक्ति का संग्रह और उसकी वृद्धि होती है।
2. मौन का अभ्यास करने से चित्त-वृत्तियों को बिखरने से बचाया जा सकता है और ध्यान, एकाग्रता के बल पर अन्तर्मन की गहराई में प्रविष्ट कर, स्थायी आनन्द व शान्ति के स्रोत तक पहुँचा जा सकता है।
3. मन को शान्त करने के लिये मौन से अच्छा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। शांत मन में ही जागरुकता/सचेतनता के साथ-साथ सकारात्मक विचारों का विकास होता है।
4. मौन का अभ्यास करने से अंतःकरण स्वच्छ व पारदर्शी हो जाता है और सभी प्रकार के मानसिक विकार समाप्त होते जाते हैं। इस तरह फिर किसी प्रकार का कोई कलह-क्लेश नहीं रहता।
5. जब हम कुछ समय मौन रहते हैं तो जगत की तरफ से मुख फेर स्वयं से बात करते हैं। इस तरह उस समय आत्म-मूल्यांकन करते हैं और आत्मसंयम द्वारा आत्मसुधार करने का यत्न करते हैं। इससे नवीन मानसिक ऊर्जा प्राप्त होती है और सात्त्विक विचारों को धारण करने की प्रेरणा मिलती है। ये विचार हमारी सोचने-समझने की शक्ति यानि बुद्धि को बढ़ाता है व वृत्ति-स्मृति व स्वभावों को निर्मल बनाता है। फलतः ख्याल एकाग्रचित्त हो स्वयं पर केन्द्रित हो पाता है, ध्यान शक्ति बढ़ती है और परम शांति की प्राप्ति होती है।
6. मौन का निरन्तर अभ्यास करते रहने से दिल-दिमाग शांत व एकरस बना रहता है।

फलतः मन तनाव, अवसाद व चिंता मुक्त बना रहता है, रात में नींद अच्छी आती है, प्रसन्नचित्तता बनी रहती है और शरीर की बिमारियों से लड़ने की प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ती है।

7. मौन के अवलम्बन से हम वाणीकृत पापों से बच जाते हैं।

8. जिस प्रकार स्थिर जल बड़ा गहरा होता है, उसी तरह मौन भी मनुष्य के ज्ञान की गम्भीरता का प्रतीक है। मौन अन्तर का श्रृंगार है। मौन हमें अन्तर्मुखी बनाता है।

9. अन्तर की आवाज़ को हम इसी मौन अवलम्बित ध्यान अवस्था में सुन एवं समझ सकते हैं। तभी हमें प्रकृति की दिव्य वाणी सुनाई देती है और हम उसका आनन्द उठा विश्राम को पा सकते हैं।

10. मौन अवस्था एक ऐसी स्थिति है जिसमें भगवद् सत्ता व्यष्टि सत्ता के और समीप आ जाती है। मनुष्य देव-स्वरूप होता होता, भगवद् सत्ता से एकाकार हो जाता है।

11. मौन सुख-शांति प्राप्त करने का महामन्त्र है। इसी से संसार का मन्थन है व हृदय स्थित वेद-शास्त्रों का अध्ययन संभव है। यही जगत-जंजाल से मुक्ति का प्रतीक है यानि यह विराम की स्थिति है।

सारतः सजनों जीवन में मौन की इस महत्ता को समझते हुए बेकार की इधर-उधर की निरर्थक बातें सोचते व बोलते रहने के स्थान पर आध्यात्मिक तथा भौतिक तत्वों का सही अर्थों में ज्ञाता बनो और इस प्रकार भ्रम रहित अवस्था को प्राप्त हो, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर निर्भयता से प्रशस्त हो, परोपकार कमाओ और अपना नाम रौशन करो।





Afternoon Session

6:00 pm

TALENT HUNT & CHAUPATI











day FOUR | चतुर्थ दिवस



Morning Session

6:00 am



श्री साजन वन्दना

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

शंख - चक्र - गदा - पद्मधारी ।
ये दर्शन है बड़ा महान ।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

न जप न तप न भजन बन्दगी होगी ।
एक अवस्था होगी जगत जहान ।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

सतयुग में सतज्बान होगी ।
एक दृष्टि एकता होगी महान ।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

कुदरती कला से सब उपजेगा ।
दिव्य दृष्टि होगी महान ।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥

एक दृष्टि और एक ही दर्शन होगा ।
होगी युवा अवस्था महान ।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम ।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम ॥



CRICKET
MATCH





Morning Session

10:00 am

SATSANG



(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

ओ३म् दे विच में चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।
ओ३म् दे विच है जोत मेरी, ओ३म् दे विच मैं ही जान
ओ३म् दे विच में चमक रिहा।।
ओ३म् दे विच में जाप रिहा, ओ३म् ही प्रकाश मेरा जान।
ओ३म् दे विच है चानणा, हर अन्दर मेरा ओ जानणा।
ओ३म् दे विच में चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।
ओ३म् चमके चार चुफेरी, उस तों निर्लेप जोत मेरी जाण।
जोत चमके ओ चमक दिखावे, चमक रिहा हूं निर्वाण।
ओ३म् दे विच में चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।
ओ३म् जपे लोक लुकाई, ओ३म् दी कीमत किसे विरले पाई।
ओ३म् जपे ओ सुजान, बिन सूरजों प्रकाश ओहदा जान।
ओ३म् दे विच में चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।
ओ३म् विच अटल है जोत मेरी, जग मग जगदी आई।
जोत जगे ओ लोक लुकाई, जैदी हर अन्दर रौशनाई।
ओ३म् दे विच में चमक रिहा, ओ३म् दे विच है मेरा स्थान।।





Humanity Fest - Winter edition

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम दिवस (दिनांक 29 दिसम्बर 2019)		
सांयःकालीन सत्र		
1.	प्रार्थना- हे श्री साजन प्रभु हमारे	110
2.	Drill	112
3.	मानवता (हम जानते हैं हम मानव हैं)	113
4.	Humanity Calendar	118
द्वितीय दिवस (दिनांक 30 दिसम्बर 2019)		
प्रातःकाल 7:30 बजे		
5.	प्रार्थना- हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम	121
6.	जूम्बा	122
7.	अक्षर की महत्ता व अभ्यास	126
प्रातःकाल 10 बजे		
8.	सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ	131
	सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या है व वर्तमान समय में इस धरा पर क्यों आया?	134
	सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की महत्ता व महानता	138
	सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन, मनन व चिंतन करके उसमें विदित	141
	विचारों को व्यवहार में लाना क्यों अनिवार्य है?	
	सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को पढ़ने का सही नीति-नियम व क्रियाविधि क्या है?	146
दोपहर 2.00 बजे		
9.	Games	159
सांयःकाल 6 बजे		
10.	Winter Carnival, Talent Hunt, Bonfire, Fashion Show	162

तृतीय दिवस (दिनांक 31 दिसम्बर 2019)

प्रातःकाल 10 बजे

- | | | |
|-----|---|-----|
| 11. | ध्यान-कक्ष यह ध्यान कक्ष | 168 |
| 12. | जीवन एक यज्ञ | 169 |
| 13. | यज्ञ/हवन करने का सामान्य उद्देश्य व महत्ता क्या है? | 173 |
| 14. | हवन करने की विधि | 174 |
| 15. | दिल है अर्पण जान भी अर्पण | 186 |

दोपहर 2.00 बजे

- | | | |
|-----|--|-----|
| 16. | Face Painting, Leaf Painting, T-Shirt Painting, Scavenger Hunt | 188 |
|-----|--|-----|

सांयःकाल 6 बजे

- | | | |
|-----|--|-----|
| 17. | सबका प्यार सबका प्यार | 193 |
| 18. | नवयुग चेतना | 193 |
| 19. | सुनों जी सुनों जी समय की आवाज़ सुनों जी (कलुकाल है जाने वाला)
आत्मनिरीक्षण पर दोहे (स्थिर बुद्धि इंसान ही रह सकता सदा शांत) | 203 |

रात्रि 9 बजे (नववर्ष समारोह)

- | | | |
|-----|---|-----|
| 20. | सतवस्तु का श्रृंगार (ओ माझी रे.....ओ माझी रे) | 216 |
| | थोड़ा हँस ले, थोड़ा नच ले | 219 |
| | ठान लिया तो रुकना क्या | 223 |
| | शेषां ते असां रहने हाँ | 226 |
| | नववर्ष का शुभ संदेश | 228 |
| | दिल भी तेरा दिमाग भी तेरा | 231 |
| | वसुन्धरा है सब सजनों की | 234 |
| | हम हँसे तुम हँसो तो जग ये हँसे | 235 |
| | नववर्ष का शुभ संकल्प | 238 |
| 21. | News Clippings | 240 |

day ONE | प्रथम दिवस



प्रार्थना

हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
शीश अपना तेरे चरणों में झुका कर धर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
हे दयामय तूने जग को भर दिया निज प्यार से
जो भी आया शरण में खाली न लौटा द्वार से
खाली न लौटा द्वार से
हैं करोड़ों लोग तेरे दर से झोली भर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
माँगने से क्या मिलेगा हमको इस संसार से
सत्य है हर सुख मिलेगा आपके दरबार से
आपके दरबार से
फिर क्यों न हर श्वास तुम पर ही सदा निर्भर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे
न ही वैभव न ही धन का कोष हमको चाहिए
तेरे चरणों में पिता संतोष हमको चाहिए
संतोष हमको चाहिए
सत्य वाणी कर्म में तुम मन सदा सुन्दर रहे
हे श्री साजन प्रभु हमारे वंदना हम कर रहे



DRILL



मानवता

सजनों Humanity Fest के इस शुभावसर पर, हम मानव रूप में हर शरीरधारी आत्मा का, इस पावन धरा वसुन्धरा पधारने पर, अपनी अंतर आत्मा से स्वागत करते हैं। मानो यह सुअवसर है हर मानव को अपनी मनुष्य होने की अवस्था से परिचित करा उसे मानवता का प्रतीक बनाने का। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह अवसर है हर मानव को अच्छे मनुष्य के गुणों से भली विधि परिचित करा, पूर्ण अधिकार के साथ, निर्लिप्तता से इस मिथ्या मानव-जगत में अपने पौरुष बल से, मनुष्यता अनुरूप पुण्य कर्म करते हुए, निष्पाप अपनी मर्दानगी साबित कर पाने के योग्य बनाने का ताकि मानव किसी विधि भी पशुता का भाव अपनाकर, अपना जीवन बर्बाद न कर ले।

इस संदर्भ में सजनों मानो कि जन्म उपरान्त हर मानव को, इस जगत में स्वतन्त्रता से मानव धर्म अनुरूप विचरते हुए, अपने जीवन का महान लक्ष्य यानि मोक्ष प्राप्त करने का समरूप अधिकार प्राप्त होता है। हर मानव अपने इस सर्वोच्च अधिकार का समुचित लाभ उठा सके इस हेतु सजनों उसे सर्वप्रथम अपने जीवन के आरम्भिक काल में ही, मानवता के सिद्धान्त अनुसार अपने कर्तव्यों से परिचित होकर, उनका विधिवत् पालना करने की कला सीखनी होती है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हर मानव के लिए बनता है कि वह इस कला में दक्ष होने के लिए सर्वप्रथम कुदरती शास्त्रों में वर्णित सद्ज्ञान को पढ़-समझ कर हृदय में धारण करे और इस प्रकार आत्मिक ज्ञान को प्राप्त कर व तदनु रूप अपनी मानसिक दृष्टि बना, इस जगत में विशेष रूप से विचरता हुआ भी सदा उससे निर्लेप बना रहे।

जानो ऐसा सुनिश्चित करना अपने आप में अफुरता से परमात्मा का चिंतन करते हुए समस्त मानसिक बीमारियों से मुक्त रह उच्च-बुद्धि उच्च-ख्याल होने जैसी शुभ बात होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस पुरुषार्थ द्वारा किसी भी आत्मविस्मृत संसार में भटके हुए दुराचारी इंसान के लिए, पुनः आत्मस्मृति में आ, आत्मिक ज्ञान अनुसार मानवीय गुणों से युक्त हो, मानवता का प्रतीक बनना सहज हो जाता है। तभी तो वह नर श्रेष्ठ बन, सहृदयता, दयालुता आदि मानवीय गुणों के अनुरूप भाव-स्वभाव अपना पाश्विक वृत्तियों से छुटकारा पा पाता है व अपने मन को सहजता से इस काल्पनिक जगत से आज़ाद रखने की सामर्थ्य दर्शा पाता है।

इस उत्तम परिणाम के दृष्टिगत सजनों आप भी ऐसा नर श्रेष्ठ बनने की हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और ए विध् काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्या और विषाद आदि से उत्पन्न होने वाले मानसिक दुःखों से छुटकारा पा जीवनमुक्त हो जाओ। कहने का आशय यह है कि इस तरह जीवन की हर परिस्थिति में स्थिर बुद्धि बने रहने का अदम्य पुरुषार्थ दिखा, धर्म के निष्काम रास्ते पर सीधे बढ़ते जाओ और पुण्य कमाते हुए अपने इष्ट लक्ष्य को सहजता से सिद्ध कर, अपना जीवन सफल बनाओ।

सजनों यदि यह सब सुनने-समझने के पश्चात् आपके मन में भी मानवतावाद अपना लोक कल्याण के निमित्त, मानव जाति को सामूहिक रूप से सभी कष्टों व पीड़ा से मुक्त करा, उनके जीवन को सुखमय बनाने की चाहत पैदा हुई है तो दिलचस्पी में आकर मनुष्यता के आदर्शों यानि स्वाभाविक गुणों व भावनाओं इत्यादि को गहराई से समझो व इस हेतु समय रहते ही आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के प्रति यथोचित मेहनत करने से कदाचित् न सकुचाओ। ए विध् मन-वचन-कर्म से मानव वर्जित किसी प्रकार का भी कोई कर्म करने का स्वभाव छोड़ यानि राग-द्वेष आदि दोषों से रहित हो, एक संतोषी इन्सान की तरह धीरता से, धर्मसंगत सत्य पथ पर अग्रसर हो जाओ और जगत कल्याण के निमित्त आनन्दमय जीवन बिताओ। इस प्रकार अपने सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का साक्षात्कार कर जीवनमुक्त हो जाओ और अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों सर्वहित के लिए हम तो यही कहेंगे कि अब के पश्चात् मानवता विकास क्लब द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में आत्मशुद्धि व बुरे से अच्छा इन्सान बनने के विषय में बात होगी। अतैव उस दौरान अपना स्वाभाविक निरीक्षण करते हुए, आज तक राजसिक व तामसिक गुणों अनुसार अपनाए बुरे अमानवीय भाव-स्वभावों को खोज निकालना व उन्हें त्यागने हेतु तत्पर हो जाना। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप अपने अंतःकरण के विशिष्ट सात्विक धर्म को जान, शरीरधारी आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जान पाओगे और अपनी सुरत यानि ख्याल को परमात्म स्वरूप आत्मशक्ति के साथ अखंडता से जोड़े रख, निषंग, निष्पाप इस जगत में विचर पाओगे। जानो जब इस तरह आत्मा से युक्त होकर जीवन जीने की कला में पारंगत हो गए तो आप स्वतः ही अपनी वास्तविक प्रकृति को पहचान लोगे और ऐसा कमाल होने पर जो सृष्टि की

आश्चर्यजनक विविधता जगत रूप में प्रकृति की देन है उस माया यानि महाशक्ति की रमज़ जान जाओगे। इस प्रकार ऐसे सौभाग्यशाली बन आप ऐसे अनंत सौन्दर्य परिपूर्ण दर्शनीय स्वाभाविक गुणों वाले वैष्णव जन बन जाओगे जिसके मूल गुणों में किसी भी कारण या प्रभाववश बदलाव आना असंभव सी बात होगी। इस प्रकार आपके लिए उत्तम प्रकृति के नौजवान बन एक जितेन्द्रिय इंसान की तरह न्यायसंगत जीवन जीते हुए व सदा शांतचित्त बने रहते हुए अपने मानव जीवन की सर्वोत्कृष्टता सिद्ध करना सहज हो जाएगा। अंत में सजनों हमारी यही मंगलकामना है कि बताई युक्ति अनुसार ऐसे उत्कृष्ट मानव बन जाओ व अक्षय यश कीर्ति के अधिकारी बन परमधाम स्थित हो जाओ।

सारतः सजनों अगर अपना अंत परिणाम ऐसा ही पावन व सुन्दर चाहते हो तो आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए समभाव समदृष्टि के स्कूल के साथ जुड़ जाओ और सब विकारयुक्त भाव त्याग कर, समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुसार सजन भाव अपना लो। इसी संदर्भ में जानो कि सजन भाव को अपने अंतर्गत करने पर स्वतः ही आपकी जिह्वा स्वतन्त्र व संकल्प स्वच्छ हो जाएगा और इस प्रकार एक निगाह एक दृष्टि से अपने शारीरिक स्वभावों पर पकड़ रखते हुए व खालस सोना हो अपने प्रकाश को पा लोगे जो अपने आप में मृतलोक पर विजय प्राप्त करने की बात है। जानो मृतलोक पर विजय प्राप्त करने पर ही विचार शब्द को पकड़ने के काबिल बन सकोगे और उन विचारों को जीवन में यथा उतारने के योग्य बनने हेतु दिव्य दृष्टि का सबक प्राप्त कर परोपकारी नाम कहा सकोगे। इस प्रकार अपने ज्योति स्वरूप को पहचान, एकात्मा होकर परमात्मा से मेल खा, कुल दीपक बन सकोगे व त्रिलोकी में अपना चानणा फैला ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाओगे।

अब जब हम जान ही गए हैं कि हम यथार्थ रूप से मानव हैं और मानवता के सिद्धान्त अनुसार ही इस जगत में निष्पाप विचरना हमारा केवल कर्तव्य ही नहीं वरन् धर्म भी है। तो आओ इसी संदर्भ में अब हम अपने इस वास्तविक धर्म पर स्थिर बने रहने हेतु मिलकर बोलते हैं:-

हम जानते हैं हम मानव हैं
और मानवता है धर्म हमारा
इसीलिए तो कहते हैं
सब मिल कर बोलो हाँ मिल कर बोलो
मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

हम श्रेष्ठ कृति हैं ईश्वर की
श्रेष्ठता ही हमारा गहणा है
हर हाल में हम सबको तो
श्रेष्ठता में ही रहना है
मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस सत्य से हम परिचित हैं
हम आत्मा हैं, शरीर नहीं
आत्मिक गुण अपनाकर ही
हम श्रेष्ठ मानव बन सकते हैं
मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस हेतु हम मानते हैं
आत्मिक ज्ञान पढ़ना होगा
ए विद् आत्मिक ज्ञानी बन
जगत कल्याण करना होगा

श्रेयस्कर बनने पर ही मानव
मानव धर्म अपना सकता है
और मानवता का प्रतीक बन
श्रेष्ठ मानव कहला सकता है

इस संदर्भ में सभी से प्रार्थना है कि मन-चित्त लगाकर आत्मिक ज्ञान पढ़-समझ कर मनन द्वारा यथा व्यवहार में लाना सुनिश्चित करो और यथार्थ रूप से मानव होने की अवस्था में आ जाओ। ए विद् एक श्रेष्ठ मानव के आदर्शों तथा स्वाभाविक गुणों,

भावनाओं इत्यादि से परिचित हो लोक-कल्याण के लिए कार्य करने में निष्काम भाव से रत हो जाओ ताकि सभी मानवों का जीवन अधिक सुखमय हो जाए तथा कष्ट और पीड़ा में कमी आए। जानो ऐसा सुनिश्चित करने में समर्थ होने के लिए दानवीय वृत्ति छोड़ सहृदयता, दयालुता आदि मानवीय गुणों से युक्त होना होगा और इस तरह श्रेष्ठ मानव की तरह अपने जीवन काल में कर्मठता से श्रेयस्कर मोक्ष प्रदायक कर्म करते हुए अपनी सर्वोत्कृष्टता को सिद्ध कर अपना जीवन सफल बनाना होगा।

अन्त में सजनों यह बताओ कि जो अभी बताया है उसे सुनने-समझने के पश्चात किसके अन्दर उन्नति पथ पर प्रशस्त होने की दिलचस्पी पैदा हुई है?

‘सबने हाथ खड़े किये’ ।

तो फिर समझो कि आज आपका यह लक्ष्य निर्धारित हो गया कि मुझे अच्छे स्वभावों में ढलकर जीवन पथ पर निष्काम भाव से आगे बढ़ना है और सफलता प्राप्त करनी है। जानो सजनों यह संकल्प अपने आप में जनाता है कि जो लक्ष्य मैंने अपने लिये चुना है उसे प्राप्त कर मैं बुरे से अच्छा इन्सान बनने वाला हूँ। यहाँ अच्छे इन्सान से तात्पर्य उस इन्सान से है जिसकी सोच सकारात्मक होती है, जिसकी बातचीत यानि वाणी स्पष्ट व प्रिय होती है व जिसका कर्म जगत-कल्याण के निमित्त होता है। जानो सजनों चारित्रिक रूप से ऐसे श्रेष्ठ मानव बनना कुल मानव जाति को आवाहन देता है कि ऐसे बनो, हाँ ऐसे बनो और ऐसे बनकर मानव धर्म की लाज रख लो। निःसन्देह सजनों इस हेतु जैसे पहले सुना है कि मेहनत से वेद-शास्त्र में विदित सत्य आत्मिक-ज्ञान प्राप्त करके जीवन में निष्काम भाव से धर्म संगत आगे बढ़ना होगा। जानो यही परमार्थ का रास्ता है। इस रास्ते पर बड़े-छोटे का कोई सवाल नहीं होता और न ही कोई गुरु-चेला होता है अपितु सब समान भाव से जीवन उन्नति हेतु तेरी-मेरी के भाव से रहित रह संगठित होकर आगे बढ़ते हैं। आपने भी सजनों इसी तरह एकता, एक-अवस्था में आकर आगे बढ़ना है और इस हेतु पूरी रुचि से फेस्ट के दौरान बताई जाने वाली हर बात को सुनना व समझना है। जानो यदि आपने ऐसा कर लिया तो आपका ज्ञान-स्वरूप इतना ऊपर उठ जायेगा कि फिर जीवन सुधारना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा। अतैव इस उपलब्धि के दृष्टिगत अपने जीवन को बर्बादी की गर्त में जाने से पूर्व ही सम्भालकर आबाद हो जाओ व अपना जीवन सफल बनाओ।



day TWO | द्वितीय दिवस



Morning Session

7:30 am



प्रार्थना

श्री साजन वन्दना
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥
शंख - चक्र - गदा - पद्मधारी।
ये दर्शन है बड़ा महान।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥
न जप न तप न भजन बन्दगी होगी।
एक अवस्था होगी जगत जहान।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥
सतयुग में सतजबान होगी।
एक दृष्टि एकता होगी महान।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥
कुदरती कला से सब उपजेगा।
दिव्य दृष्टि होगी महान।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥
एक दृष्टि और एक ही दर्शन होगा।
होगी युवा अवस्था महान।
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम।
सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

ZUMBA
DANCE





सजनों सारे सजन अब क्लासरूम के अनुशासन में आ जाओ। जानो क्लासरूम का अनुशासन कहता है कि जब अध्यापक किसी विषय पर बात करना आरम्भ करे तो बच्चों ने उसे सही ढंग से ग्रहण करने के लिए एकाग्रचित्तता से केवल अध्यापक की ओर ही देखना है व उसे ही सुनना है। कहने का आशय यह है कि अन्दर कोई सोच न चले और न ही दृष्टि इधर-उधर भटके। याद रखो इसके विपरीत चलन अपनाने पर दोनों बातें (अध्यापक की बातें व अन्दर चल रही बातें) intermix हो जायेंगी। परिणाम-स्वरूप जो अध्यापक पढ़ा रहा है वह आपकी स्मृति में नहीं जायेगा और आप आधा-अधूरा ही ज्ञान प्राप्त कर पाओगे। इस सन्दर्भ में आप यह तो जानते ही हो कि जो आधा-अधूरा ज्ञान प्राप्त करता है उसकी स्वाभाविक बनत भी कमज़ोर बनती है और वह आत्म-विश्वासी नहीं बन पाता। इसके विपरीत जो उपरोक्त तरीके अनुसार सही तरीके से ज्ञान धारण करता है वह आत्म विश्वासी बनता है। कहने का आशय यह है कि जहाँ समुचित तरीके से ज्ञान धारण करने वाला इन्सान जीवन लाभ प्राप्त करता है, वहीं इस ज्ञान धारणा में कमज़ोर पड़ने वाला भ्रमित इन्सान भयग्रस्त हो जाता है और जीवन में नुक्सान ही नुक्सान उठाता है। हम समझते हैं कि वर्तमान युग में अधिकतर बच्चे ऐसी गलती कर बैठते हैं इसलिए उनके नम्बर कम आते हैं या फिर वे जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाते।

आपके साथ सजनों ऐसा न हो इस हेतु अनुशासनबद्ध होकर अफुरता से कक्षा में बैठना सीखो। आज वैसे भी यह अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि अब जो हम पढ़ने जा रहे हैं वह विषय न तो आपके स्कूलों/कॉलेजों में पढ़ाया जाता है और न ही आपके माता-पिता उसका उचित ज्ञान आपको दे पाते हैं। अतः यह विषय आपके लिये बिल्कुल नया है। इसके अन्तर्गत परमार्थ की व आत्मिकज्ञान की बात होती है। बच्चो, इस परमार्थी ज्ञान को यकदम समझना आपके लिये सहज नहीं परन्तु यदि आप ठीक ढंग से अनुशासनबद्ध होकर ध्यानपूर्वक एक-एक शब्द को समझो तो आप लाभ उठा सकते हो। यहाँ एक और बात समझो कि जो आत्मिकज्ञान होता है उसकी शब्दावली भौतिकज्ञान से भिन्न होती है अर्थात् आत्मिकज्ञान में जिन शब्दों का प्रयोग होता है वह भौतिकज्ञान में नहीं होता क्योंकि भौतिकज्ञान आशंका-ग्रस्त होता है इसलिए उसके अन्तर्गत शब्दावली बदलती रहती है और लगातार सत्य का अन्वेषण चलता रहता है। इसके विपरीत आत्मिकज्ञान संशय-भ्रम से रहित सत्य-ज्ञान होता है। उसके अन्तर्गत किसी किस्म की कोई खोज करने की आवश्यकता नहीं रहती यानि वह सदा एकरस रहता है और उसकी शब्दावली कभी नहीं बदलती।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि सृष्टि के आरम्भिक काल से आत्मिकज्ञान का आधार जो शब्दावली रही, वही आज भी प्रयुक्त होती है यानि इसमें किसी किस्म का कोई बदलाव नहीं है। आत्मिकज्ञान और भौतिकज्ञान में यह बहुत बड़ा अन्तर है। आगे यहाँ यह भी जानो कि यदि हम यह आत्मिक ज्ञान यथार्थतया प्राप्त कर लेते हैं तो हमारे लिए भौतिकज्ञान प्राप्त करना अति सहज हो जाता है। यही नहीं भौतिकज्ञान वस्तुज्ञान होने के कारण जहाँ केवल वस्तुओं, शरीरों तक ही सीमित रहता है, वहीं आत्मिकज्ञान की पहुँच आत्मा/परमात्मा तक होती है क्योंकि यह आत्मिकज्ञान शरीर को संचालित करने वाली उसी परम आद्य शक्ति आत्मा/परमात्मा से आता है। यह जानते समझते हुए सजनों हमारे लिये बनता है कि हम अपने शरीर का संचालन व नियन्त्रण करने वाली इस आरम्भिक शक्ति को सबल बनाकर आत्मबल प्राप्त करें और उसी बल का प्रयोग करते हुए इस शरीर से भरपूर काम लें। इसी तरीके से सजनों हम अपने शरीर का पूर्णतः लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत यदि हमारे पास आत्मिकज्ञान नहीं, आत्मिक बल नहीं तो हमारा शरीर स्वस्थ रह ही नहीं सकता, हमारी मानसिकता भौतिकज्ञान प्राप्त करने के बावजूद भी स्थिर नहीं रह सकती और हम कोई निश्चय या फैसला ठीक से ले ही नहीं सकते। तात्पर्य यह है कि हम सर्वरूपेण सम्पन्न नहीं हो सकते। यहाँ आप सब स्वीकारोगे कि एक मानव होने के नाते हमारे अन्दर वह काबलियत होनी चाहिये जिसके द्वारा हम दृढ़-संकल्पी होकर निश्चयात्मक बुद्धि से अपने जीवन को मानव धर्म अनुकूल ढाल सकें। आशय यह है कि हमारी बुद्धि इतनी तीक्ष्ण हो कि एक बार जो निर्णय ले लें, वह गलत न हो अपितु सत्य-अनुरूप हो। निःसन्देह सजनों इस हेतु जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने की क्रिया धर्म-संगत होनी चाहिये।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जो बातें अभी बताई हैं यदि वो हमारी स्मृति में चित्रित हो गई हैं यानि छप गई हैं और हम उनको पढ़ समझ सकते हैं तो हमारे अन्दर जो मानवता अनुरूप बदलाव लाने की इच्छा है वह सबल हो सकती है और इस इच्छा के तहत हम सहर्ष मार्ग अवरोधक बुराईयों का त्याग कर अच्छाई को धारण कर सकते हैं। इस तरह सजनों अभी जो हमने बुरे से अच्छा इन्सान बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है उसे साधना आसान हो सकता है।

यहाँ यह भी जान लो कि यह जीवन भी अपने आप में एक लक्ष्य है। जब हम जीवन में किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर निश्चय ले लेते हैं तो हमारी दृष्टि

उस निर्धारित लक्ष्य पर एकाग्रचित्तता से टिक जानी चाहिये। यहाँ दृष्टि से तात्पर्य ध्यान-शक्ति से है। फिर सजनों हमारे पास उस लक्ष्य को साधना कैसे है, उसका पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक होता है और साथ ही उस ज्ञान का लक्ष्य साधने के लिये प्रयोग कैसे करना है वह विधि भी हमें पता होनी चाहिये। इन सब बातों का ठीक-ठीक पता होने पर ही सजनों लक्ष्य सध पाता है। इस सन्दर्भ में आज हमने जो लक्ष्य निर्धारित किया है, वह है आत्मिकज्ञान प्राप्त करना और उस ज्ञान के प्रयोग द्वारा मोक्ष प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना। अब इस लक्ष्य को पाने हेतु आवश्यक है - मूल मन्त्र आद् अक्षर को सही तरीके से चलाने का अभ्यास करना।

जानो जो मन्त्र होता है उसमें पूरा ज्ञान निहित होता है। इस आधार पर इस मन्त्र में जो जीवन उपयोगी ज्ञान निहित है यह प्रणव उसका मूल है। अतः यदि इस मन्त्र का प्रयोग करना आ गया तो समझो कि आत्मिकज्ञान आपके हृदय में स्वतः ही उतरना आरम्भ हो जायेगा। इस बात को सजनों समझने की कोशिश करो और अपने ख्याल को हर तरफ से हटा लो क्योंकि हम करने जा रहे हैं - अक्षर का अभ्यास। इस अभ्यास को करने से पूर्व इस आद् अक्षर की महत्ता जानो।

अक्षर की महत्ता व अभ्यास

सजनों यह सत्य सर्वविदित है कि ब्रह्म जिसकी सत्ता इस ब्रह्मांड की अद्भुत रचना का आधार है, वही सर्वशक्तिमान निर्गुणिया ही शब्द ब्रह्म के रूप में सर्वव्याप्त है और इसलिए सर्वज्ञ कहलाता है। इसलिए तो सजनों वेद-शास्त्रों अनुसार जो मानव अपने हृदय में उस परमतत्त्व की आत्मरूप में विद्यमानता का बोध कर आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है, वह ही अपने ख्याल को हृदयस्थित रख ब्रह्म सत्ता यानि आत्मिक शक्ति को ग्रहण कर सकता है यानि हृदयगत अनाहत नाद विशेष का अनुभव कर यथा शक्तिशाली होकर उसे जीवन में उतारने में सफल हो सकता है व परमेश्वर नाम कहा सकता है।

इस संदर्भ में जानो कि अनाहत नाद कंठ/तालु आदि स्थानों के प्रयत्न से उद्भूत ध्वनियों से भिन्न एक प्रकार की आनन्दमयी ध्वनि है जो केवल एकाग्रचित्त होने वाले ध्यानियों और योगियों द्वारा अनुभूत है। अन्य शब्दों में जानो कि यह मूलाधार चक्र में स्थित कुंडलिन (शरीर के अन्दर का एक कल्पित अंग जो मूलाधार के अंतर्गत सुषुम्ना नाड़ी के नीचे माना गया है) के जाग्रत होकर ऊपर की ओर उठने पर होने वाला नाद

या स्फोट (किसी वस्तु का अपने आवरण को फाड़कर वेगसहित बाहर निकलना) है यानि सुषुम्ना नाड़ी (शरीर की मुख्य तीन नाड़ियों में से वह जिसका स्थान नाभि के मध्य में माना जाता है व जो नासिका से ब्रह्मरंध्र तक गई हुई मानी जाती है) के जाग्रत होने पर सुनाई पड़ने वाला अन्दर का विशेष नाद है जिसे शब्द ब्रह्म कहते हैं और जो समुद्रगर्जन, मेघगर्जन, शंख ध्वनि, घंटा ध्वनि, वंशी ध्वनि, वंशी वादन आदि अनेक रूपों में सुना जाता है व इसके स्फोट से मन बुद्धि पर छाया अज्ञान आवरण छँट जाता है। इसलिए तो इस आधाररहित ध्वनि का कोई भी, किसी विध् भी तब तक सार नहीं पा सकता, जब तक वह शब्द ब्रह्म मूलमंत्र आद् अक्षर ओ३म् कहो या ओंकार में अपनी सुरत यानि ख्याल को रमा शब्द रूप में ब्रह्मज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता। इस तरह सजनों जो पुरुषार्थ दिखा इन ब्रह्म शब्दों का बोध कर लेता है केवल वह ही अपने आचार-विचार व व्यवहार को ब्रह्म शब्दबद्ध कर, अपने सभी कर्तव्य यथार्थता से निभाते हुए, सही अर्थों में अपनी वास्तविकता को प्रमाणित कर पाता है।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों जानो कि सदा ऐसी पूर्ण चेतन अवस्था में एकरस बना रहने वाला आत्मज्ञानी ही इस सत्य से भली विध् परिचित हो पाता है कि 'मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ', और जहाँ 'शरीर नश्वर है, वहाँ आत्मा अनश्वर यानि अमर' है। याद रखो सजनों हर समयकाल में योगियों ने इसी युक्ति को आत्मसात् करने का तप दिखा इस आन्तरिक ध्वनि को ओंकार ध्वनि या सोऽहम् ध्वनि (वह ब्रह्म/परमात्मा मैं हूँ यानि वह मैं हूँ) के रूप में धारण कर अलौकिक आनन्द का अनुभव किया और जो साधारण लोग समझते हैं, नहीं हो सकता, उस असंभव को परिश्रमरत हो, संभव कर दिखलाया। तभी तो वह अन्तर्निहित अपनी वास्तविक दिव्य शक्तियों और गुणों को जान समस्त कष्ट-क्लेश सहते हुए भी, निरहंकारी अवस्था को प्राप्त रह, सदा ब्रह्म विचारों पर सुदृढ़ता से डटे रह सके और इस सृष्टि में सत्य-धर्म प्रतिष्ठित करने में सक्षम हो परोपकारी नाम कहा अक्षय कीर्ति को प्राप्त हो पाए।

सजनों सुनिश्चित रूप से अंत मंगलकारी परिणाम प्राप्त होने की यह सब बात सुनने-समझने व जानने के पश्चात् हम भी चाहें तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार अदम्य पराक्रम दिखा ऐसे सौभाग्यशाली इंसान बन सकते हैं। अतः यदि चाहते हो कि हम भी अपने जीवन में यह महान कारज सिद्ध कर सकें तो इस हेतु आओ अब शुभ संकल्प लें कि 'अब हम भी सदा ए विध् अपने सत्-चित्त-आनन्द वास्तविक स्वरूप में बने रहेंगे और इस प्रकार आत्मस्मृति में बने रह निरासक्त भाव से

जीवन में जो भी करेंगे वह समभाव समदृष्टि की युक्ति अनुसार, परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करते हुए, सुकर्म ही करेंगे'। निश्चित रूप से यकीन मानो सजनों यह उद्यम दिखा अटल राज को प्राप्त कर जीवनमुक्त हो जाओगे।

इस संदर्भ में हम मानते हैं कि आप सबने ऊपरवर्णित सर्वहितकारी व जीवनदायक बात को ध्यानपूर्वक सुन कर स्मृति में ले लिया होगा। अगर ऐसा ही है तो हम यह भी मानते हैं कि आपके दिल में वैसा आनन्दमय जीवन जीने के प्रति उमंग व उत्साह पैदा हुआ होगा। अगर यह बात ठीक है तो अब तक जो परिवारजनों द्वारा हुई मनगढ़ंत पालना के प्रभाव से अनिश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त कर, सांसारिक वृत्ति अपना अधर्मयुक्त रास्ते पर चढ़ चुके हो उस विषय वासनायुक्त अवलड़े रास्ते को त्यागने के लिए अविलम्ब तत्पर हो जाओ। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही जीवन की अच्छी-बुरी परिस्थितियों में सम अवस्था में बने रहते हुए स्थिर बुद्धि समझदार इंसान कहलाने के योग्य बन सकोगे। यहाँ हम यह भी बताना चाहते हैं कि स्थिर बुद्धि इंसान ही अपने वास्तविक आत्मिक गुणों पर स्थिरता से बने रह अपना समुचित ढंग से इंसानियत अनुरूप स्वाभाविक निर्माण कर यथार्थ रूप से इंसान कहलाने के काबिल बन सकता है। ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सजनों घबराओ नहीं क्योंकि यह अपने आप में ख्याल को अंधकारमय नकारात्मक वातावरण से निकाल प्रकाशमय सकारात्मक वातावरण में ध्यान स्थिर कर अपने ही आत्मस्वरूप का सत्य बोध करने जैसी शुभ बात है। अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि यह स्वार्थ से परमार्थ बनने का आवाहन है। मानो आप में ऐसा कर पाने की पूरी क्षमता है इसलिए उठो और पति-परमेश्वर से वियोगिन अपनी सुरत को पुनः शब्द ब्रह्म संग जोड़ उसे तत्क्षण जन्म-मरण की त्रास जैसे वियोगयुक्त दुःख से मुक्त कर जगत से आज़ाद हो जाओ। इस तरह सुरत शब्द के मिलाप के अलौकिक अवर्णनीय आनन्द का अनुभव करते हुए, चौरासी लाख योनियों उपरान्त मिले इस अनमोल मानव चोले को सत्य धर्म के रास्ते पर सुदृढ़ रहते हुए निष्कामता से जगत उद्धार हेतु समर्पित कर परमात्मा की योगमाया यानि जो परमात्मा की शक्ति सृष्टि करती है, उसकी रमज़ जान जाओ और सिद्धयोगी बन परमार्थ जानने वाले ब्रह्मज्ञानी बन जाओ। अंत में हम यह कहना चाहेंगे कि सभी ऐसा श्रेष्ठ, बुद्धिमान व विचारशील मानव बनने के प्रति एक साहसी और निर्भीक इंसान की तरह इंसानियत में सुदृढ़ता से बने रहने के प्रति लड़खड़ाते स्वाभाविक कदमों को समय रहते ही सुरत-शब्द के योग द्वारा संभाल लो और समभाव समदृष्टि की युक्ति अनुसार परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए केवल निष्काम भाव से परोपकार कमाने को

प्राथमिकता दो। अगर जीवन विजयी होने के लिए इस हितकर बात के साथ सहमत हो तो पूरी तरह से दिलचस्पी में आकर अपना ख्याल आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर रखते हुए मूलमंत्र आद् अक्षर का घड़ी की टक-टक की गति से जाप करो और ए विध् ब्रह्म सत्ता ग्रहण कर ब्रह्ममय हो ब्रह्म नाम कहाओ।

अक्षर का अभ्यास घड़ी की टक-टक के साथ

1. सब सजन पालथी लगाकर बैठ जाएं और शांत, स्थिर व अफुर हो विश्राम अवस्था में आ जाएं।
2. अब मन में प्रार्थना, चरण-शरण कर लें और फिर जो आवाज़ आप को सुनाई दे, उसके साथ ठीक उसी गति से अक्षर को अन्दर ख्याल के साथ चलाने का यत्न करें। किसी सजन का अक्षर जिह्वा से न चले और होंठ न हिलें अपितु शान्त मन से उस ध्वनि का ग्रहण करो।
3. जब तक यह टक-टक की आवाज़ बंद न हो, अक्षर निरंतर उसी गति से चलाते रहना है।
4. हर क्षण के साथ आप सजनों के चेहरों पर प्रफुल्लता बढ़ती जाए, बढ़ती जाए, बढ़ती जाए।
5. सजनों प्रफुल्लता के बढ़ने से आप अक्षर चलाने की गति में समता ला सकोगे और अक्षर स्वतः यानि अजपा चलने लगेगा यानि उसे चलाने की फिर आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः यत्न करो और घर जाकर भी यानि दैनिक कार्यव्यवहार करते हुए इस निरंतरता को साधने का यत्न करना।

अन्त में सजनों हम मानते हैं कि आज जो हमने क्रिया करी, वह काफी सजनों के लिये नई है पर यहाँ हम यह बताना चाहते हैं कि इस क्रिया द्वारा इन्सान महान बन सकता है क्योंकि इसके द्वारा उसके मस्तक की ताकी खुल सकती है और वह ब्रह्मसत्ता का ग्रहण कर अपनी मंजिल की ओर कदम बढ़ा सकता है। अतैव हम तो यही कहेंगे कि सजनों मूल-मन्त्र आद् अक्षर के अजपा-जाप द्वारा अपनी इस अनमोल परमार्थिक धन सम्पदा का ग्रहण करो और अपनी गुण शक्ति को पहचान विलक्षण व्यक्तित्व के मालिक बन अपना जीवन सफल बनाओ।

Morning Session

10:30 am



सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ

सब मिलकर बोलो, सब मिलकर बोलो।
सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की जय जयकार.....जय जयकार।।
इसी की वाणी से होगा जी।
सतयुग की संस्कृति का पुनः प्रसार.....का पुनः प्रसार।।

सजनों जानो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ अपने आप में इतना पावन व पवित्र है कि इसमें वर्णित हर विचार मानव को चारित्रिक व नैतिक रूप से पवित्रता का प्रतीक बनाने वाला है। इस सन्दर्भ में ज्यों-ज्यों मानव इस कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचार को धारता जाता है, त्यों-त्यों हृदय सहित उसका रोम-रोम, रग-रग पावनता का प्रतीक बनता जाता है। मात्र इतना ही करने से उसकी सोच सकारात्मक हो जाती है व सोच के साथ-साथ उसकी बात-चीत भी सुन्दर व प्रिय हो जाती है। फिर वह मानव जीवन में जो भी करता है सुकर्म ही करता है क्योंकि निष्कामता उसके दिल और दिमाग पर छा जाती है। जानो सजनों जहाँ निष्कामता होती है वहाँ इन्सान के लिए परोपकारी प्रवृत्ति में ढलकर इस जगत का नियमित रूप से कल्याण करना सहज हो जाता है। इस प्रकार वह जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त कर अन्त परिणाम रूप में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।





हम हकीकत में कह रहे हैं कि आज जो सुन्दरता का सीस-ताज आपने शीश पर धारण किया हुआ है उसे धारण कर आप बहुत सुन्दर लग रहे हो। अतः हम यही कहेंगे कि इस सुन्दरता को आत्मसात कर अवश्य रूप से अपना जीवन सफल बना लेना। आप सबको इस रूप में देखकर हमें तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजन की यही पंक्तियाँ याद आ रही हैं:-

**महावीर जी ने अचरज खेल रचाया,
शेष गणेश वी अन्त न पाया
महावीर जी ने अचरज खेल रचाया।**

सजनों अगर इस अचरज खेल को समझना चाहते हो यानि इसका बोध करना चाहते हो तो सजन श्री शहनशाह महावीर जी की चरण-शरण में खुद को समर्पित कर दो और जो भी ज्ञान, गुण व युक्तियाँ वे प्रदान करें, उनको सहर्ष स्वीकारते हुए अपने जीवन को मूल्यवान बना लो। आओ अब आगे बढ़ते हैं और जानते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के बारे में क्या कह रहे हैं?



वह कह रहे हैं:-

ए ग्रन्थ कुदरती सतवस्तु दा आ रिहा, तूं-मैं किसे दा सवाल नहीं।।
ए ग्रन्थ सब दा है ओ सांझा, ऐथे वड छोट दा कोई प्रभाव नहीं।।

इसी बात की समीक्षा करते हुए सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के विषय में कहते हैं:-

यह कुदरती ग्रन्थ जो आ है रहा,
इसमें तूं-मैं का कोई सवाल नहीं।
यह ग्रन्थ है जे ओ सबदा साँझा,
इसका कोई भी हकदार नहीं, कोई भी हकदार नहीं।

सजनों क्या आप जानना चाहते हो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या है व वर्तमान समय में यह इस धरा पर क्यों आया?

हाँ जी।



तो जानो कि जो कुदरत इंसान की बनत बनाती है, वही कुदरत युग-युगांतरों में, इंसान को इंसानियत में बने रह अपना जीवन लक्ष्य पाने हेतु परिपूर्ण आत्मिक ज्ञान के रूप में कुदरती ग्रन्थ भी प्रदान करती है ताकि इंसान आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानने में विश्वास तथा इन विश्वासों के अनुसार आचार-व्यवहार करते हुए, सदा आध्यात्मिक कर्म करे। सजनों जानो यह अपने आप में अपने वास्तविक धर्म की मर्म जान यानि सत्य का पारखी बन व सदाचारिता के रास्ते पर सुदृढ़ता से प्रशस्त रह जगत में निष्पाप विचरने जैसी मंगलकारी बात होती है व इसी के द्वारा इंसान को जीवन में अभ्युदय (मुक्ति) और मृत्यु के उपरान्त निःश्रेयस यानि कल्याण की प्राप्ति होती है।

सजनों युगों-युगांतरों में मानव इस उत्तम गति को प्राप्त हो सके इसीलिए जब कभी श्री शिव जी महाराज, श्री ब्रह्मा जी, श्री नारद जी, श्री महाबीर जी ने जिस किसी सजन को नाम दिया, वहाँ कुदरती ग्रन्थ आया। इस तथ्य से सजनों इन सौभाग्यशाली सुपात्रों के अटूट समर्पित व महान निष्काम भाव की समझ आती है और ज्ञात होता है कि किस प्रकार अकर्ता भाव पर स्थिर बने रह इन सजनों ने अपनी वृत्ति-स्मृति व बुद्धि को निर्मल रखते हुए, अन्दरूनी वृत्ति में जो आत्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ, उसे 'हाँ-मैं' के भाव से रहित होकर, ज्यों का त्यों, कुल सृष्टि के उद्धार के निमित्त प्रकट कर दिया और जगत वासियों को जाग्रति में लाने का महत्त्वपूर्ण दायित्व कुशलता से धर्मसंगत संपादित किया। इस बात की सत्यता सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सच्चेपातशाह जी के इन वाक्यांशों से स्पष्टतः प्रमाणित होती है:-

**भजन वी तुसां आप बताया, लिखन वेले वी तूं नज़र आया।
महाबीर जी ने अचरज खेल रचाया, शेष गणेश वी अन्त न पाया।।
आप ही पढ़े आप ही अर्थ करे, आप ही सुनने आया।
महाबीर जी ने अचरज खेल रचाया, शेष गणेश वी अन्त न पाया।**

अर्थात् सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित भजन/कीर्तन बताने वाले, लिखने वाले, सुनने वाले, पढ़ने वाले व उनका गुप्त रूप से अर्थ करके बताने वाले सृष्टिकर्ता परमेश्वर आप ही हैं। इसीलिए उन्होंने बार-बार यह भी कहा कि:-

'मैं नहीं कोई नजर न आवे, ओही सोहणा नजर आया' ।

उपरोक्त तथ्य से सजनों यह समझ में आता है कि ऐसा योग्य सुपात्र कभी भी, महाबीर जी द्वारा प्रदत्त बंधनमुक्त भक्ति भाव का दूसरों के आगे प्रसार करते हुए, बड़-छोट का सवाल पैदा कर अपनी पूजा-मानता नहीं कराता अपितु वह तो इस मान्यता पर स्थिरता से बना रहता है कि दूसरे सजनों को भी महाबीर जी आप ही नाम-युक्ति बख्श कर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित सद्-विचारों का वांछित लाभ उठाने के प्रति जाग्रति में ला रहे हैं। अतैव इस बात को ध्यान में रखते हुए सजनों हमने भी सदैव स्मरण रखना है कि इस द्वारे की नीति अनुसार हम सजनों को भी गुप्त रूप से केवल सजन श्री शहनशाह दाता महाबीर जी ही नाम-युक्ति बताते हैं और कोई दूसरा सजन नाम नहीं देता। इस तरह इस वाक्यांश से वह स्पष्ट करते हैं कि श्री महाबीर जी ने शब्द को गुरु बताकर हमारे सारे बन्धन छुड़ा मुक्ति का द्वार खोल दिया है। अतैव महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते किसी भी सजन ने किसी को इस उत्तम विधान के विपरीत कुछ अन्य कहने की भूल कदापि नहीं करनी। कहने का आशय यह है कि यह बात हमारे हृदय में इस तरह ठहर जाए कि सपने में भी इस बात का ख्याल न आए कि हमने अन्य किसी व्यक्ति विशेष से नाम लिया हुआ है। इसके स्थान पर बस हमें तो केवल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास रखते हुए यही याद रखना है कि 'शब्द' मूलमंत्र जो आद् अक्षर है वह अमर आत्मा है और विच परमपिता परमात्मा है और अगर हमारा ख्याल शब्द बल जुड़ा रहता है तो उस परमपिता परमात्मा को हम देख सकते हैं और अपने असलियत प्रकाश की पहचान कर सहज ही आत्मपद की प्राप्ति कर सकते हैं।

अब तो सजनों आप सबको स्पष्ट हो गया होगा कि युगों-युगांतरों से संसार के माया जाल में भटके हुए जीवों को इसी आत्मपद की प्राप्ति का बोध कराने हेतु हाज़िर हस्ती जब-जब भी इस दुनियां में प्रकाशित हुई, तो उन भ्रमित बुद्धि जीवों को समझा कर, पुनः सद्मार्ग पर लाने के लिए कुदरती ग्रन्थ के रूप में, अपने जीवन की दिव्य लीला, दुनियां वालों के आगे रखी। इस संदर्भ में सजनों जानो कि जिस तरह त्रेता में श्री राम जी, द्वापर में श्री कृष्ण भगवान जी और कलियुग में दस पातशाह जी की जीवनियाँ रखी गईं उसी तरह यह सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सतवस्तु के वाली श्री साजन जी का जीवन चरित्र है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में इस सत्य को प्रमाणित करते हुए सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं:-

साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।
 कैसा सुन्दर है परम पवित्र, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।
 जीवन चरित्र जीवन इन्हां दी ए वाणी।
 सारी विश्व ते हिन ओ अस्थित, साजन जी दा लिख रहे हैं जीवन चरित्र।।

सबकी जानकारी हेतु ज्ञात हो कि इस ग्रन्थ के रचयिता के रूप में न तो किसी व्यक्ति विशेष का नाम अंकित है और न ही किसी के मनगढ़ंत विचारों का समावेश है अपितु यह तो कुदरती आई हुई वाणी है और कुदरत ही इसकी रचयिता है। कहने का आशय यह है कि यह अपने आप में कलियुग के हर दुर्मति इंसान को पुनः सुमति में ला सर्वोत्कृष्ट इंसान बनाने के प्रति उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शब्द ब्रह्म विचारों के रूप में ऐसी परम आज्ञा है जिसका परमगति पाने हेतु मानव को पालन करना ही होता है। इसीलिए तो इस ग्रन्थ में कोई शब्द सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के हैं, कोई शब्द सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सुना रहे हैं और कोई शब्द श्री साजन जी के मुख के हैं। वास्तव में सजनों सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी तथा साजन जी एक ही हैं परन्तु कुल दुनियां से अन्धेरा मिटाकर पुनः चानणा लाने के लिए यानि जीवों का उद्धार करने के लिए वे इस ग्रन्थ में आपस में बातचीत कर रहे हैं व इस धरा पर चानणा ला रहे हैं। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:- क्या ? ध्यान से सुनो।

कलुकाल जब हटने लगा तो वह दिन आने वाला साजन जी
 वह दिन आने वाला.....हो....हो...हो

अब प्रश्न उठता है कि वर्तमान समय में यह कुदरती ग्रन्थ इस धरा पर क्यों आया?

इस संदर्भ में सजनों ज्ञात हो कि इंसानों के स्वभावों में तबदीली होने के कारण, त्रेता युग से आरम्भ हुआ संकल्प का झुखना और रोना, जब कलुकाल के युग में बिल्कुल बढ़ गया और झुखना ही झुखना और रोना ही रोना हद से ज्यादा हो गया तो अज्ञान/स्वार्थपरता के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आशा-तृष्णा, निंदा-चुगली, तेरी-मेरी, वड-छोट, वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष, कूड़-कपट, झूठ-चतुराई, चोरी-ठगी, कुकर्म-अधर्म, ताप-संताप, झखड़े-बखेड़ों, आदि में फँसे सजनों के ख्याल को, इन विषय-विकारों की गर्त से उबार यानि अविचार से पलटा खवा पुनः विचार में खड़ा करने के लिए, उस हाज़िर हस्ती ने अपना जीवन चरित्र सर्व उजागर किया। इस तरह

अंधकूप में गिरे हुए जीवों की पुकार सुन कर, इस कुल दुनियां का भार उतारने के लिए अर्थात् कलियुग के घोर अंधकार को विध्वंस कर, सजनों की बुद्धि को प्रकाशित करने के लिए श्री साजन जी ने, कुल सृष्टि के कल्याण के निमित्त इस सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को प्रकाशित किया और कहा कि:-

**जैं सतवस्तु दा ग्रन्थ पहचान लिया, ओ सुच्चा भांडा खोट न ओहदे है बदन में।
ओ चमके सारे जग अन्दर, ओ चमके सारे जगत में, ओ चमके सारे जगत में।।**

कहने का आशय यह है कि निज अंतः प्रकृति व धर्म से च्युत हो जब आत्मविस्मृत मानव समभाव व आत्मिक ज्ञान प्राप्ति के स्थान पर सेवक-स्वामी, भक्त-भगवान व गुरु-चेले के भाव को महत्ता दे, नाना प्रकार के कर्मकांडों, आडम्बरों, अंधविश्वासी परंपराओं, कट्टरपंथी पंथों, रूढ़िवादी मान्यताओं, कुरीतियों व वाद-विवादों में उलझ गया और धर्मान्धता अराजकता, अलगाववाद, अन्याय, शोषण, आतंकवाद, भिन्न-भेद, जातिवाद, अमीरी-गरीबी जैसी बीमारियों का शिकार हो गया तो देवालयों, शरीरों, तस्वीरों, मूर्तियों, शारीरिक गुरुओं में भटके हुए ऐसे भिन्न-भेद युक्त मानव समाज को, शब्द गुरु की सुगम अवधारणा द्वारा पुनः सत्य-धर्म के स्वतन्त्र भक्ति भाव से परिचित करा, बंधनमुक्त कराने हेतु ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ वर्तमान संक्रमण काल में इस धरा पर आया और इसके अंतर्गत कहा गया:-

**सतवस्तु सचखंड अटल ओ नगरी, सच वर्ताव करे जेहड़ा
धर्म दा उपदेश जो होवे ओथे है साडा डेरा**

आगे जानो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की महत्ता व महानता क्या है?

सजनों सतवस्तु का यह पावन कुदरती ग्रन्थ सम्पूर्ण मानव जाति का मार्गदर्शन स्त्रोत है। यह युगों से प्रचलित बाल अवस्था के विभिन्न कर्मकांडयुक्त आडम्बरी भक्ति-भावों से हमें बचा, युवावस्था के ताकतवर भक्ति-भाव अर्थात् समभाव-समदृष्टि की युक्ति को अपनाने का संदेश देता है और सार्वभौमिक ईश्वरीय सत्ता के यथार्थ को इस प्रकार ज़ाहिर करता है:-

**विचार ईश्वर आप नूं मान। अवविचार ईश्वर इक जान।
विचार इक अपना आप ही मान। अवविचार कुल दुनियां जान।**

विचार करो है ईश्वर अपना आप। अव विचार ईश्वर है इक साथ।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश। ईश्वर है जे अजपा जाप।

तदनुसार, यह अभिव्यक्त करता है कि:-

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है।

इस प्रकार सजनों यह वास्तविक निज के सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ ईश्वर होने का सत्य उजागर करता है और समभाव एवं समदृष्टि का प्रतीक बनने के लिए एक वैरागी इंसान की तरह, स्वतन्त्रता से अपनी निगाह अंतर्भूत आत्मा में व्याप्त परमात्मा अर्थात् दिव्य शाश्वत् सत्य पर स्थिर रखते हुए, ईश्वर के प्रति अफुर व निष्काम प्रेम रखने का निर्देश देता है। यही नहीं सजनों अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति को निर्मल रखने हेतु यह ग्रन्थ, नैतिक सिद्धान्तों एवं सच्चरित्रता के आधार पर, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जैसे जीवन मूल्य अपना कर, कर्तव्यनिष्ठा से, शांतिपूर्वक जीवनयापन किस प्रकार करना है, इसकी जानकारी भी प्रदान करता है।

हर परिस्थिति में अपने मन-वचन व कर्म को समस्त विकारों से विमुक्त रखने के लिए सजनों, यह हमें शास्त्रविहित ईश्वरीय हुक्म की पालना के प्रति सदैव तत्पर व सुदृढ़ बने रहने का सुझाव देता है। इस तरह यह हमें उच्च-बुद्धि, उच्च-ख्याल हो, दिव्यता से भरपूर परोपकारी जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है ताकि हम काम/कामना से मुक्त हो, वास्तविक अर्थों में 'सजन' बनें अर्थात् ऐसे श्रेष्ठ आदर्श पुरुष बनें जो आत्मीयता के भाव से भरपूर हों व हर परिस्थिति में विवेकशीलता से अपने ख्याल को विषाद, झुखने-रोने या नकारात्मक सोच के कुसंग से बचाए रख, एकाग्रचित्त होकर अखंडता से प्रभु संग जोड़े रख सकें।

इस आधार पर सजनों हम कह सकते हैं कि सतवस्तु के इस कुदरती ग्रन्थ में आत्मिक ज्ञान के रूप में जीवन बनाने की समस्त युक्तियों का विधिवत् वर्णन है। इसी के साथ गृहस्थाश्रम में रहते हुए व हँस कर फ़र्ज़ अदा निभाते हुए, युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, विचार शब्द में खड़े हो विवेकशील बनने के भी सारे तरीके हैं। इन युक्तियों को प्रवान कर, अमल में लाने वाला सजन जीवन की वास्तविकता और अंतर्निहित परिपूर्ण सत्य को समझ, अपने इस शरीर रूपी दरखत को सँवार सकता है और सुख-शांति व एकता से आनन्दमय जीवन जी सकता है। सजनों हम सब भी इस ग्रन्थ में वर्णित कुदरती

साईस के प्रयोग की युक्ति समझ कर, उस द्वारा अपनी शरीर रूपी मशीनरियों में उत्पन्न विकारों का उन्मूलन कर, उसे सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जैसे दिव्य गुणों से अलंकृत करने में सक्षम हो जाएं, इस हेतु इस ग्रन्थ में बार-बार कहा गया है:-

**शास्त्र नूं विचार, हुन दरखत नूं सँवार
हुण कदे न खासैं हार, जयकार सदा जयकार ॥**

सबकी जानकारी हेतु सजनों इस ग्रन्थ में न केवल विगत त्रेता, द्वापर व वर्तमान युग (कलियुग) के नकारात्मक भाव-स्वभावों व उस कारण प्राप्त हुए ताप-संताप व सुख-दुःख की विस्तार से गाथा है अपितु इसमें तो सतयुग जो आ रहा है, पहले से ही उसका सारा विस्तार भी समझा दिया गया है ताकि हम कलुकालवासी समय रहते ही कुदरत द्वारा किए इस युग परिवर्तन के उद्घोष को सुन-समझ कर सावधान हो जाएँ और बताई युक्ति के अनुसार स्वार्थपरता से उबर, सतयुग का संविधान यानि श्रेष्ठतम आचार-संहिता अपना, अपनी उत्कृष्टता के अनुरूप, सतयुगी मानव बन जाएं। इस तरह सतयुग में प्रवेश पाने के लिए शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से पूरी तरह सबल व तैयार हो जाएं। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के माध्यम से प्रत्येक सजन को कहा गया है:-

**सतवस्तु दी सजनों चाल चलो, सतवस्तु दे वचन इस्तेमाल करो ॥
सतवस्तु दे असूलां नूं फड़ो सजनों, सत सत वचनां नाल प्यार करो ॥**

सजनों कहने का आशय यह है कि इस ग्रन्थ में जिस सत्यज्ञान का वर्णन है वह नित्य है, स्थाई है, शुद्ध है, पवित्र है, श्रेष्ठ है और भौतिक नश्वरता व संशय-भरमों से उबारने वाला है। सजनों इस ग्रन्थ में तीनों कालों के साथ-साथ आद् अंत, अनन्त, बेअन्त, सर्गुण, निर्गुण, निर्वाण व परमधाम की सारी रचनाओं का वर्णन है। यह ग्रन्थ हमारे अंतःकरण को विशुद्ध कर, हृदय को सचखंड बनाने वाला है यानि रोम-रोम को रंगने वाला है। इस कुदरती ग्रन्थ की महिमा अपरंपार है। हर शब्द में आत्मिक ज्ञान भरा हुआ है। ज्यों-ज्यों उनकी गहराई में उतरते जाओ, त्यों-त्यों विचार रूपी हीरे मिलते जाते हैं और अन्तर्पट खुलते जाते हैं। इसीलिए तो कहा गया है कि इस शास्त्र रूपी दरखत की राम रूपी जड़ पाताल में और चोटी आकाश तक है। सजनों इस ग्रन्थ के उसूलों पर चलने वाला सहजता से आत्मा-परमात्मा की अभेदता का सत्य जान एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन द्वारा, निज परमात्म स्वरूप में अवस्थित हो,

अपना जीवन सुखमय बना सकता है और इस तरह संकल्प पर फ़तह पा, जन्म-जन्मांतरों से लगा हौं-मैं का रोग मिटा कर, व एकरूप होकर, आवागमन के चक्कर से बच सकता है। इस तरह दिव्य दृष्टि प्राप्त कर वह त्रिकालदर्शी, महानदर्शी व सुजानदर्शी, सर्वहित की ख़ातिर, निष्काम भाव से परोपकार करने का अद्वितीय पराक्रम दिखा, जगत से आज़ाद हो जाता है।

संक्षेपतः सजनों हम यह कह सकते हैं कि यह ग्रन्थ मानव-जाति व मानवीय व्यवहारों के साथ ही साथ आध्यात्मिकता का अध्ययन है, जो कि मानवीय दुःख-तकलीफों को कम करने व विशेषकर सामाजिक व आध्यात्मिक दोनों प्रकार से जीवन स्थिति को सुधारने के निमित्त एकमात्र साधन है। इसमें जीवन के हर पहलू का सद्ज्ञान अत्यन्त ही सुन्दरता व सूक्ष्मता से वर्णित है। जो भी चाहे वह इसको पढ़-समझ कर व अमल में लाकर अपना जन्म आबाद कर सकता है। इस तरह सजनों इस ग्रन्थ के विचार कमाल हैं जो रोते हुआँ को हँसाने वाले हैं, उजड़े हुआँ को बसाने वाले हैं, सोए हुआँ को जगाने वाले हैं, कुरस्ते पड़े हुआँ को रास्ते पर लाने वाले हैं व कई जन्मों से बिछुड़े हुआँ को अपना आप मिलाने वाले हैं। अतः सजनों आज के इस अधर्म व पापमय युग में, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को, उस परमेश्वर की अनमोल दात व विशेष मेहर समझ कर इसके आगे झुक जाओ और जैसा इसमें आदेशित है अपने व अपने परिवार के सुख की ख़ातिर बिना किसी तर्क-वितर्क के स्वीकार कर तदनुसार करना आरम्भ कर दो और निर्विकारता के प्रतीक बन जाओ।

अब जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन, मनन व चिंतन करके उसमें विदित विचारों को व्यवहार में लाना क्यों अनिवार्य है?

इस संदर्भ में सर्वप्रथम अध्ययन की महत्ता को समझो और जानो कि मस्तिष्क को सद्-विचारों का अध्ययन करने की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी शरीर को आहार व व्यायाम की। आशय यह है कि जिस प्रकार शारीरिक तन्दुरुस्ती के लिए सात्विक आहार का सेवन व शारीरिक व्यायाम करना जरूरी है, उसी प्रकार मानसिक तन्दुरुस्ती के लिए सत्-शास्त्र का अध्ययन करके उसमें विदित सात्विक विचारों का सेवन करना आवश्यक है ताकि हमारी बुद्धि अर्थात् सोचने-समझने की शक्ति सदा निर्मल व विवेकशील बनी रहने के साथ-साथ निश्चयात्मक भी बने और किसी प्रकार की भी भोग कामना हमारे मन में जाग्रत न हो। अध्ययन की इसी महत्ता के दृष्टिगत ही

सजनों सच्चेपातशाह जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अध्ययन की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि:-

**‘शब्द है हमारी पढ़ाई, ग्रन्थ है हमारी सफ़ाई।
सजनों जो ग्रन्थ है उससे है हमारे अन्दर की सफ़ाई।
इसके सुनने से मन्दी चीज़ें छोड़नी हैं और अच्छी चीज़ें धारण करनी हैं।
अतः सच्चाई धारण करो और सच का वर्त-वर्ताव करो
क्योंकि सतयुग आ रहा है’ ।**

कहने का भावाशय यह है कि यह क्रिया पाश्विक नकारात्मक वृत्तियों के नाश व सद्-वृत्तियों के विकास के लिए आवश्यक है। इस क्रिया द्वारा ही बहिर्मुखी अज्ञानी मानव बुराई के प्रतीक कलुषित विषय-विकारों का त्याग कर, शब्द ब्रह्म विचार धारण करता है, अपनी सोचने-समझने की शक्ति में वृद्धि करता है और औचित्यपरायण बनता है यानि सत्य-असत्य का पारखी बन सर्वहित के निमित्त उचित निर्णय लेने की सामर्थ्य का विकास करता है। आशय यह है कि इस क्रिया द्वारा ही मानव अंतर्मुखी हो, अपनी जैविक आवश्यकताओं यथा आहार, निद्रा और मैथुन के आगे बढ़कर उत्तमोत्तम सत्य विचारों को प्राप्त करता है तथा तदनुकूल अपने अंतःकरण यानि मन-चित्त, बुद्धि, वृत्ति-स्मृति व भाव-स्वभाव रूपी बाणे को निर्मल करने के प्रयास में रत हो, आत्मीयता अनुरूप अपना विकास करता हुआ सुख-दुःख आदि में समचित्त बने रहने की क्षमता धारण कर लेता है। इस तरह यह क्रिया मानव को समभावी बना आत्मबोध कराती है और आत्मज्ञानी बन, आत्मतुष्टता से, आत्मविश्वास के साथ अपने आत्मिक बल का समुचित प्रयोग करते हुए आत्मविजयी होने के लिए प्रेरित करती है। इस महत्ता को समझते हुए ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

**शास्त्र नूं विचार के, सम सन्तोष नूं धार के।
मिल गए परमानन्द, दासियां रल चलिये।।**

सजनों उपरोक्त पंक्तियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि आत्मविजयी होने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का केवल ध्यानपूर्वक गंभीरता से अध्ययन ही नहीं करो अपितु एकांत मन से उसमें विदित सत्य बातों/तथ्यों को चिंतन एवं मनन द्वारा विचार में भी लाओ यानि जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उनकी उपयोगिता पर विवेकपूर्वक विचार करते हुए सत्य अन्वेषण का प्रयत्न करो। सजनों जानो एक चिंतक की तरह मन ही मन उसका

बार-बार ध्यानपूर्वक विवेचन करने का अभ्यास करने से आपके मन के विचार तो गूढ़ होंगे ही साथ ही आपकी चिंतन क्षमता यानि विचारशक्ति भी अत्याधिक बढ़ जाएगी। परिणामतः बुद्धि तीक्ष्ण हो परमार्थी बन जाएगी और सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होगी।

इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों सच्चैपातशाह जी कहते हैं कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अध्ययन द्वारा प्राप्त हुए आत्मिक ज्ञान को चिंतन एवं मनन द्वारा विचार में लाने के साथ-साथ, अपनी बुद्धि द्वारा उसका निश्चयात्मक बोध भी करो। ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इस क्रिया को एकाग्रता से करने पर आप द्वारा प्राप्त ज्ञान के सम्बन्ध में मानसिक चित्र बन जाएगा। जानो इसी को ही, समझ-बूझ कर, मन में स्थिर की हुई धारणा कहते हैं, जिससे ख्याल उस धारणा के प्रति ध्यान स्थिर हो जाता है। इस तरह इस क्रिया द्वारा शब्द ब्रह्म विचार आपके मन को भाने लगेंगे यानि उनको अमल में लाने के प्रति रुचि पैदा होगी और शीघ्र ही आदत के रूप में विकसित हो आपकी प्रकृति का अभिन्न अंग बन जाएगी। सजनों एक बार जब यह आदत आपकी प्रकृति का सहज अंग बन गई तो फिर इस क्रिया द्वारा अर्जित सद्-ज्ञान/सद्-विचार जीवन व्यवहार के दौरान प्रयोग में आएंगे और जीवन को दिव्य गुणों से अलंकृत कर, अपार सन्तुष्टि प्रदान करेंगे।

कहने का आशय यह है कि फिर आप उन विचारों अनुकूल सब कुछ न्यायसंगत करते हुए, अपने जीवन का हर निर्णय समझदारी व बुद्धिमत्ता से लोगे और आपके लिए जीवन के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर चलते हुए उन्नति करना सहज हो जाएगा क्योंकि आपका मन-चित्त उन सद्-विचारों में लीन रह सदा स्थिर व प्रसन्न अवस्था में सधा रहेगा। ऐसा होने पर आपके लिए आत्मज्ञान प्राप्त कर उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल होना किसी प्रकार से भी कोई असंभव बात नहीं रहेगी क्योंकि आपके मन में अध्यात्म का भाव इस तरह सुदृढ़ हो जाएगा कि आप सहजता से शरीर में स्थित परमात्मा की सत्ता को जान, आत्मा-परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध स्थापित कर सकोगे। ऐसा शुभ परिणाम प्राप्त होने पर आपके अन्दर स्वतः ही आत्मा और अनात्मा का विवेक जाग्रत होगा और आप आध्यात्मिक विषयों का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर अंत अध्यात्म योगी बन जाओगे। इस भ्रमरहित अवस्था को प्राप्त होने पर सजनों आप स्वयंमेव सर्वत्र व्याप्त एकात्मा मानने का सिद्धान्त अपना लोगे। इस प्रकार जब जीव और ब्रह्म यानि परमात्मा के स्वरूप का वास्तविक बोध कराने वाली अध्यात्म ज्ञान की विद्या को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लोगे तो आपके मन को इस जगत से कुछ भी प्राप्त करना नहीं भाएगा

अपितु वह तो केवल हर क्षण, हर पल परमेश्वर में लीन रह, समर्पित भाव से उनकी आज्ञाओं को विधिवत् समझते व स्वीकारते हुए, परमेश्वर को प्रसन्न कर अपना बना लेगा यानि सत्य-धर्म के रास्ते पर स्थिर बने रह, निष्कामता से जिस कारण को सिद्ध करने हेतु परमेश्वर ने जीव को मानव रूप देकर इस जगत में भेजा है उस कारण को सिद्ध कर अंत अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाएगा।

सारतः सजनों जानो कि एकाग्रचित्तता से उपरोक्त क्रिया को करने पर:-

1. आप सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मिक ज्ञान की उचित ढंग से प्राप्ति कर सकोगे और अपने जीवन उद्धार के उद्देश्य की प्राप्ति को साकार करने के लिए, उस शास्त्र में सहज व सरल भाव से वर्णित सत्य के प्रतीक ब्रह्म विचारों पर गंभीर विचार करते हुए, उनका, अपने वास्तविक जीवन उन्नति के प्रति योग्यता से अनुशीलन करने में समर्थ हो जाओगे और विवेकशील बन जाओगे।

2. प्रभु कृपा से आत्मिक ज्ञान रूपी प्रसाद मिलने पर मनगढ़ंत कल्पित सांसारिक ज्ञान से विकलित आपके मन के सभी मनोरथ सिद्ध हो जाएंगे और आप पूर्णतया उद्वेग रहित हो आत्मतुष्ट हो जाओगे।

3. इस तरह आप चेतनायुक्त हो आत्मस्मृति में आ जाओगे और मानसिक रूप से स्वस्थ और शक्तिशाली हो यानि अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखते हुए, इस जगत में निष्पाप विचरने के योग्य बन 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो जाओगे।

4. आपके मन में प्रभु संग घनेरी प्रीत पनपेगी और आपका ख्याल व ध्यान जगत की कल्पना से रहित हो प्रभु में स्थिर हो जाएगा। परिणामतः आप हर दम अपने सच्चे घर में स्थित रहते हुए निज आत्मस्वरूप में स्थित हो जाओगे और कदाचित् किसी प्रकार भी शारीरिक-मानसिक पाप करने की ओर प्रवृत्त नहीं होंगे। इस तरह आप पवित्र मन/हृदय वाला पवित्रात्मा इंसान बन जाओगे।

5. आपका अंतःकरण यानि मन सहित बुद्धि, अहंकार और चित्त सब निर्मल दशा को प्राप्त हो जाएंगे और जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन हो जाएगी। परिणामतः अंतर्दृष्टि खुल जाएगी और आत्मस्वरूप का साक्षात्कार होने पर शाश्वत सत्य प्रकट हो जाएगा। इस तरह तीनों तापों का रोग मिट जाएगा और अक्षय आनन्द व शांति की प्राप्ति होगी।

6. आपका आत्म व मनोबल इतना बढ़ जाएगा कि जीवन का कठिन से कठिन कार्य आत्मीयता के बल पर सफलता से करने के योग्य बन जाओगे।

7. मन संकल्प रहित हो प्रभु में लीन हो जाएगा और सुरत शब्द का योग होने पर आप इतने शक्तिशाली व ज्ञानवान बन जाओगे कि आपकी जीवन यात्रा सुगम हो जाएगी और आप हर्षा उठोगे।

8. दैनिक क्रियाओं का शांत चित्त व एकाग्रता से निर्वहन कर न केवल आप अपना घर सतयुग बना सकोगे अपितु चिंतामुक्त हो अपने जीवन के परम प्रयोजन यथा परमात्मा का साक्षात्कार कर परमानंद भी प्राप्त कर लोगे।

9. विसूचिका सूचिका बन जाएगी और आपके लिए हर परिस्थिति में समभाव पर स्थित रहते हुए, समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करना सहज हो जाएगा।

10. इस तरह इस क्रिया को सही ढंग से करने पर आपकी सब बुरी चिंताएं मिट जाएँगी, संशय-भ्रम रूपी पिशाच भाग जाएंगे, रोग-सोग-भोग मिट जाएंगे और परमानन्द की प्राप्ति होगी।

11. इस परमानन्द की प्राप्ति के उपरांत आप व्यापक स्तर पर निष्काम भाव से परोपकार की भावना से ओत-प्रोत हो, मानवीय हित के चिंतन का कार्य करते हुए, लोक कल्याण की ओर उन्मुख हो जाओगे व समुच्चय विश्व समुदाय को सही दिशा प्रदान करते हुए श्रेष्ठ मानव नाम कहाओगे।

यह है सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन, मनन व चिंतन करके उसमें विदित विचारों को व्यवहार में लाने की महत्ता। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने ख्याल को प्रभु में लीन कर लो और अपने स्थान को पा लो।

अतः सजनों श्रेष्ठता को प्राप्त करने हेतु इस क्रिया द्वारा इस बदन से खोट निकाल, खालस सोना होने की आवश्यकता को समझो व ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखा अपनी वास्तविक उत्कृष्टता को सिद्ध कर लो। याद रखो ऐसा करने पर ही सत्य के प्रतीक बन अमर पद पा सकोगे और संसारी व परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर जीवन विजयी हो जाओगे।

अंत में सजनों जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को पढ़ने का सही नीति-नियम व क्रियाविधि क्या है?

1. अब सभी सजन प्रार्थना व चरण वंदना करो जी

(सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की प्रार्थना)

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सब तों श्रेष्ठ, सब तों विद्वान, सब तों गुणवान, सब तों बलवान, सब तों धनवान, सब तों बुद्धिमान, सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट कोट प्रणाम।

(श्री रघुनाथ जी की प्रार्थना)

आद् पुरुष, निरंकार, ज्योति स्वरूप, पारब्रह्म परमेश्वर, भक्त वत्सल, श्री रघुनाथ जी महाराज दोनों भुजा पसार कर, धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट कोट प्रणाम।

(चरण वन्दना)

चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार दास सीस धरे चरणों उते, सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

2. अब सब सजन पहले स्टेज पर देखो कि शास्त्र का प्रकाश कैसे करना है और फिर शास्त्र का प्रकाश करो जी।

3. अब हम सब मिलकर सात बार साडा है सजन राम, राम है कुल जहान बोलते हैं।

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

4. अब दो बार बोलो जी

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी
धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी

श्री साजन जी का जीवन चरित्र--दिव्य लीला

5. अब ख्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल कर अफुरता से बताई जा रही लय अनुसार शास्त्र को पढ़ना आरम्भ करते हैं। आप इस क्रिया को ठीक से कर सको इस हेतु आपने पहले जिस लय में स्टेज से सजन ग्रन्थ के प्रथम सोपान के पहले भजन से पढ़ना आरम्भ करेंगे, उसी लय में आपने उनके पीछे-पीछे उसे दोहराना है। इसी तरह सजनों जब एक भजन पूरा हो जाएगा तो स्टेज वाले व आप सजन एक साथ उस भजन को भावयुक्त होकर पढ़ेंगे। चलिए अब पढ़ना आरम्भ करते हैं:-

भजन न० 1

आओ भज भज के आओ सज धज के,
दर्शन पावां महाबीर रघुनाथ जी दा रज रज के।
महाबीर जी देओ मैंनूं दीदार, सांवले चरणां नाल प्यार।
जावां चरणां तों बलिहार, दर्शन दिखा दिओ रज के॥३
जी मैं बिस्तरा खूब बिछावां, उते सियाराम लषण नूं बहलावां।
सांवले चरणां दा चरनामृत, पिला दिओ रज रज के॥
खोलो मस्तक दी ताकी, दिखा दिओ रघुनाथ जी दी झांकी।
मिला दिओ मैंनूं तुसी अविनाशी, दर्शन दिखाओ रज के॥
खोलो मस्तक दी बारी, मिला दिओ रघुनाथ बिहारी।
जावां चरणां तों बलिहारी, दर्शन दिखा दिओ रज के॥
मैं दासी खड़ी उदासी, दर्शन दिखाओ मेरे अविनाशी।
तेरे दर्शन दी प्यासी, दर्शन दिखाओ रज के॥

भजन न० 2

रंगन वालिया रंगीला सोहणा रंग रंग दे,
ऐसा रंग रंगीला रंगीं लोकी दंग कर दे।
रंग रंगाया ध्रुव प्रहलाद, दर्शन दिता ए महाराज।
उन्हां दे सिर ते रखया ताज, ओहो रंग रंग दे॥
सुदामा द्वारका विच जावे, कृष्ण चरणां दी धूरि उड़ावे।
वस्त्र आप बैठ पहनावे, ओहो रंग रंग दे॥
रंग रंगाया धन्ने जट, रघुनाथ जी आ गये झट पट।
होये पत्थरों प्रगट, ओहो रंग रंग दे॥
रंग रंगाया मीरांबाई, प्रीति चरणां विच लगाई।
दर्शन दिता ए रघुराई, ओहो रंग रंग दे।
रंग रंगाया श्री हनुमान, उन्हां नू मिल गये श्री भगवान॥
अपने चरणां विच बिठान, ओहो रंग रंग दे॥
सुग्रीव विभीषण रंग रंगाया, महाबीर जी ने उन्हां नू मन्त्र सिखाया।
रघुनाथ जी ने राज तिलक दिलवाया, ओहो रंग रंग दे॥
दासी नू ओहो रंग रंगा दे, प्रेम भक्ति अपनी सिखला दे।
प्रीति चरणां विच बढा दे, ओहो रंग रंग दे॥

भजन न० 3

उपमा कही न जाए महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
उपमा कही न जाए, उपमा कही न जाए॥
अंजनी माता पर्ई हर्षावे, जिस लाल महाबीर पाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए॥
राम लक्ष्मण को मिलने आये, ब्राह्मण रूप बनाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए॥

राम लक्ष्मण नूं मोंढियां ते चाके, सुग्रीव नूं जाके मिलाये,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥
 लंघ समुद्र लंका नूं जावन, विभीषण नूं मन्त्र सिखाये,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥
 सीता माता पर्ई घबरावे, मुन्दरी जाए दिखाए,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥
 बाग उजाड़ लंका नूं साड़यो, राक्षस मार गिराए,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥
 माता जी दा चूड़ामणि लिया के, रघुनाथ जी नूं सन्देशा पहुंचाये,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥
 ऋषि मुनि उपमा कर नहीं सकदे, रघुनाथ जी वी दिल में हर्षाये,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥
 मैं दासी तुहाडे चरणां दी चाकर, ऋषि मुनि गुण गाये,
 महाबीर जी दी उपमा कही न जाए, महाबीर जी दी उपमा कही न जाए ॥

भजन न० 4

सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी ।
 काम क्रोध हैं दुश्मन भारी, इनको मार मुकाओ महाबीर जी ।
 शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, नारद जी वी बीन बजावे महाबीर जी ।
 शेष गणेश तुहाडा हर जस गावे, इन्द्र वी दिल विच हर्षावे महाबीर जी ।
 तुलसी दास तुहाडा ध्यान लगावे, विभीषण नूं अमर बनाया महाबीर जी ।
 लंका जीत अयोध्या नूं आवन, भरत नूं राम मिलाया महाबीर जी ।
 दिन रात भैणों तुसीं नाम ध्यावो, गदा महाबीर जी दा हृदय विच वसाओ ।
 दुष्टां नूं मार मुकाया महाबीर जी, सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी ।
 मैं दासी नूं समदृष्टि कर देओ, भवसागर से पार उतारो महाबीर जी ।
 सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी ।

सजनों क्या सबको इस तरीके से ग्रन्थ पढ़कर अच्छा लगा है?

'हाँ जी' ।

तो जानो कि जब आप समझदारी से इस ग्रन्थ को पढ़ोगे तो और भी अच्छा लगने लगेगा क्योंकि तब समझ आने लगेगा कि हम क्या पढ़ रहे हैं। सजनों ग्रन्थ को पढ़ने का जो सही ढंग है उसके अन्तर्गत भजन/कीर्तन पढ़ते समय समझना होता है कि इस भजन/कीर्तन में मुख्यतः अपनाने योग्य सन्देश क्या है। उस सन्देश को जानने के पश्चात उसे अपनाना होता है।

जैसे कि जो पहला भजन हमने पढ़ा है उसमें दासी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे प्रार्थना करती है कि हे दाता! हमारे मस्तक की ताकी खोल दो ताकि हमें आत्मिकज्ञान प्राप्त होना आरम्भ हो जाये। इस आत्मिक ज्ञान के हृदय में उतरने से हम सुचेत बुद्धि हो जायें और हमारी बुद्धि तीक्ष्ण होकर सत्य की पारखी बन जाये यानि उसे





सच-झूठ का भेद पता चल जाये। फिर आगामी भजनों में प्रार्थना की गई कि हे महाबीर जी! आत्मपद की प्राप्ति के लिए न केवल हमें आत्मिक ज्ञान दो अपितु उस ज्ञान का विधिवत् प्रयोग करने की युक्ति भी दो यानि हमें समदृष्टि कर दो ताकि हम एक-रूप होकर इस जगत में 'खुद हूँ मैं आप भगवान' के भाव से विचर सकें। इस तरह हमारी समदृष्टि हो जाये और हमारी दृष्टि में कोई दूसरा नज़र न आये यानि हम जिधर भी देखें आप ही आप, आप ही आप नज़र आयें। सजनों यकीन मानो कि अगर हमारे जीवन जीने का नजरिया ऐसा हो जाता है तो हम श्रेष्ठ मानव बन सकते हैं।

इस तरह सजनों इन भजन/कीर्तनों को समझते हुए पढ़ो। ऐसा करने से जैसे-जैसे आपको इनमें विदित अर्थ की समझ आती जायेगी और लगने लगेगा कि हम उन्नति-पथ पर प्रशस्त हो रहे हैं तो उतना ही आपके अन्दर इसमें विदित आत्मिकज्ञान को जानने के प्रति उत्साह व दिलचस्पी बढ़ती जायेगी। दिलचस्पी बढ़ती गई तो सजनों समझ लेना आप सफल होने वाले हो। इस सन्दर्भ में निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि अगर थोड़ा सा ही पुरुषार्थ दिखाने से व खबरदार रहने से आप युक्ति को मज़बूती से पकड़ लेते हो तो आप अवश्यमेव सफल हो सकते हो।

6. अब सब सजन स्टेज की तरफ देखें और जैसे वे सजन शास्त्र पढ़ने के उपरांत शास्त्र को रुमाले से ढक रहे हैं आपने भी ठीक वैसे ही करना है।

7. अब आरती की थाली हाथ में ले लो जी। आरती की थाली में रखी जोत को प्रज्वलित करने के साथ-साथ धूप को भी जगाओ। धूप के थोड़ा जगने पर उसे शांत कर दो। अब अति प्रेमपूर्वक सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के आगे आरती की थाली लेकर खड़े हो जाओ और रघुवंशमणि जी की आरती बोलो।

ध्यान रहे आरती की थाली दोनों हाथ से पकड़ कर धीरे-धीरे बाएँ से दाएँ घुमानी है व स्पष्टता से आरती बोलनी है। सजनों याद रखो यह क्रिया परम अर्थ साधने हेतु ब्रह्म भाव युक्त होकर एक भाव से करनी है ताकि परमेश्वर आपकी आर्त वाणी सुनकर प्रसन्न हो जाएँ और आपकी सुरत को सहर्ष अपना लें।

आरती रघुवंशमणि जी की

सजनों सुनो आरती किवें न करूँ, सजनों सुनो आरती किवें न करूँ
रघुवंशमणि श्री राम रघुराई, आरती किवें न करूँ,
आहा श्याम सुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूँ।
किवें न करूँ, आरती किवें न करूँ
आहा श्याम सुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूँ।

आरती करन महाराज जी दे प्यारे
महाराज जी अपने प्यारियां नूं भवसागर पार उतारे
भवसागर ओ पार उतारे, आरती किवें न करूँ,
किवें न करूँ, ओ आरती किवें न करूँ
रघुवंशमणि श्री राम रघुराई, आरती किवें न करूँ।
श्याम सुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूँ।

कई कई महाराज जी दिखा रहे ओ नज़ारे।
महाराज जी तुसां हो भक्तां दे सहारे।
कई प्यारे महाराज जी तुसां ने ओ तारे।
सजनां नूं एक निगाह एक दृष्टि दिखाई, आरती किवें न करूँ।
किवें न करूँ, ओ आरती किवें न करूँ
रघुवंशमणि श्री राम रघुराई, आरती किवें न करूँ।
श्याम सुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूँ।।

ए रचना तुहाडी है सुखदाई,
महाराज जी असां सजनां ने उच्च पदवी पाई,
विराट नगरी सारी, ओहदी है रौशनाई, आरती किवें न करूँ।
किवें न करूँ, ओ आरती किवें न करूँ,
रघुवंशमणि श्री राम रघुराई, आरती किवें न करूँ।
श्याम सुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूँ।।
सजनों सुनो आरती किवें न करूँ।







8. अब आरती की थाली रख दो जी और चरण वन्दना करते हुए जयकारे बोलो ।

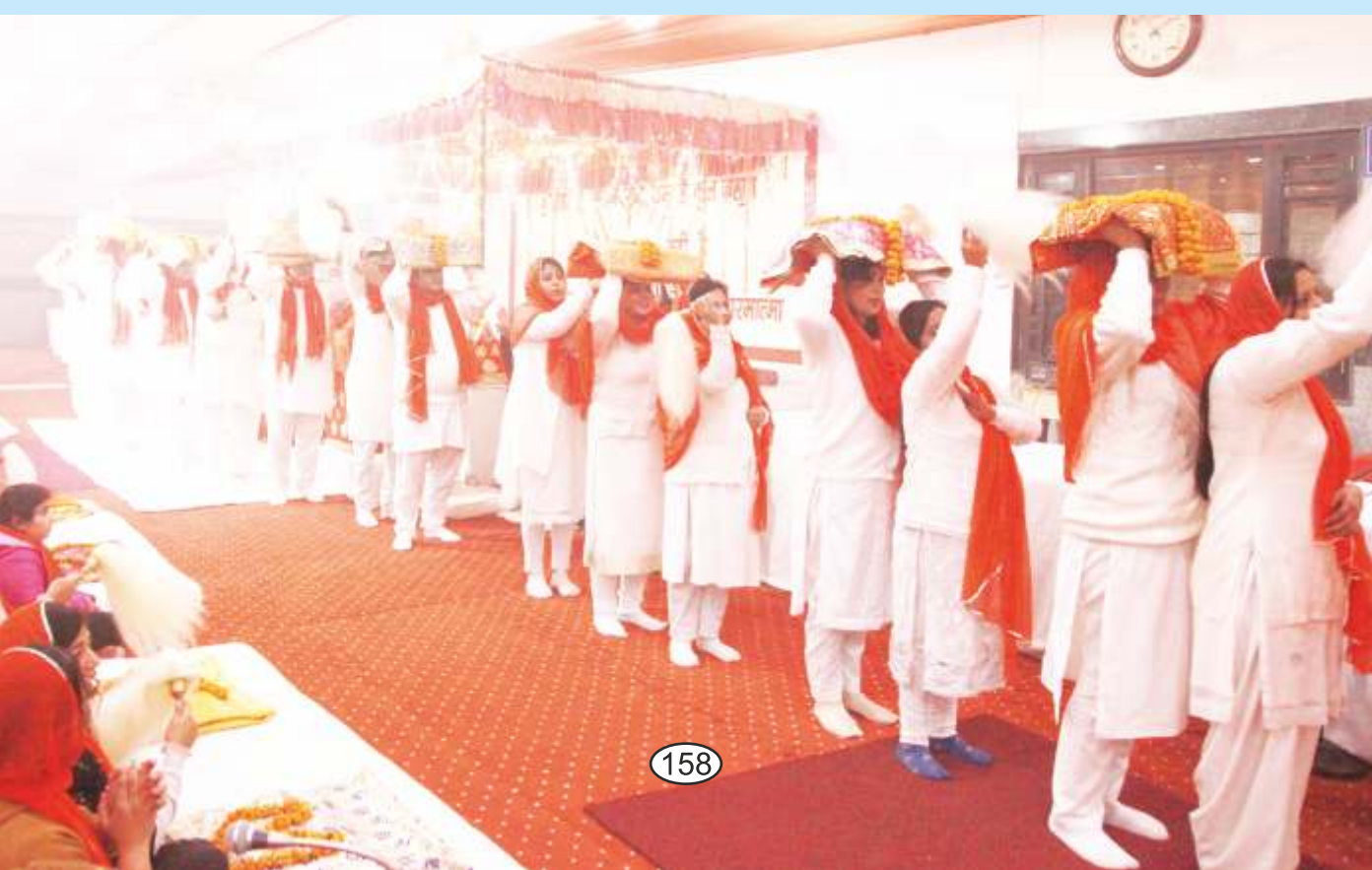
चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार
सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते, सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ ।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय
सजन उमापति महादेव जी की जय
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय
बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

9. शास्त्र का भोग डालने हेतु अब सब स्टेज पर देखो और तदनुसार शास्त्र को रूमाले में ठीक से लपेट कर ऊपर रूमाला कर सामने यथास्थान रख दो ।

यह है सजनों घर पर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को पढ़ने का सही नीति-नियम व क्रियाविधि । इस संदर्भ में हम सब से प्रार्थना करते हैं कि श्रेष्ठ मानव बनने के निमित्त इस क्रिया अनुसार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को नियमित रूप से पढ़ना आरम्भ करने में कदाचित् विलम्ब मत करना और इस प्रकार यह हितकर कहना मान व आत्मिक ज्ञानी बन कुदरत के इस जगतीय खेल की रमज जान जाना । हाँ, ऐसा सुनिश्चित कर, अपनी जीवन यात्रा सहज, सरल व सुगम बना वास्तविक जीवन के आनन्द का अनुभव करते हुए इसी जीवन में आत्मोद्धार कर विश्राम को पा जाना ।





Afternoon Session

2:00 pm







Evening Session

6:00 pm









HUMANITY FEST 2019

day THREE | तृतीय दिवस



Morning Session

10:00 am



ध्यान-कक्ष यह ध्यान कक्ष

ध्यान-कक्ष यह ध्यान कक्ष,
सब का साँझा ध्यान-कक्ष।
सतयुग की पहचान है यह,
मानवता का स्वाभिमान है यह।।

संतोष धैर्य अपना कर,
सच्चाई धर्म की राह पर।
चलने वालों की शान है यह,
तभी तो सबसे महान है यह।।

ध्यान धरोहर मानव की,
सबसे श्रेष्ठ कहलाती है।
ध्यान से धारणा शक्ति,
ख़्याल को स्वच्छ बनाती है।

ध्यान धर्म की शक्ति धर,
सत्य की पहचान कर।
आत्मिक ज्ञान पाने हेतु,
कुदरत का वरदान है यह।।

ध्यान से है निष्काम रास्ता,
ध्यान से ही है परोपकार।
ध्यान से ही हो जाता है,
समभाव-समदृष्टि का प्रसार।।

ध्यान है चित्त की ग्रहण वृत्ति,
अंतःकरण की जाग्रत स्थिति।
विचार ईश्वर है अपना आप,
हटे सब फुरने और संताप।।

ध्यान ही बल, बुद्धि और ज्ञान,
यही सतवस्तु की पहचान।
ध्यान स्थिर ही है दिव्य दृष्टि,
फिर निर्मल वृत्ति और स्मृति।।

ध्यान स्थिर तो बुद्धि सुचेत,
फिर विचार उसमें करे प्रवेश।
फिर जो करे या करवाए,
मानो वह ईश्वर का आदेश।।

जीवन एक यज्ञ

सजनों आपको यहाँ कैसा लग रहा है?

‘बहुत अच्छा’।

बहुत अच्छा लगने का एक ही कारण है और वह है यहाँ का सकारात्मक वातावरण। यह सकारात्मकता आपको यहाँ से साथ लेकर जानी है यानि यह सकारात्मकता आपकी सोच में हो, यही वाणी में हो और यही कर्म में हो। इस सन्दर्भ में हम मानते हैं कि वर्तमान परिवेश में यह कठिन कार्य है क्योंकि नकारात्मकता आपके ख्याल के, स्वभाव के अन्तर्गत हो गयी है। अतः अपने ख्याल को पलटा खवा खुद पर पहरा देना है और खुद को खुद समझाना है कि नकारात्मकता में विचरने से मेरी हानि होती है इसलिए मुझे अपनी हानि नहीं करनी यानि नकारात्मकता में विचरने की गलती नहीं करनी और अपने ख्याल को सकारात्मकता में ढालना है। सजनों यकीन मानो इतनी सी तबदीली करने से आपका पूरा जीवन बदल जायेगा। अतः इस महत्ता के दृष्टिगत आज से और अभी से खुद पर यह पकड़ रखनी आरम्भ कर दो ताकि जीवन यज्ञ निर्विघ्नता से विधिवत् सम्पन्न हो और इस पूर्णता से आपको सम्पूर्णता की प्राप्ति हो जाये। याद रखो जब इन्सान को सम्पूर्णता की प्राप्ति हो जाती है तो उसके अन्दर की सारी काम/कामना शान्त हो जाती है और वह फिर हमारे दिल-दिमाग पर हावी नहीं हो पाती क्योंकि हम आत्मतुष्ट हो धीर व समझदार बन जाते हैं। हमें समझ आ जाती है कि हमें काम के हाथों में नहीं खेलना क्योंकि वह हमें जीवन के सही मार्ग से भटकाने वाला है। अतैव इस बात को समझते हुए सजनों इस बला को टाल दो क्योंकि इस बला

से तबाही आती है यानि यह खुद को खुद तबाह करने की बात है। इसी के कारण इन्सान वासनाओं में फँसकर यानि संसार में आसक्त होकर भ्रमित बुद्धि बन जाता है और सत्य से दूर चला जाता है। इस तरह धीरे-धीरे उसे पता ही नहीं रहता कि सत्य है क्या। कहने का आशय यह है कि कामग्रस्त इन्सान कमज़ोर होता है इसलिए वह अपने जीवन पथ का चयन ठीक से नहीं कर पाता। यही नहीं काम रूपी बला उसे अन्दर तक हिला देती है और इन्सान नकारात्मक भावनाओं से युक्त हो जाता है। चूंकि इससे उसका शारीरिक व मानसिक समूचा ढाँचा हिल जाता है जिससे उसके सिर पर हर वक्त खतरे का भय मण्डराता रहता है। इसी भय के कारण वह कामनापूर्ति के अधीन होकर कदम-कदम पर गलत कृत्य करता है और पकड़े जाने के डर के कारण हर वक्त मरता रहता है। ऐसा आपके साथ न हो इस हेतु सजनों इस काम रूपी बला को टाल दो। इस बला को टालने की युक्ति सिर्फ सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के पास है। अतः उनके सम्मुख सच्चे दिल से प्रार्थना कर उनकी चरण-शरण में आ जाओ और मानवता के प्रतीक बन जाओ। जानो वह दाता ही आपको इस जगत में 'सोऽहम्' भाव से विचरने का तरीका बता सकते हैं और आप उस युक्ति/तरीके का अनुशीलन कर अपने यथार्थ स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए सबसे आत्मीयता अनुरूप सम्पर्क स्थापित कर जीवन विजयी हो सकते हो। इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि इस तरह आत्मीयता अनुरूप विचरने का विशेष गुण जिस व्यक्ति के अन्दर विद्यमान होता है वही अन्त में विशेष मानव बन जाता है। यह जानने के पश्चात सजनों बताओ कि किस-किस के अन्दर विशेष व्यक्ति बनने की उत्कंठा उत्पन्न हुई है?

'सबने हाथ खड़े किये' ।

तो फिर जान लो कि मानव धर्म यही कहता है कि सद्कर्मों से युक्त होकर ऐसे ही विशेष मानव बनो। बताओ कि क्या बनोगे ऐसे मानव?

'हाँ जी' ।

तो बोलो:-

**मानव धर्म जिन्दाबाद
मानव धर्म जिन्दाबाद
मानव धर्म जिन्दाबाद**

मानव धर्म जिन्दाबाद का सजनों अर्थ जानते हो? - इसका अर्थ है कि मानवता हमारे अन्दर सदा जिन्दा रहे यानि किसी भी लोभ-लालच के वश में आकर मानवता का भाव हमारे अन्दर से मरना नहीं चाहिए। सजनों यदि हम यह कार्य सिद्ध कर लेते हैं तो फिर मानवता हमारे हृदय में सदा मज़बूत व आबाद रह सकती है। इसके विपरीत यदि हम इस धर्म से हार जाते हैं यानि किसी भी कामना में उलझ कर यह धर्म छोड़ देते हैं और विपरीत चलन अपना लेते हैं तो बर्बाद हो जाते हैं। आप ही बताओ कि अपनी बर्बादी का कारण आप ही बनना अच्छी बात है?

‘नहीं जी’ ।

तो फिर अपने चलन पर पकड़ रखना और सावधान रहना। कहने का आशय यह है कि कामनाओं में उलझकर कहीं अपना जीवन बर्बाद मत कर बैठना। इस हेतु इसी उम्र से कामना-रहित होकर निष्काम भाव से जीवन जीना सीखना। ऐसा करने से मनुष्यता का भाव आपके अन्दर जाग्रत हो जायेगा और आत्म-विश्वास के साथ एक अनोखी आन-बान व शान से अपने पुण्य कर्मों द्वारा जगत को अचंभित कर दोगे। इस तरह जगत दंग हो जायेगा और हर तरफ से एक ही आवाज़ आयेगी कि इन्सान हो तो ऐसा हो। याद रखो सजनों इस शान से बढ़कर न कोई पद है और न ही यश है। अतः इसको प्राप्त करने हेतु अपने आप को ऊपर उठाओ। नकारात्मक बातें करनी छोड़ दो और जिस सकारात्मकता का इस मानवता फेस्ट में आकर अपने अन्दर निर्माण किया है उस वातावरण को मज़बूती प्रदान करो। याद रखो ऐसा करने से बहुत सुन्दर इन्सान बनकर मानवता के प्रतीक बन जाओगे। अतः इस उपलब्धि के दृष्टिगत आज ही अपने अन्दर इस तबदीली को लाने के प्रति दृढ़-संकल्पी हो जाओ। ऐसा करने पर ही अपनी जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ, दृष्टि कंचन कर एक निगाह, एक दृष्टि होकर एक दर्शन में स्थित हो पाओगे व जीवन यज्ञ अफुरता से सम्पन्न कर अपना यथार्थ सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप पछान पाओगे और ऐसा पुरुषार्थ दिखा जीवन सफल बना पाओगे। अब इसी विषय में ध्यान से सुनो:-

जीवन एक यज्ञ

सजनों आज हम सब सीखने जा रहे हैं यज्ञ/हवन जोकि एक धार्मिक अनुष्ठान है वह क्यों करते हैं, उसका महत्त्व क्या है और उसे करने का सही तरीका क्या है?

इस संदर्भ में आगे बढ़ने से पूर्व आओ सजनों आज सर्वप्रथम जानते हैं कि मानव जीवन भी एक यज्ञ यानि धार्मिक कृत्य है और शंख, चक्र, गदा पद्मधारी भगवान श्री विष्णु यज्ञ पुरुष अर्थात् यज्ञात्मा हैं। व्यक्तिगत कामनाओं/इच्छाओं और आसक्ति की आहुति देकर कर्म फलों को होम करना व आत्मीयता की भावना से युक्त होकर, वैश्विक कल्याण के निमित्त, अपनी प्रतिभा, विद्या, बुद्धि, समृद्धि, सामर्थ्य, तन, मन और धन को परमार्थ प्रयोजन में समर्पित करना, मानव जीवन के इस यज्ञ का सच्चा प्रयोजन है। इस प्रयोजन सिद्धि हेतु सजनों सतत् जाग्रति में रह इस यज्ञ की पूर्ण आहुति के निमित्त अपना सर्वस्व त्यागना, विषम परिस्थितियों में भी यज्ञाग्नि के समान अपनी चारित्रिक प्रखरता बनाए रखना, जीवन भर पुरुषार्थ करते रहना और कर्तव्य पथ से विलग न होना आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों यज्ञ की निर्विघ्न सम्पन्नता में निष्कामता का भी अतुलनीय महत्त्व है क्योंकि फल की आकांक्षा से रहित यज्ञ ही सात्त्विक कहलाता है। इसके विपरीत दंभ आचरण अर्थात् प्रदर्शन व स्वार्थ लाभ के लिए किया गया यज्ञ राजस दोष से युक्त हो जाता है। यह निष्कामता भी सजनों जाग्रति से ही आती है।

सजनों हम सब भी एक यज्ञ कर्ता की तरह इस जीवन यज्ञ को निर्विघ्न सम्पन्न करने के प्रयोजन में सफल हो सकें इस हेतु हमें इस यज्ञ की समुचित क्रियाओं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है ताकि इस यज्ञ में विघ्नकारी राक्षस वृत्तियाँ हमारे अन्दर उत्पन्न न हो जाएं। इस हेतु हमें सर्वप्रथम यज्ञशाला के स्थान हृदय अर्थात् अंतःपुर को विशुद्ध करना है। तत्पश्चात् नेक नीयती व त्याग भावना से युक्त होकर इस धार्मिक कृत्य को पूर्ण जागरूकता से, संकल्प रहित होकर सम्पन्न करना है। आशय यह है कि यज्ञ के दौरान अपने पाप कर्मों के चक्रव्यूह में उलझे रहने के स्थान पर, आत्मीयता के गुणों अनुसार, परमात्म स्वरूप होकर यथार्थ जीवन प्राप्त करने हेतु, यज्ञाग्नि में कर्म फलों को होम कर देना है। याद रखना है कि हमारे कर्म फल ही हमारे इस जीवन यज्ञ के विध्वंसक हैं। अतः इस विध्वंसकारी शक्ति से अपने ख्याल को रक्षित रखने हेतु हमें शब्द ब्रह्म विचार ग्रहण कर, उनका विधिवत् प्रयोग करने की कला में निपुण बनना है। ऐसा करने पर मन में ऐसी प्रलय आ जाएगी जिससे जीवन की समस्त आधि-व्याधियों व सांसारिक इच्छाओं का नाश होगा और ज्योति-स्वरूप अपना आप प्रगट होगा। फलतः जीवन की काया कल्प हो जाएगी, जीवन में निरोगता व नवीनता का उद्भव होगा और अंतःकरण में ऐसा दिव्य, अद्भुत, इलाही व अनूठा यथार्थ स्वरूप उपस्थित हो जाएगा जिसकी सुन्दरता का बखान नहीं हो सकता। यह होगा ख्याल का बाह्य जगत/नश्वरता से नाता

तोड़ अंतर्जगत अर्थात् नित्यता से जा जुड़ना। ऐसा होने पर मनमानी व बनावटी बातों से छुटकारा प्राप्त हो जाएगा और हम सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जैसे गुणों से अलंकृत हो, खालस सोना हो जाएंगे। तब हृदय में व्याप्त यथार्थ परमेश्वर स्वरूप का बोध होगा और यज्ञ की समाप्ति पर हम परमार्थी धन अर्थात् परमपद प्राप्त कर, अमीरों के भी अमीर हो जाएंगे व अजर-अमर कहलाएंगे। सजनों यह है इस धार्मिक कृत्य की सर्वोत्तम उपलब्धि।

इस उपलब्धि हेतु सजनों जीवन की प्रधान नीति और उद्देश्य, जीवन यज्ञ की निर्विघ्न सम्पन्नता हेतु ही निर्धारित करो अन्यथा जीवन का प्रयोजन विफल हो जाएगा। घबराओ नहीं, अपितु विश्वास रखो कि जगत के पालक व रक्षक परमेश्वर जो जगत सेतु हैं, उनके संग बने रहकर, हम सहजता से मृत्यु के चंगुल से मुक्त हो सकते हैं व इस तरह सरलता से आनन्दपूर्वक इस जगत रूपी भवसागर को पार कर सकते हैं। अतः सजनों उस जगत-गुरु के शब्द ब्रह्म विचारों को जानो-समझो व अमल में लाओ। ऐसा सुनिश्चित करने हेतु, तत्क्षण मोह-माया की निद्रा त्याग कर, सचेत व सावधान हो जाओ और इस प्रकार निरंतर जाग्रत अवस्था में बने रह अर्थात् बुद्धि को प्रकाशित रखते हुए, इस अनमोल जीवन यात्रा को सम्पन्न करो।

आओ अब बैहरूनी वृत्ति में किए जाने वाले 'हवन' का उद्देश्य, नीति, युक्ति व महत्ता के विषय में विस्तार से जानते हैं।

'हवन'



जैसा कि सर्वविदित ही है कि यज्ञ एक धार्मिक अनुष्ठान होता है जिसके अंतर्गत सत्य-ज्ञान प्राप्ति हेतु हवन यानि निश्चित विधि-विधान द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ-साथ अपनी आत्मा अर्थात् सुरति को आहुति के रूप में अर्पित करके, शब्द अर्थात् ईश्वर या ब्रह्म में मिलाने का कृत्य किया जाता है। प्रयोजन अनुसार इस हवन को करने की एक निर्धारित विधि होती है परन्तु हवन करने वाले सजनों की योग्यता, सावधानी, मंत्रोच्चारण व क्रिया का ढंग एक समान होता है।

हवन करने का सामान्य उद्देश्य व महत्ता क्या है?

हवन क्रिया एक शुभ व परोपकारी कृत्य है जिसे धर्म-कार्य भी कहते हैं। हवन की क्रिया द्वारा हम अन्दरूनी और बैहरूनी वृत्ति में अफुर अवस्था प्राप्त करने के साथ-साथ ध्यान की स्थिरता द्वारा मानसिक शान्ति भी प्राप्त कर लेते हैं। हवन आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक तीनों तापों से छुटकारा पाने का एक अचूक साधन है क्योंकि इससे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। हवन की प्रज्वलित अग्नि में दी जाने वाली गौ-घृत व औषधियों के मिश्रण की आहुति से निकलने वाला एक परमाणु, सहस्र विषैले परमाणुओं को नष्ट कर देता है। इस प्रकार हवन दूषित वातावरण को शुद्ध करने का एक श्रेष्ठ उपाय है। यही नहीं सूर्यकिरणों से मिले हुए स्वर्ण-तत्व आस-पास के वातावरण को काफी समय तक सुगन्धित और विशुद्ध बनाए रखते हैं जिससे असंख्य प्राणियों का भला होता है।

हवन करते समय सजन की अन्दरूनी वृत्ति कैसी होनी चाहिए?

हवन करते समय सजन की मुकम्मल अफुर अवस्था होनी चाहिए। ध्यान रहे हवन करने वाले सजनों ने अपने ख्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल कर मन्त्रों के अर्थ व भाव के साथ जुड़कर आहुति देनी है व इस तरह अत्यन्त प्रेम से बाहर से सचेत रहते हुए अपने ख्याल को आद् से जोड़े रखना है। यही नहीं हवन-कुण्ड की अग्नि में आहुति देते समय, साथ-साथ अपनी 'हौं-मैं' को भी होम कर देना होता है। हवन इस तरह एकरस करना है कि हवन के मंत्र बोलते समय व आहुति देते समय किसी सजन की भी अन्दरूनी वृत्ति में महाराज जी संग जुड़े रहने की तार न टूटे। याद रखो इस तरह एक भाव होकर आत्मीयता से किया हुआ हवन ही निर्विघ्न सम्पन्न माना जाता है।

हवन करने वाले सजनों की आवश्यक निर्धारित योग्यता क्या है?

1. हवन पर जो सजन बैठते हैं वे आद-अन्त से कंचन होते हैं।
2. इन्हें नीति अनुसार सात दिन के ब्रह्मचर्य व्रत पर बिल्कुल ठीक रहना होता है।
3. इन हवन करने वाले सजनों को युक्ति अनुसार हनुमान चालीसा, गायत्री मन्त्र, शान्ति पाठ शुद्ध ज़बानी याद होना चाहिए।

अब जानते हैं कि हवन के दौरान पालनीय औपचारिक नियम क्या हैं ?

1. हवन करने वाले निश्चित सात सजन सुच्चे मुँह (बिना कुछ खाये पीये) हवन करते हैं।
2. हवन करने वाले सभी सजनों को हवन से पूर्व गुलानारी रंग के सिंदूर का तिलक लगाया जाता है।
3. ये सजन हवन कुंड से एक हाथ की दूरी पर बैठते हैं ताकि आहुति ठीक डलती रहे।
4. हवन की सारी विधि माइक पर बैठा एक अन्य सजन बोलता है। इसी सजन के साथ आवाज़ मिलाकर सातों सजन हवन-कुण्ड में आहुतियाँ देते हैं ताकि आहुति एक साथ दी जाए।
5. हवन की पूरी सामग्री के पैसे हवन पर बैठने वाले सातों सजन मिलकर देते हैं।
6. हवन शुरू होने से लेकर उसकी समाप्ति तक प्रत्येक कार्य के लिए सीधे हाथ का ही इस्तेमाल किया जाता है।
7. हवन के दौरान बिल्कुल सीधे अफुर होकर बैठना होता है।
8. चूंकि हवन बैरुनी वृत्ति का धार्मिक कृत्य है इसलिये मंत्र उच्चारण बिल्कुल शुद्ध होना चाहिए। कोई भी अक्षर व मात्रा अधूरा, अस्पष्ट व अशुद्ध न हो अपितु जो भी बोलना है वह भाव सहित हृदय से बोलो और उसमें प्रसन्नता का भाव झलके। जानो इस प्रकार बैरुनी वृत्ति का कृत्य ठीक होने से अन्दरूनी वृत्ति यानि ख्याल अपने आप मजबूत हो जाता है।

अब जानते हैं कि हवन करते समय क्या सावधानी लेनी होती है -

1. हवन करते समय इधर-उधर नहीं देखना अपितु दृष्टि यानि ध्यान हवन कुंड में से प्रज्ज्वलित हो रही लौ के शिखर पर टिक जाए।

2. हवन के दौरान किसी एक सजन ने दूसरे सजन को अपनी थाली में से सामग्री नहीं देनी।

3. हवन कुण्ड में आहुति डालने से पूर्व सामग्री को अंदाज़े से तीन भागों में बाँट लेना है। इन में से प्रत्येक भाग में से सात आहुतियाँ मन्त्रोच्चारण के साथ हवन कुण्ड में डालनी हैं। इस तरह आहुति द्वारा सामग्री का सम भाग हवन कुण्ड में जाएगा और हवन समाप्ति पर एक तो इकट्ठी ढेर सामग्री हवनकुण्ड में डालने से उठने वाले अनावश्यक धुएँ से बच जाओगे दूसरा हवनकुण्ड में अग्नि बुझने का खतरा भी नहीं रहेगा।

4. याद रहे सामग्री का जो भाग आहुति डालने के लिए हाथ में लिया जाए उस भाग को पूरा का पूरा ईमानदारी से हवनकुण्ड में डालना है यानि हाथ में ली हुई सामग्री इधर-उधर नहीं गिरनी चाहिए क्योंकि जो चीज़ हमें जितनी मात्रा में, जहाँ पहुँचाने के लिए मिली है, उसे अमानत समझ कर, यथास्थान उतनी ही मात्रा में वहाँ पहुँचाना हमारा धर्म है। यदि हम असावधानीवश उसे इधर-उधर गिरा देते हैं तो वह अधर्म कहलाता है।

5. हवन को जलाने के लिए प्रयुक्त होने वाली माचिस की तीली को कभी भी हवनकुण्ड में नहीं डालना चाहिए।

अब हवन के दौरान होने वाली प्रत्येक क्रियाविधि की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ उसको करने का समुचित ढंग व तात्पर्य जानो:-

1. चंदोवा- हवन कुण्ड के ऊपर गुलानारी रंग का चंदोवा लगाया जाता है ताकि आकाश मार्ग से आने वाली कोई भी वस्तु या द्रव्य हवन-कुण्ड की पवित्रता को भंग न कर दे।

2. सफ़ाई- हवन-स्थान की स्वच्छता व पवित्रता बनाने हेतु जहाँ हवन करना होता है, उस स्थान की हवन-कुण्ड रखने से पहले अच्छी तरह से नाम-अक्षर चलाते हुए सफ़ाई की जाती है।

3. धूप- हवन करने से पूर्व की आरम्भिक विधि बोलने के पश्चात् हवन-कुण्ड के बाहर चारों कोनों में धूप जलाई जाती है। धूप के थोड़ा जल जाने के पश्चात् उसकी लौ को हाथ से बुझा कर शान्त कर देते हैं ताकि हवन समाप्ति तक उससे निकलने वाले धुएँ व सुगन्धि से हवन-कुण्ड के चारों ओर का वातावरण कीट-पतंगों जैसे मक्खी-मच्छर इत्यादि की पहुँच से विमुक्त बना रहे यानि हवन के दौरान उन्हें हवन-कुण्ड में प्रवेश का

मार्ग न मिल सके।

इस महत्ता के दृष्टिगत धूप का आकार थोड़ा लम्बा व मोटा बनाया जाता है ताकि एक तो हवन समाप्त होने तक उसका प्रभाव हवन कुण्ड के चारों तरफ बना रहे और दूसरा वह इस दौरान देर तक बिना गिरे सीधी जगती रहे। इसके लिए धूप को बीच में से थोड़ा वल कर तथा ऊपर से उसकी चोंच निकालने के पश्चात नीचे से सपाट कर देते हैं।

4. नारियल की टूँठी में मुश्क कपूर रखना- धूप जलाने के पश्चात् नारियल की टूँठी में थोड़ा सा मुश्क कपूर हवनकुण्ड के भीतर चारों कोनों में खुली-खुली सटाई लकड़ियों की सहायता से मध्य में रखा जाता है। इसका लाभ यह होता है कि एक तो मुश्क-कपूर की सहायता से हवन की लकड़ियाँ जल्दी आग पकड़ लेती हैं तथा पूरी जलती हैं और दूसरा नारियल की टूँठी की मदद से हवन की अग्नि हवन-कुण्ड में फैलने की बजाय लौ के रूप में सीधा ऊपर जाती है।

5. लकड़ियाँ लगाना- हवन में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी आम की होती है तथा प्रयोग में लाने से पहले उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लेते हैं। पेड़ से कटी हुई सूखी लकड़ियाँ हवन के लिए उपयुक्त होती हैं। हवन करने से पूर्व जाँच लेते हैं कि इन लकड़ियों में कोई कील व कीड़ा इत्यादि न लगा हो। हवनकुण्ड में लकड़ियाँ खुली-खुली रखी जाती हैं। इससे अग्नि ठीक से प्रज्ज्वलित होती है।

6. अग्नि प्रज्ज्वलित करना- हवन का पूर्वतः ठीक प्रबन्ध करके सातों में से एक सजन जो घी की आहुति देता है वह अग्नि प्रज्ज्वलित करता है। हवन प्रज्ज्वलित करने से पूर्व हवन-कुण्ड में रखी लकड़ियों पर थोड़ा घी डाल दिया जाता है। हवन प्रज्ज्वलित करने वाला सजन हवन के दौरान आवश्यकतानुसार लकड़ियाँ हवनकुण्ड में डालता रहता है।

अब जानो कि क्रमानुसार हवन करने की शास्त्रविहित विधि क्या है:-

1. सर्वप्रथम हवन करने वाले निश्चित सजन हवन कुण्ड के चारों ओर यथास्थान बैठ कर मन में प्रार्थना करते हैं।
2. फिर पांच जयकारे लगाने और सात बार 'साडा है सजन राम राम है कुल जहान' करने के पश्चात निम्न कीर्तन पूरा बोलते हैं:--

नी में धो के पीवां हनुमान जी दे चरण

3. तत्पश्चात् हवनकुण्ड के चारों कोनों में धूप जगाते हैं तथा थोड़ी जग जाने के पश्चात् लौ हाथ से बुझा देते हैं। वह सजन जिसके आगे घी और नारियल पड़े होते हैं, वह हवन कुंड में आम की लकड़ी के साथ हवन प्रज्ज्वलित करता है और यह ध्यान रखते हुए कि अग्नि प्रज्ज्वलित रहे, लकड़ियां डालता रहता है।

4. हवन कुंड में सबसे पहले नीचे नारियल की टूटी में मुश्क कपूर रखकर उसके चारों तरफ लकड़ियां रखकर जिन पर थोड़ा सा घी डाल लेना है, अग्नि प्रज्ज्वलित करनी है। जिस सजन ने अग्नि प्रज्ज्वलित की है वह मंत्रोच्चारण के साथ-साथ घी की आहुति डालेगा और बाकी छह सजन आहुति की सामग्री डालेंगे। हवन करने की विधि जानने से पूर्व आहुति कैसे डालनी है इस विषय में भी जान लेते हैं:-

5. आहुति:- हवन करने वाले सात सजनों में से छः सजन निर्धारित मन्त्रों के साथ सामग्री की आहुति देते हैं और एक सजन घी की आहुति देता है। सामग्री की आहुति देने वाले सजनों को हर मन्त्र का उच्चारण शुरू होने से पूर्व सीधे हाथ में उँगलियों के मध्य हवन सामग्री ले लेनी चाहिए ताकि सामग्री के जिस भाग की आहुति देनी है वह अलग हाथ में आ जाए और फिर मंत्रोच्चारण की जो क्रिया या कर्म हम कर रहे हैं, उसका सारा प्रभाव उस समर्पित होने वाले भाग में चला जाए। स्पष्ट है हर मंत्र का ओ३म् स्वाहा से पूर्व बुलने वाला उच्चारण कर्म या क्रिया कहलाता है जैसे:-

‘सुहंग पवन नन्दनाय नमः’ यह भाग क्रिया या कर्म है।

इससे बाद का मंत्रोच्चारण का ‘ओ३म्-स्वाहा’ भाग धर्म कहलाता है।

इसलिए जैसे ही ओ३म् अक्षर का उच्चारण आरम्भ हो वैसे ही हमारा हाथ तथा हाथ के साथ हमारा ख्याल धर्म-कार्य के लिए अपनी आहुति समर्पित करने हेतु इष्ट यानि भगवान की तरफ बढ़ता जाए यानि ‘हथ कार वल और चित्त यार वल’। स्वाहा के साथ आहुति समर्पित करते ही अन्दर से ख्याल और बाहर से हाथ खाली हो जाए यानि वृत्ति पूरी तरह से उस इष्ट के ध्यान में ठहर जाए। मन्त्र के इस भाग का उच्चारण बड़ी ही शुद्धता और धैर्य के साथ बोलकर किया जाना चाहिए क्योंकि यह उच्चारण धैर्य के साथ जितना शुद्ध और स्पष्ट बोलकर किया जाता है, उतना ही व्यक्ति को धर्मार्थ समझ आता है।

6. फिर सातों सजन निम्नलिखित मंत्रोच्चारण के साथ-साथ नीचे लिखी आहुतियाँ हवन कुंड में डालते हुए हवन करेंगे।

क) सुहंग पवन नन्दनाये नमः..... ओ३म् स्वाहा ।

अर्थात् प्राण रूपी पवन नन्द नायक को नमस्कार । हे ओ३म् (नामक भगवान) मेरा नमस्कार फलीभूत हो ।

ख) श्री हनुमान चालीसा पूरा बोलकर....ओ३म् स्वाहा के साथ आहुति देनी है ।

अर्थात् जो महावीर जी सबसे श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, धनवान, बुद्धिमान, व सारी दुनियां में ज्ञानवान हैं उन महावीर जी के गुणों का स्मरण व गुणगान करते हुए उनसे बल, बुद्धि और ज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना करनी है ।

**ग) ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।
.... ओ३म् स्वाहा ।**

अर्थात् हे प्राणदाता, दुःखहर्ता, सर्वव्यापक, आनन्द के देने वाले प्रभु ! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं । हम आपके उस सर्वशक्तिमान उपासना करने योग्य शुद्ध तेज स्वरूप का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है । हे प्रभु ! आपसे हमारी बुद्धि कभी भी विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों में सदा प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सब बुरे कर्मों से अलग करके शुभ कर्मों की ओर सदा प्रेरित करें । हमारी यही प्रार्थना है ।

ध्यान रहे, मंत्रोच्चारण शुरू होने से पहले सब सजनों ने आहुति सीधे हाथ में उंगलियों के मध्य ले लेनी है । मंत्रोच्चारण के दौरान यह आहुति हाथ में ही रहे । ओ३म् स्वाहा बोलते ही आहुति एक साथ हवन कुंड में डालनी है । इस का अभ्यास पहले से ही करके रखना है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक हनुमान चालीसे की आहुति के साथ एक नारियल भी डालना है । याद रहे हवन के दौरान क्रमशः प्रत्येक मंत्र की आहुति सात बार दी जाती है । ऐसा इसलिए क्योंकि सात का अंक पूर्णता का प्रतीक माना गया है ।

7. हवन की समाप्ति पर बची हुई सामग्री थोड़ी-थोड़ी करके हवन कुंड में डाल देनी है ।

8. तत्पश्चात् शान्ति पाठ सातों सजन मिलकर बोलेंगे ।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा
मा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म् ।

अर्थात् हे सर्वशक्तिमान प्रभु ! आकाश एवं अन्तरिक्ष में शान्ति ही शान्ति हो। जल और थल में शान्ति हो। औषधियों और वनस्पतियों में शान्ति हो। ईश्वर के द्वारा बनाये गए सभी रूप हमारे लिए शान्तिदायक हों। ब्रह्मा की बनाई हुई सृष्टि में शान्ति हो। संसार में चारों तरफ शान्ति ही शान्ति हो। शान्ति भी शान्तिमय हो। हे परमात्मा ! मुझे ऐसी ही शान्ति प्रदान करो, यही मेरी मंगल कामना है।

याद रखो शान्ति पाठ बोलते समय जिस वक्त शान्ति शब्द बोलना है, तो उस समय महसूस करना है कि शांति हमारे शरीर के अन्दर रोम-रोम, रग-रग में उतर रही है। इस प्रकार बैहरुनी वृत्ति में शान्ति बोलने के साथ साथ शान्ति कंठ में से अन्दर हृदय की ओर जाएगी, फिर वहाँ से उदर में फैलकर वहीं समा जाएगी। उदर में शान्ति के समाने से मन मस्तिष्क अपने आप शान्त हो जाएगा। याद रहे शांति तत्व की व्यवस्था कुदरत ने इस प्रकार से हमारे शरीर के अन्दर निहित की हुई है, जो पाँच विकारों को शांत रखने में अपने आप में पूर्णतया सक्षम है। इस अभ्यास से इस तत्व का भरपूर इस्तेमाल करना सीखो।

9. चरण-शरण समाप्ति पर मन में करनी है।

10. **लस्सी के फेरे-** हवन की समाप्ति पर हवनकुण्ड की अग्नि शांत करने के लिए हवनकुण्ड के चारों ओर कच्ची लस्सी के फेरों से उसे शांत किया जाता है। यह क्रिया हवन करने वाला हर सजन कच्ची लस्सी का जग बाँँ हाथ में पकड़ कर सीधे हाथ से (जिस प्रकार मन्त्रों की आहुति देते हैं उसी प्रकार) लस्सी को जमीन पर गिराते हुए तथा मन में शब्द चलाते हुए हवनकुण्ड के दाहिनी ओर से एक-एक चक्कर लगाते हुए करता है।

11. परिक्रमा के पश्चात् यानि हवन की समाप्ति पर निम्न पांच जयकारे बोले जाते हैं:

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

12. फिर यह सजन अपनी जगह बैठकर 'मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई' की ध्वनि बोलते हैं।

13. यज्ञ तप पर हवन की समाप्ति के पश्चात आरती होती है। यह आरती हवन करने वाले सजन हवन कुंड के पास बैठ कर बोलते हैं।

आओ अब शास्त्रविहित् क्रमानुसार हवन करते हुए उसको सही तरीके से करने की क्रियाविधि जानते हैं:-

1. सारे सजन यथास्थान बैठ कर मन में प्रार्थना करो जी।

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सब तों श्रेष्ठ, सब तों विद्वान, सब तों गुणवान, सब तों बलवान, सब तों धनवान, सब तों बुद्धिमान, सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट-कोट प्रणाम।

आद् पुरुष, निरंकार, ज्योति-स्वरूप, पारब्रह्म-परमेश्वर, भक्त-वत्सल श्री रघुनाथ जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट-कोट प्रणाम।

चरण-शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार सजन दास सीस धरे चरणां उते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

2. अब पांच जयकारे लगाओ जी

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय।
बोल सजन दयालु श्री रामचन्द्र महाराज जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।

बोल सजन बाबे गुरुनानक देव जी की जय
बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

3. अब सात बार 'साडा है सजन राम,राम है कुल जहान" बोलो:-

'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"
'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"
'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"
'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"
'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"
'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"
'साडा है सजन राम, राम है कुल जहान"

4. अब हम बोलेंगे

नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण
नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण, धो-धो के पीवां हनुमान जी दे चरण
हनुमान जी दे चरण, रघुनाथ जी दे चरण
बलधारी दे चरण, गदाधारी दे चरण
नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण.....॥

दाता तेरी शरण प्रीतम तेरी शरण
साडी भुख त्रेह मिटे नाले मिटे भर्म
नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण.....॥

तुहीं - तुहीं दाता सब जग माहीं
साडे हटे संशय नाले मिटे कर्म
नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण.....॥

सब विच व्यापक सबनी थाई
दास धारो धर्म पकड़ो सांवले चरण
नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण.....॥

5. अब समय है हवन-कुंड में अग्नि प्रज्ज्वलित करने का। अतः

क) इस हेतु सर्वप्रथम सामने पड़ी पाँच धूपों में से चार धूपें जगाओ जी व थोड़ी जग जाने के पश्चात् उनकी लौ हाथ से बुझा कर चारों कोनों में लगा दो।

ख) अब वह सजन जिसके आगे घी पड़ा है, वह हवन कुंड में नीचे नारियल की टूठी में मुश्क कपूर रखकर उसके चारों तरफ थोड़ी लकड़ियां लगाए।

ग) लकड़ियां ठीक से सेट होने पर पाँचवी धूप जगाकर उससे हवन प्रज्ज्वलित करो।

घ) थोड़ी लकड़ियाँ और लगाओ और उन पर थोड़ा सा घी डाल दो ताकि हवन ठीक से प्रज्ज्वलित हो जाए और अग्नि शिखा उबर आए।

6. अब जिस सजन ने अग्नि प्रज्ज्वलित की है वह मंत्रोच्चारण के साथ हवनकुंड में घी की आहुति डालेगा और बाकी छह सजन सामग्री की आहुति डालेंगे।

7. अतः सामग्री की आहुति देने वाले सजन सीधे हाथ में उँगलियों के मध्य हवन सामग्री ले लो व घी वाला सजन कलछी में घी ले ले। मंत्रोच्चारण के दौरान यह आहुति हाथ में ही रहे। जैसे ही ओ३म् बुलने लगे वैसे ही हाथ आगे हवन कुंड की ओर बढ़ाना है और स्वाहा बुलते ही आहुति एक साथ हवन कुंड में डाल देनी है।

8.

क) सुहंग पवन नन्दनाये नमः..... ओ३म् स्वाहा। (सात बार)

घी वाला सजन इन सातों आहुतियों के पश्चात् पास पड़ी लक्कड़ में से एक-दो लक्कड़ हवन कुंड में डाले और फिर आहुति हाथ में ले ले। बाकी सजन भी सामग्री की आहुति हाथ में ले लें।

ख) श्री हनुमान चालीसा पूरा बोलकर..... ओ३म् स्वाहा। (सात बार)

घी वाला सजन पास पड़ी लक्कड़ों में से प्रत्येक चालीसे की आहुति के पश्चात् एक-दो लक्कड़ हवन कुंड में डाले। फिर आहुति हाथ में ले ले। बाकी सजन भी सामग्री की आहुति हाथ में ले लें।

(सातवें चालीसे के बाद)

घी वाला सजन पास पड़े नारियल को घी में ध्यान से डुबो कर या कलछी से नारियल के ऊपर घी डालकर उसे हवन कुंड में डाले। फिर आहुति हाथ में ले ले। बाकी सजन भी सामग्री की आहुति हाथ में ले लें।

ग) ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।....

ओ३म् स्वाहा । (सात बार)

7. अब सारी बची हुई सामग्री थोड़ी-थोड़ी करके हवन कुंड में डाल दो। चारों कोनों में लगी धूपों के शेषांश को भी हवन कुंड में डाल दो।

8. अब सीधे बैठ जाओ और शान्ति पाठ सारे सजन मिलकर बोलो।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म् ।

9. अब चरण-शरण बोलेंगे।

चरण-शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार सजन दास सीस धरे चरणां उक्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

10. अब सब हवनकुण्ड की अग्नि शांत करने के लिए हवनकुण्ड के चारों ओर कच्ची लस्सी के फेरे लेंगे। इस हेतु सबसे पहले घी वाला सजन कच्ची लस्सी का जग बाँँ हाथ में पकड़ कर सीधे हाथ से लस्सी को जमीन पर गिराते हुए तथा मन में शब्द चलाते हुए हवनकुण्ड के दाहिनी ओर से एक चक्कर लगाएगा। फिर बाकी सजन भी बारी-बारी से ऐसे करेंगे।

11. पाँच जयकारे बोलेंगे:

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

12. अब बोलना है 'मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई'

मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई, मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई।
रघुवर जी ने पाई आहुति सांवले ने पाई
सांवले ने पाई आहुति, सांवले ने पाई
त्रिलोकी दे तुसी आप सहाई
ए रचना महाबीर जी रचाई
दूसरी वस्तु रहिये न काई
मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई, मैं नहीं आहुति रघुवर जी ने पाई।

13. अब हम हवन कुंड के चारों ओर बैठे-बैठे ही भाव से मिलकर बलधारी जी की आरती बोलेंगे।

आरती करां बलधारी ब्रह्मचारी अगों,
आरती करां बलधारी ब्रह्मचारी अगों
आरती करां ब्रह्मचारी, असुर सिंघारी अगों,
आरती करां ब्रह्मचारी, असुर सिंघारी अगों
आरती करां असुर सिंघारी, तेजधारी अगों,
आरती करां असुर सिंघारी, तेजधारी अगों
आरती करां तेजधारी, जगत हितकारी अगों,
आरती करां तेजधारी, जगत हितकारी अगों
आरती करां जगत हितकारी, पर उपकारी अगों,
आरती करां जगत हितकारी, पर उपकारी अगों
आरती करां पर उपकारी, न्यायकारी अगों,

आरती करां पर उपकारी, न्यायकारी अगों
आरती कीजे राजा रामचन्द्र रीझे,
आरती कीजे राजा रामचन्द्र रीझे
रघुनाथ जी दा ध्यान धरां,
महाबीर जी दा नाम जपां
रघुनाथ जी दा ध्यान धरां,
महाबीर जी दा नाम जपां
यम त्रास न दीजे अपना दर्शन दीजो,
यम त्रास न दीजे अपना दर्शन दीजो
आरती करां रघुनाथ जी दे अगों,
आरती करां रघुनाथ जी दे अगों

अंत में

सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय
सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय
सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

दिल है अर्पण, जान भी अर्पण

दिल है अर्पण, जान भी अर्पण ए साजन तेरे लिए ।

हर कर्म अपना करेंगे, ए साजन तेरे लिए॥

दिल है अर्पण जान - - - - -

तूने ही उत्पन्न किया है।

हम तेरी सन्तान हैं॥

आत्मा में जो निहित है।

तू वही भगवान है॥

दिल है अर्पण जान - - - - -

संतोष को धारण करेंगे ।
इच्छा मुक्त रहेंगे हम ॥
चित्त में सत्य आनन्द का अनुभव ।
तभी तो कर पाएंगे हम ॥

दिल है अर्पण जान - - - - -

धैर्य दृढ़ता से अपनाकर ।
निर्विकार रहेंगे हम ॥
तभी तो जीवन का हर कार्य ।
स्थिरता से कर पाएंगे हम ॥

दिल है अर्पण जान - - - - -

जीवन सत्य जानने हेतु ।
सच्चाई अपनाएंगे हम ॥
मानव धर्म को अपनाकर ।
श्रेष्ठ बन पाएंगे हम ॥

दिल है अर्पण जान - - - - -

समदर्शन समदर्शी बनकर ।
सजनता अपनाएंगे हम ॥
तभी तो परउपकारी बनकर ।
निष्कामी बन पाएंगे हम ॥

दिल है अर्पण जान - - - - -

Afternoon Session

2:00 pm







Evening Session

6:00 pm





सबका प्यार सबका प्यार, सबका प्यार, सबका प्यार

सबका प्यार तुम्हीं हो मेरा साजना

इस संदर्भ में श्रेष्ठता को प्राप्त करने हेतु हम बच्चों की भी कुछ प्रार्थना है

हमको प्यार हमको प्यार हमको प्यार करो
हम भटके नहीं हमरा हाथ थाम लो
हमको प्यार हमको प्यार हमको प्यार करो
हम चरित्रवान बनें हमें आत्मज्ञान दो
हमको प्यार हमको प्यार हमको प्यार करो
ब्रह्म जीव का खेला हमें बतला दो
हमको प्यार हमको प्यार हमको प्यार करो
ऐसी कृपा करो हमें संग ही रखो
हमको प्यार हमको प्यार हमको प्यार करो

नवयुग चेतना

सजनों अब जो बातचीत होने जा रही है उसे अत्यन्त ध्यानपूर्वक सुनने की आवश्यकता है क्योंकि कलुकाल जा रहा है और सतवस्तु आ रही है। इस विषय में जो युग जा रहा है उसके साथ जुड़े रहना कमज़ोर बने रह पिछड़ने की बात है और जो युग आ रहा है उसकी संस्कृति को अपनाकर तद्नुरूप जीवन जीना वर्तमान में जीवन जीते हुए सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त होने की बात है। अतः सतयुगी इन्सान बनने हेतु अब ध्यान से सुनो:-

युग आते हैं युग जाते हैं, पर समयकाल कहाँ रुकता है,
यह तो चलते चलते हुए भी, इक नए युग को रचता है।।

सजनों यह तो सर्वविदित ही है कि कुदरत ने समयकाल को चार युगों यथा सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में बाँट रखा है। इस संदर्भ में जानो कि धर्म-पुराणों के अनुसार यह जगत युगांतरों के निरंतर चक्र से गुज़रता रहता है। ठीक निश्चित समय के बाद इस संसार का पुनः सृजन होता है। ब्रह्माण्ड के सृजन और विनाश की यह

क्रिया ठीक काल-चक्र में होने वाले ऋतुओं के परिवर्तन की भाँति ही बनती और बिगड़ती रहती है। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शीत, हेमन्त व बसंत ऋतुओं की भाँति ही प्रत्येक युग में धीरे-धीरे जटिल क्रमिक परिवर्तन होते हैं जिससे प्रभावित होकर पृथ्वी व प्रत्येक प्राणी की अंतर्चेतना को सम्पूर्णतया पूर्व निर्धारित प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। काल-चक्र के स्वर्णिम प्रकाशमय युग से अंधकारमय युग तक तथा पुनः अंधकारमय युग से सुनहरी युग तक पहुँचने के अन्तराल में हुए परिवर्तन का मुख्य कारण सूर्य यानि केन्द्र-बिन्दु के इर्द-गिर्द हमारे सौरमण्डल की गति में हुए परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार सृष्टि के सृजन के उपरान्त क्रमशः सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग तथा कलियुग के पश्चात सतयुग आना सुनिश्चित होता है। इस विषय में सजनों जानो कि समय के साथ-साथ सामान्य रीति-रस्म, सिद्धान्त, रहन-सहन, आचार-व्यवहार, प्रथाएँ, कौलकरार, परस्पर विश्वस्तता, अवसर, समयाचार यानि धर्म और उनके साथ-साथ कार्य व्यवस्था आदि भी बदलते रहते हैं। साथ ही साथ चेतना यानि ज्ञानशक्ति, बोध, समझ, बुद्धि, अनुभूति, वृत्तांत, नाम, युक्ति, युद्ध, लड़ाई, सम्पत्ति, उपाय, तोषण, तुष्टि, योग, समझौता, संविधान यानि वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र अथवा संस्था का संगठन, संचालन और व्यवस्था होती है, वह भी बदलती रहती है। तभी तो कहा गया है कि:-

**समय तो समय है चलता है रहता, हर शै का रंग रूप बदलता है रहता
सुनो ध्यान देकर समय क्या है कहता, मेरे संग चले जो आनन्द में है रहता**

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों अब हम समय के जिस महत्वपूर्ण संक्रमण काल में हैं उसके अंतर्गत असत्य, अधर्म और पाप का प्रतीक कलियुग जा रहा है और सत्य, धर्म और पुण्य का द्योतक सतयुग आ रहा है। सजनों जिस बदलाव का यह कुदरती संकेत है उसके दृष्टिगत हम सबके लिए बनता है कि हम इस सत्य के प्रति जागरूक हो आने वाले युग विशेष की प्रवृत्ति यानि युग चेतना को धारण कर तद्नुरूप अपनी चाल या व्यवहार को सत्यता अनुरूप ढालने वाले युगधर्मी बनें व अपनी वास्तविक शान को प्राप्त हों। अन्य शब्दों में समय रहते ही अपने संविद् व्यवहार अर्थात् चेतनायुक्त व्यवहार के बल पर सबके प्रति अपने समस्त कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक संपादन करते हुए अपने जीवन की दिव्यता को दृढ़तापूर्वक आत्मसात् कर अपनी अजर-अमर हस्ती का सत्य पहचान लें और खुले दिल से सतयुग का, उसकी संस्कृति का स्वागत करें।

निःसंदेह इस हेतु सजनों नियत समय पर ही मानसिक रूप से इस अवश्यम्भावी परिवर्तन के प्रति तैयार हो, आत्मिक रूप से सचेतन होना होगा और समाज व राष्ट्र को जीर्ण करने वाली मान्यताओं को समाप्त कर आगामी युग सतयुग की नवीन मान्यताओं को स्थापित करने वाले महापुरुष यानि नव युग के निर्माता अर्थात् युगपुरुष बनना होगा। हम सबको ऐसा समर्थवान बनाने हेतु सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा है:-

**सतवस्तु दी सजनों चाल चलो, सतवस्तु दे वचन इस्तेमाल करो।।
सतवस्तु दे असूलां नू फड़ो सजनों, सत सत वचनां नाल प्यार करो।।**

स्पष्ट है सजनों उपरोक्त पंक्तियों द्वारा सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें, कलियुगी निकृष्ट नकारात्मक शारीरिक भाव-स्वभावों की तरफ से पलटा खवा, सतयुग के उत्कृष्ट सकारात्मक आत्मीयता युक्त भाव-स्वभाव अपनाकर एक सत्-वादी इंसान बनने का आवाहन दे रहा है ताकि हम एक ख्याल एक दृष्टि होकर, सब कुछ निष्काम भाव से करते हुए, एकता और एक अवस्था में सदा एक रस बने रह, अंत मोक्ष को प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकें।

वर्तमान समय व इस महान उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए सजनों हमारे लिए तत्क्षण आत्मिक ज्ञान प्राप्ति को महत्त्व दे, आत्मज्ञानी बनना अनिवार्य है। इस संदर्भ में निश्चित ही हम मानते हैं कि आज की भयावह परिस्थितियों व भौतिकवादी स्वाभाविक स्वरूप के दृष्टिगत इस शुभ कार्य की सिद्धि कोई विरला ही कर सकता है परन्तु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि इस मंगलकारी कार्य की सिद्धि हेतु:-

**हिम्मत दिखाई ओ जावो हिम्मत वधाई ओ जावो।
हिम्मत न हारनी ओ बेटा, हिम्मत बढ़ाई ओ जावो।।**

क्योंकि

**हिम्मत जेहड़ा लड़ावे इन्सान, ओ असलियत दी कर लवे पहचान।
इन्सान हो तो इन्सानी दिखाओ, ओ सजनों हिम्मत है जे बड़ी महान।।
इन्सान हो तो इन्सानी दिखाई ओ जावो, ओ सजनों हिम्मत बढ़ाई ओ जावो।
फिर दिव्य दृष्टि दा सबक़ लै के, मेल महाराज नाल खाई ओ जावो।।**

अतः आप भी सजनों हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और हिम्मतवान इन्सान बनके, विरलों में से विरले मानव बन सतवस्तु में आने का सौभाग्य प्राप्त कर लो। इस परिप्रेक्ष्य में हम तो यही कहेंगे कि अगर जीवन से प्यार है और अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त कर यथार्थ रूप से जी उठना चाहते हो तो सत्-धर्म के कल्याणकारी निष्काम मार्ग पर भक्ति-भाव से कदम आगे बढ़ाने में अब किंचित् मात्र भी विलम्ब न करो और सहज ही स्थिर बुद्धि हो जाओ। अन्य शब्दों में यदि किस्मत से सतयुग दर्शन वसुन्धरा आ ही गए हो तो इंसानों को सुसंस्कृत बनाने वाली शास्त्रविहित सतयुगी संस्कृति को पढ़-समझ कर, मन-चित्त से सहर्ष स्वीकारो और उसके ज्ञान रूप को सहर्ष ग्रहण कर, सत्य का प्रतीक बन जाओ। इस प्रकार जीव-ब्रह्म के सत्य का खेला जान, शान से इस जगत में बेखौफा-बेखतरा विचरते हुए, परोपकार कमाओ और मानवता के प्रतीक बन जाओ। इसी संदर्भ में अब ध्यान से सुनो:-

सुनो जी, सुनो जी समय की आवाज सुनो जी
 वह किस ओर है प्रवाज कर रहा सुनो जी
 कलुकाल है जाने वाला, नाचो ढोल बजा करके
 सतवस्तु है आने वाला, गावो खुशियाँ मना कर के
 हे.....

सतवस्तु दा बड़ा आकार है,
 कैसी है ओहदी कमाई
 कैसी है ओहदी हिम्मत हुशनी,
 कैसी है रौशनाई

सतवस्तु जिन्हां ने पहचान लई
 सत करे वर्ताओ
 सत् है ओन्हां दे घर दी रसम
 सत है रसम रिवाज

सतवस्तु दी रमज जें समझ लई,
 सत चीज जिन्होंने पछान लई
 ओ खावे खुराक निराली है,
 अक्ख होवे परखण वाली है

सतवस्तु दा साज जिन्होंने पहन लिया,
ओन्हां नू पुच्छण गुच्छण दी जरूरत नहीं
ओन्हां दे अंग संग हैं श्री राम खड़े,
ओन्हां नू डरन दी किसे नू जरूरत नहीं

डराए उस नू कौन, कौन है डराने वाला,
कोई उसनूं नहीं डरा सकदा
जेंदे ते ओ श्री रामचन्द्र महाराज दयाल होवे,
कोई कुझ वी नहीं बिगाड़ सकदा।

तभी तो कहा है:-

इको दी रटन सतवस्तु विच करनगे
श्री विष्णु भगवान हीरे नूं जीव होसिया पछाणन वाला
साजन जी होसिया पछाणन वाला

यह सब सुनने समझने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि 'सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ' के नियमित अध्ययन द्वारा अविलम्ब कलुकाल के भाव-स्वभाव छोड़ सतवस्तु की संस्कृति अपना लें। कहने का तात्पर्य यह है कि सतवस्तु का स्वाभाविक साज पहन एक स्थिर बुद्धि ताकतवर इंसान की तरह जगत उद्धार के निमित्त सब कुछ कर पाने योग्य परमेश्वर के आज्ञाकारी सुपुत्र बन व अपने ख्याल को इस जगत से आज्ञाद कर हृदय को इस तरह सचखंड बना लें कि हमारे लिए अपने यथार्थ आत्मस्वरूप का बोध करना सहज हो जाए। जानो यह अपने आप में सत्य धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर स्थिरता से बने रहने की बात है और ऐसा सुनिश्चित कर निष्पाप जीवन जीने में ही हमारी शान है। अतः इंसान हो तो इन्सानी दिखाओ और ए विध् अपनी वास्तविकता की पहचान कर अपना नाम रौशन कर लो।

सजनों अभी आपने सुना कि कलुकाल जा रहा है और सतवस्तु आ रही है।
अतः गहनता से आत्मनिरीक्षण कर, स्वाभाविक परिवर्तन लाना अनिवार्य है।

इस सन्दर्भ में सजनों समयानुकूल इस शुभ परिवर्तन को लाने के लिये
परमपद प्राप्त किए हुए कुछ पुरुषार्थी सजनों की आवश्यकता है।

निःसंदेह जो भी अपने मन में परमेश्वर के प्रति सच्ची लगन की अलख जगा,





उसे अखंडता से परमेश्वर में लीन रख सकता है
और अपने जीवन-वृत्त (Bio-data) को सुन्दर बना सकता है,
वही योग्य विरला सजन अपना नाम रौशन कर
सर्वोच्च परमपद को पा सकता है
और इस परम श्रेष्ठ सम्मान को प्राप्त कर सकता है।

इस विषय में सजनों हम तो आपको यही कहेंगे कि दुनियां में चाहे आपने कितने ही भौतिक पदों पर कार्य क्यों न किया हो पर हकीकत में अब समय है अपनी काबलियत दिखाने का और इस श्रेष्ठ परमपद को पाने का। कहते हैं सजनों कि आये मौके को हाथ से नहीं गँवाना चाहिये, अतः वक्त की नजाकत को समझो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना कर परमपद को पा लो। चूँकि कलुकालवासी यह काबलियत नहीं दर्शा पा रहे इसलिए परमपद के बहुत स्थान कुदरत में रिक्त पड़े हैं। अतः इस अवसर का लाभ उठाने हेतु सजनों यत्न करो, यत्न करो और आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर उसे व्यावहारिक रूप से आत्मसात् करने का पुरुषार्थ दिखा परमपद प्राप्त कर लो।



इस परिप्रेक्ष्य में सजनों प्रसन्नता का विषय तो यह है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते आप भी इस परमपद को पाने हेतु, योग्य पात्र बन अपना-अपना (Bio-data) प्रार्थना पत्र के रूप में दे सकते हैं। आपकी जानकारी हेतु इस हेतु आपका स्थिर-बुद्धि होना अनिवार्य है। यही नहीं सन्तोष, धैर्य के साथ-साथ आप जी द्वारा सबसे कीमती वस्तु यानि सत्-वस्तु को धारण किए होना व उसके धर्मसंगत व्यावहारिक रूप से भली-भान्ति परिचित हो इस मायावी जगत में विचरते समय उससे आज़ाद बने रहना अनिवार्य है।

इस विषय में सजनों जानो कि सतवस्तु धारण कर उसको व्यावहारिक रूप से इस्तेमाल करने में वही पारंगत हो सकता है जो आत्मविश्वास के साथ निर्भयतापूर्वक सत्य को निष्काम भाव से धर्म-संगत व्यवहार में लाकर अपना कार्य कर सकता है। यहाँ अपना कार्य करने से तात्पर्य परमपद पर आसीन होने के पश्चात जगत उद्धार के निमित्त अकर्ता भाव से कार्य करने से है। याद रखो सजनों जो भी यह कारज सफलता से सिद्ध कर लेगा वह मालोमाल हो जायेगा यानि जो अपनी करनी के अनुसार जगत का उद्धार करने में जितना सफल हो पायेगा उसी के आधार पर उसको incentive यानि बोनस प्राप्त होगा।



कुदरत के हुकम अनुसार सजनों अब हमने आपको सब बता दिया है। अतः आप व्यक्तिगत स्तर पर बताई योग्यता अनुरूप आत्म-निरीक्षण कर अपना जीवन-वृत्त यानि resume भेज सकते हो। इस जीवन-वृत्त (Bio-data) में सजनों अन्य स्वाभाविक गुणों के उल्लेख करने के साथ-साथ, आपको सत्य को व्यवहार में लाने का तजुर्बा कितना है इसका भी जिक्र करना आवश्यक है।

एक अन्य जरूरी सूचना यह है कि अपने इस (Bio-data) में आप अपने विषय में जिस भी तथ्य का उल्लेख करें वह शत-प्रति-शत सत्य होना चाहिये। इस विषय में जरा सी भी चूक होने पर पिता के साथ धोखा करने के अपराध में आपका नाम धोखेबाज रख दिया जायेगा। अतः जन्म-मरण की त्रास भुगतने की यह गलती मत करना। याद रखो आप द्वारा प्रेषित जानकारी का आंकलन करने के पश्चात काबिल सजनों के नाम घोषित कर दिये जायेंगे।

अन्त में सजनों हम तो यही कहेंगे कि परमपद पाने के इच्छुक सजन इस परमपद को प्राप्त करने की योग्यता/काबलियत में आने हेतु परमपिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में आ जाओ क्योंकि वह ही आपको अपने इष्ट से सब कुछ लेकर देने में सर्व समर्थ हैं। अतः परमपद पाने हेतु उन परोपकारी दाता जी से सब कुछ प्राप्त कर ज्ञानवान, बलवान व बुद्धिमान नाम कहाओ। इस के लिए सजनों परम पुरुषार्थ दिखाओ और दिन रात एक कर दो ताकि सत्य को धारण कर आप उसे धर्म संगत अपने जीवन में उतार सको और ए विध अपना हृदय सचखंड बना अपने यथार्थ ज्योति स्वरूप को जान लो। आपके हृदय यानि अंतःकरण की शुद्धता की परख कुदरत के वाली आप करेंगे। जो भी परिपूर्णतया इस परख पर खरा उतरेगा उसी योग्य सुपुत्र को सर्वोच्च परमपद पर आसीन कर दिया जाएगा। अतः सजनों इस महत्ता के दृष्टिगत अपने दिल में भरपूर उमंग व चाहत पैदा करो और श्रेष्ठ पद को पा अपना जीवन सफल बना लो।

फिर कह रहें हैं कि हिम्मत दिखाना, हिम्मत दिखाना और यह सोचकर मत बैठ जाना कि मुझसे नहीं हो पायेगा या फिर संगी-साथियों की बातों में बहक कर अस्थिर मत हो जाना अपितु यही विचार करना कि मैं मानव हूँ और मैं जो चाहूँ वह कर सकता हूँ। इस तरह सजनों दूसरों की या मन की सुनने की बजाय स्वयं पर विश्वास रखते हुए आत्मिकज्ञान प्राप्त करना और गुरुमत पर चलना। इस कार्य में सफल होने हेतु अक्षर का अभ्यास कराकर आपको युक्ति दे दी गई है। आपने इस युक्ति को प्रवान करना है और नौजवान युवावस्था को धारण कर बलवान बनना है। जानो ऐसा बनने पर ही जीवन प्रयोजन सिद्ध कर अमर पद प्राप्त कर पाओगे व जीवन मुक्त हो जाओगे।

आत्मनिरीक्षण (दोहे)

सजनों ध्यान से सुनो व अपनी स्वाभाविक परख कर, आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार करो व नेक व अच्छे इंसान बन जाओ ।

स्थिर बुद्धि इंसान ही
रह सकता सदा शांत
जो भी भावों में बहे
वह तो रहता अशांत.....सजन जी

.....वह तो रहता अशांत

जिसके मन दुर्भाव है
वही तो बुरा इंसान
सबके प्रति सद्भावी ही
कहलाता अच्छा इंसान.....सजन जी

.....कहलाता अच्छा इंसान

मिथ्या ज्ञान रखने वाला
कहलाता है अज्ञानी
अंतर्दृष्टि के खुलते ही
बन जाता है ब्रह्मज्ञानी.....सजन जी

.....बन जाता है ब्रह्मज्ञानी

दुष्टतापूर्ण जो आचरण करे
वही तो दुर्जन कहलाए
पुण्य आचरण वाला ही
सजन पुरुष कहलाए.....सजन जी

.....सजन पुरुष कहलाए

सत्य कर्म करने वाला
कहलाता है सत्कर्मी
दुष्कर्म जो भी करे
उसे कहते हैं अधर्मी.....सजन जी

.....कहते हैं अधर्मी

छलपूर्ण जो व्यवहार करे
वही होता है कपटी
निश्छलता का प्रतीक ही
कहलाता है निष्कपटी.....सजन जी

.....कहलाता है निष्कपटी



राग द्वेष रखने वाला
स्वार्थी इंसान कहाए
जो वैरागी सम रहे
वह परमार्थ बन जाए.....सजन जी

.....परमार्थ बन जाए

कर्कश वाणी जो बोले
वही झगड़े की खान
जो मधुर वाणी बोले
वैष्णव जन उसे मान.....सजन जी

.....वैष्णव जन उसे मान

जो भी होता आलसी
जीवन वृथा गँवाए
केवल कर्मठ इंसान ही
भवसागर से तर जाए.....सजन जी

.....भवसागर से तर जाए

जिसके मन में काम है
सदा व्याकुलता उसे सताए
निष्काम कर्म जो करे
आत्म तुष्ट हो जाए.....सजन जी

.....आत्म तुष्ट हो जाए

बात-बात पर जो क्रोध करे
वह कहलाता है अधीर
हर हालत में जो सम रहे
वही होता है धीर.....सजन जी

.....वही होता है धीर

झूठ सच दोनों चले
होने भवसागर से पार
सच किनारे जा लगा
झूठ डुबया अधविचकार.....सजन जी

.....झूठ डुबया अधविचकार

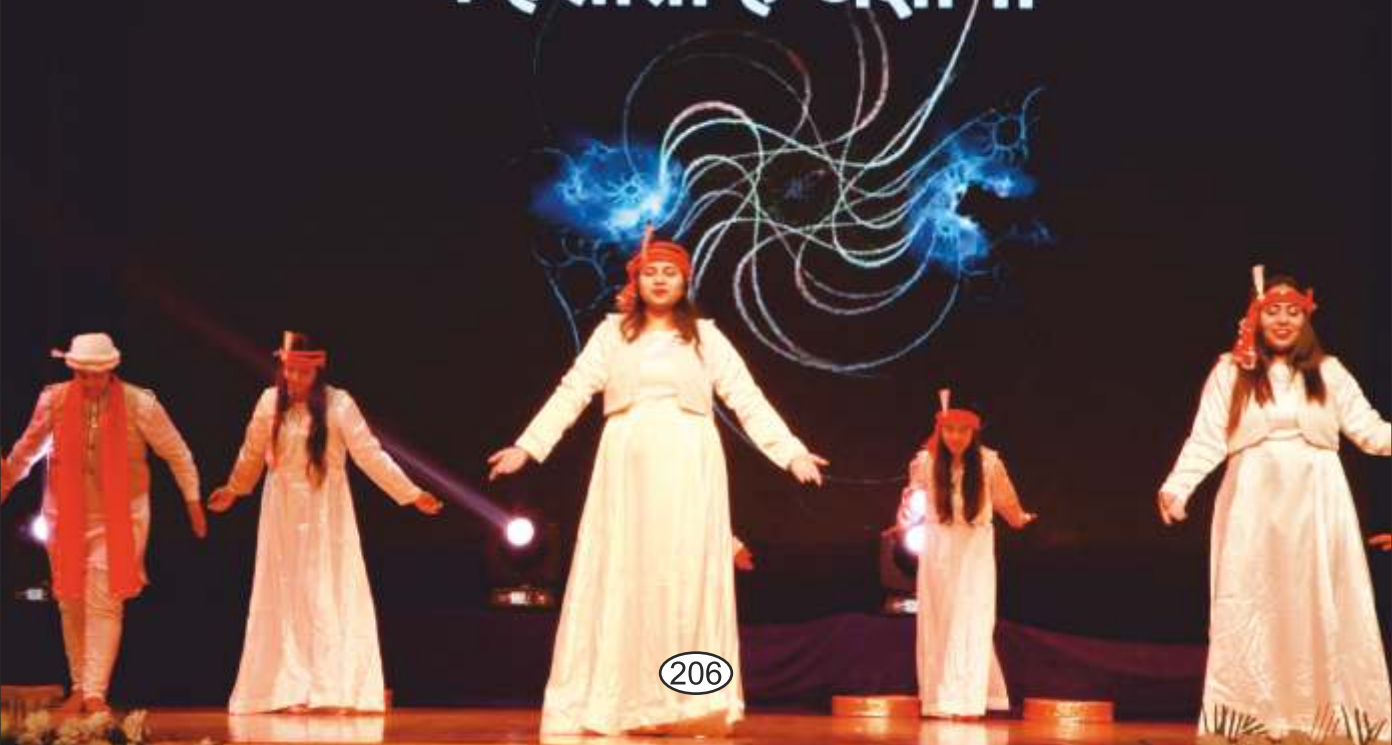
चोरी चकारी करने वाला
रहता सदा भयभीत
धर्मसंगत जो हर काम करे
वह रहता सदा निर्भीक.....सजन जी

.....रहता सदा निर्भीक

सबके प्रति सद्भावी ही



कहलाता है अज्ञानी



तामसिक आहार खाने से



स्वस्थ इंसान तो है वही
जो है सात्विक आहारी
तामसिक आहार खाने से
लगती नित नई/घनी बीमारीसजन जीलगती नित्
नई/घनी बिमारी

मन को जो वश में रखे
जितेन्द्रिय कहलाए
लगाम हाथ से छूटते
विषय-विकारी हो जाए.....सजन जीविषय-विकारी
हो जाए

विकार वृत्ति में जो ढले
इंसानियत से गिर जाए
निर्विकारी इंसान ही तो
अपने स्वरूप को पाए.....सजन जीअपने स्वरूप को पाए

बुरी संगति जो भी करे
वह कुमतिवान हो जाए
अच्छी संगति में रहने वाला ही
सुमतिवान कहलाए.....सजन जीसुमतिवान कहलाए

जो भी मानव कायर हो
सहज बनें व्यभिचारी
केवल वीर मानव ही
बन सकता है सदाचारीसजन जीबन सकता है सदाचारी

केवल शील इंसान ही
है चरित्रवान कहलाता
बदचलन इंसान तो
चरित्रहीन हो जाता.....सजन जीचरित्रहीन हो जाता

सत्-धर्म के मार्ग पर
जो भी स्थिर है रहता
वह ताकतवर इंसान ही
है उत्तम पुरुष कहलातासजन जीउत्तम पुरुष है कहलाता

दुष्टतापूर्णा जो आचरण करे



जीवन वृथा गँवाए





अंत में सजनों अगर आत्मनिरीक्षण के पश्चात् आपने अपने आप को सतोगुण सम्पन्न पाया है अर्थात् सत्यवादिता, सरलता, क्षमाशीलता, धैर्य, संयमशीलता आदि गुण आपके स्वभाव के अंतर्गत हैं तो समझो कि आप आत्मा से युक्त उच्च बुद्धि इंसान हो और आपके लिए प्रसन्नचित्त रहते हुए एकाग्र होकर अंतर्मुखी बने रह आत्मिक ज्ञान प्राप्त करना सहज है।

इस संदर्भ में जानो ऐसी महान उपलब्धि कोई विरला ही कर्मठ सौभाग्यशाली इंसान प्राप्त कर सकता है व इस अनमोल मानव चोले का भरपूर लाभ उठा अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार वह जीव परम उद्यम द्वारा अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम अवस्था को पा सकता है।

अतैव आप सब भी ऐसा ही उत्तम पुरुष बनने के प्रति दृढ़ संकल्पी हो जाओ और खुद पर आत्मनियन्त्रण रखते हुए विषय विकारों के प्रभाव से दुःख भरा जीवन, झुखते-रोते हुए जीने से व अंत जन्म मरण की भयावह त्रास भुगतने से खुद को बचा लो। कहने का तात्पर्य यह है कि मन चित्त लगाकर आत्मिक ज्ञान प्राप्त करो और जगत रूपी जीव-ब्रह्म के खेल की रमज जान अपने वास्तविक ब्रह्म स्वरूप में स्थित हो जाओ।

ओ३म् शांति शांति शांति ओ३म्



Evening Session

9:00 pm

New Year
Celebration









सतवस्तु का श्रृंगार

ओ माझी रे.....ओ माझी रे,
जाना है उस पार, जाना है उस पार।

हैय्या.....हैय्या.....हैय्या.....हैय्या

उस पार तुम्हारा कौन है रहता ?
वह तो है जी हम सबका परवरदिगार और सच्ची सरकार।

उससे तुम्हारा क्या है नाता ?
वह तो है जी हम सबका दिलबर और दिलदार।

वह तुम सबको क्यों है भाता ?
वह तो है जी हम सबका सिरजनहार और पालनहार।

वह है तुम्हारा पिता या माता ?
वह तो है जी हम सबका प्रजापति और सच्चा यार ।

उसका रूप रंग है कैसा ?
उसका रूप रंग न रेखा,
वह तो है जी शंख-चक्र-गदा-पद्मधार।
जो है सतवस्तु का श्रृंगार।।

सतवस्तु का श्रृंगार,

वही तो है जी, हम सब सजनों का प्यार।

ओ माझी रे.....ओ माझी रे।

जाना है उस पार, जाना है उस पार।।
हैय्या.....हैय्या.....हैय्या.....हैय्या।

जोर लगा के हैय्या – किनारा आने वाला है।
माझी रे.....ओ माझी रे लो पहुँच गए उस पार।।





थोड़ा हँस ले थोड़ा नच ले

थोड़ा हँस ले थोड़ा नच ले....
कैसे.....ऐसे
क्योंकि हँसने दे दिन आ गए.....

सजनों ईश्वर कहते हैं

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।
एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म-स्वरूप है अपना आप।।

एक ही मानो एक ही जानो, सजनों एक ही करो प्रवान।
इक इक ही सारा जग दिस्से, इक है ओ सर्व महान।।

हम एक हैं हम एक हैं, कुल संसार नगरी हम एक हैं।
फिर एक ही विराट हुआ, सारी विश्व सारी सगली हम एक हैं।
एक दी है रौशनी एक है विश्राम।

इको रूप तुम्हारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।
प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।

विचार नूं सजनों पकड़ो, सत करो ज़बान।
ओ एक दृष्टि ओ एकता, एकता पकड़ो महान।

एकता पकड़ो एकता दिखाओ, प्रीत महाराज नाल लाके तोड़ निभाओ।
इसी में तुहाडी शान है फिर रौशन तुहाडा नाम।

सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ, सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ।
सजनों एकता दा पवे प्रभाव ओये, सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ।।

चमत्कार एक है, एक ही विशेष ओ सजनों एक है।
हर अन्दर प्रवेश ओ सजनों एक है।।

हम एक हैं, हम एक हैं
हम एक हैं, हम एक हैं
एक दा है प्रवेश ओ सजनों एक हैं
एक ही है विशेष ओ सजनों एक हैं
इस परचम के साये तले हम एक हैं हम एक हैं









ठान लिया तो रुकना क्या

ठान लिया तो रुकना क्या
हम आगे बढ़ेंगे हम आगे बढ़ेंगे
और आगे बढ़ कर
श्रेष्ठ मानव बन जाएंगे

भौतिक ज्ञान के संग संग
आत्मिक ज्ञान भी प्राप्त करेंगे
जो शब्द विचार निहित हैं उसमें
उनको धारण कर नेक बनेंगे

ए विद् जो अंधकार है मन में
वह स्वतः ही मिट जाएगा
सद्ज्ञान की वर्षा होने पर
मन का मैल धुल जाएगा

फिर न कोई विषय रहेगा
जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करेंगी
तो ही तो भोग विलास की पीड़ा
हमें नहीं सहनी पड़ेगी

तभी तो दोष मुक्त हम रहकर
विकार रहित रह पाएंगे
निर्विकारी नाम कहा कर
जीवन सफल बनाएंगे

अंत में हम अपने इस महान लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति आत्मविश्वासी बन, जीवन की हर परिस्थिति में स्थिरता से सम अवस्था में बने रहते हुए सुनहरे कल की तरफ अविलम्ब बढ़ने का व अपने संग-संग अन्य विषय विकारों में ग्रस्त कलियुगवासियों को भी बढ़ाने का दृढ़ संकल्प लेते हैं। सजनों इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है, हम ऐसा सुनिश्चित करना अर्थात् बुरे से अच्छा इंसान बनना आवश्यक समझते हैं।

इस संदर्भ में हमें जो समुचित क्रिया करनी है उसके प्रति भी हम जागरूक हैं क्योंकि हम जानते हैं कि इस हेतु हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों को त्याग, निष्काम भाव से सुन्दर व पावनता की प्रतीक सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म युक्त स्वाभाविक पोशाक पहनने का पुरुषार्थ दिखाना होगा ताकि हमारा ख्याल अफुर हो अपने सच्चे घर में ध्यान स्थिर हो आत्मप्रकाश में स्थित हो जाए। इस तरह हमें समभाव-समदृष्टि के सबक को आत्मसात् करते हुए, परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करने की कला में निपुण हो, इस जगत में जो भी करना होगा, अकर्ता भाव से ही करना होगा ताकि हमारे अन्दर सदा अपने यथार्थ परमात्म स्वरूप की स्मृति बनी रहे और हम सर्गुण रूप में हर प्रकार से जगत का कल्याण करने में समर्थ हो परमात्मा नाम कहाएं।



शेषां ते असां रहने हां, एहो कुझ असां कहने हां ।

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शेषां ते असां रहने हां, एहो कुझ असां कहने हां ।
शेषां ते असां रहने हां, एहो कुझ असां कहने हां ॥
दयालु जी ओ हैन बक्षंद, हम दयालु जी दे हैं फ़रजन्द ।
फ़रजन्द नाम कहांवदे हां, शेषां ते असां रहने हां ॥
एहो कुझ असां कहने हां, बले बले ओ बले बले ।
बले बले ओ बले बले, बले बले ओ बले बले ॥
शेष एह साडी है ओ बिछाई, शक्ति लक्ष्मी साडे संग राहवे ।
चरणों में उस उमर बिताई असां राम चरणों में रैहंदे हां ॥
एहो कुझ असां कहने हां, बले बले ओ बले बले ।
बले बले ओ बले बले, बले बले ओ बले बले ॥
विश्रामी पलंग विश्राम हमारा, इक पासे श्री रामचन्द्र जी ।
दूजे पासे सजन श्री शहनशाह, विच साजन दा नज़ारा दिखेंदे हां ॥
एहो कुझ असां कहने हां, बले बले ओ बले बले ।
बले बले ओ बले बले, बले बले ओ बले बले ॥
हकूमत दी कुर्सी ते बैठे हिन भगवन, संग बैठे उन्हां दे शक्तिवान ।
संग बैठे ओ शक्तिवान, ओ शक्तिवान दा बेटा कहावने हां ॥
एहो कुझ असां कहने हां, बले बले ओ बले बले ।
बले बले ओ बले बले, बले बले ओ बले बले ॥
निर्वाण दे अन्दर जोत हमारी, सजन शक्ति है साडी आज्ञाकारी ।
हर अन्दर प्रकाश हमारा, जगमग जगदे रैहंदे हां ॥
एहो कुझ असां कहने हां, बले बले ओ बले बले ।
बले बले ओ बले बले, बले बले ओ बले बले ॥

शब्द:-

रूप रंग न रेखा कोई, बिन सूरजों प्रकाश है सोई ।
प्रकाश दा है ओ नज़ारा प्रकाश ही प्रकाश दिखेंदे हां ।
हर अन्दर असां रैहंदे हां ॥

ध्वनि:-

हम एक हैं हम एक हैं, एक दा है प्रवेश, ओ हम एक हैं ॥



नववर्ष का शुभ संदेश

सजनों यह सत्य तो सर्वविदित है कि इस कारण जगत की रचना सबसे सुन्दर व सर्वशक्तिमान निरुपाधि ब्रह्म द्वारा हुई। अतः मानो कि जो देश-काल व परिस्थितियों से निरपेक्ष रहने वाला परमतत्त्व है, इस जगत को संचालित रखने की सब शक्तियाँ व अधिकार उसी के हाथ में हैं। सुनिश्चित रूप से सजनों चाहे सृष्टि के उस मूलतत्त्व यानि परमात्मा को समझना मुश्किल है पर ब्रह्म विद्या प्राप्त कर, उसके इस मायावी जगत में आजीवन दोषरहित विचरते हुए, अंत निश्चित रूप से सर्वोत्तम गति यानि मोक्ष प्राप्त करने हेतु, उसकी शास्त्रविहित आज्ञाओं का यथा पालन करना कोई कठिन कार्य नहीं है।

निःसंदेह ऐसा गुणी बनने के लिए सजनों हमें अपनी सुरत अर्थात् चेतना शक्ति को उस सूक्ष्म परमाक्षर (जिसे चाहे ओ३म् कहो या ओ३मकार) के संग अखंडता से प्रति श्वास जोड़े रख उस निर्गुणिया के इस सर्गुण विराट रूप जगत की सार को पाना आवश्यक है। जानो यह पुरुषार्थ अपने आप में ब्रह्म सत्ता को धारण कर, अपने शरीर के अंग-प्रत्यंग यानि रोम-रोम, रग-रग को ज्योतिर्मय आत्मतत्त्व से सराबोर रखने जैसी महान बात है। अन्य शब्दों में जब ए विध् किसी मानव का ख्याल सबसे श्रेष्ठ चैतन्य यानि सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप से जुड़ ओजस्वी व तेजस्वी हो जाता है तो वह स्वतः ही आत्मिक ज्ञान की परम अवस्था को प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ प्रकार का सन्यासी बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह वैरागी व त्यागी अपने जीवन के समस्त फ़र्ज अदा किसी प्रकार के फल की आशा रखकर नहीं वरन् प्रसन्नतापूर्वक निष्काम भाव से सम्पन्न करता है। इस प्रकार तृष्णामुक्त रह वह अपने ख्याल को सच्चे घर में साधे रख सब कार्यों में समदर्शी बन जगत कल्याण हेतु सदा तत्पर रहता है और परोपकारी नाम कहाता है। ऐसा विचित्र होने पर वह विशुद्धता का प्रतीक कदापि किसी विध् भी संसारियों की मत पर नहीं चलता वरन् शब्द ब्रह्म विचारों अनुसार आजीवन अपने यथार्थ नित्य, शुद्ध, ज्ञानस्वरूप पर स्थिर बना रहता है और मुक्त स्वभाव वाला प्रकाशित बुद्धि इंसान कहलाता है। इस तरह वह ब्रह्म और जीव का ज्ञान रखने वाला,

जीवन में जो भी सोचता है, बोलता है व करता है, वह यथार्थ आत्मज्ञान के अनुरूप विश्वसनीय सत्य बात ही होती है। तभी तो उस आत्मतुष्ट, निर्विकारी, परमतत्त्व के साधक को, परोपकारी दृष्टि से इस जगत में सक्षमता से श्रेष्ठ कर्म करने के प्रति, सदा परमेश्वर का संग प्राप्त रहता है और उसे अपने आध्यात्मिक बल का बोध हो जाता है। तभी तो वह आत्मबोधी समभाव नजरों में कर, समदर्शिता अनुरूप, हर प्राणी के प्रति परमात्म-दृष्टि रखते हुए, इस जगत में आत्म भाव से विचरते हुए सजनता का प्रतीक बन पाता है।

सजनों आगामी नव वर्ष में सब ऐसे बनो, हाँ ऐसे बनो और इस ऊँचे आध्यात्मिक लक्ष्य को इसी जीवन में प्राप्त करने हेतु, आत्मविद्या की साधना में लीन हो जाओ, यही हमारी मंगलकामना है। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप अपने मन में उठने वाली अनेकानेक इच्छाओं और सांसारिक स्वार्थों का त्याग कर काम पर फतह पा सकोगे और आत्मनिष्ठा से अपने यथार्थ यानि आत्मा के अस्तित्व को सर्वव्याप्त मानते हुए आत्मानुभूति कर पाओगे व एकरूप हो अपना जीवन सफल बना पाओगे।

अंत में हम सबसे यही प्रार्थना करते हैं कि अपने कल्याण के निमित्त ऐसा हितकर पुरुषार्थ दिखाने के प्रति अपने मन में भरपूर उत्कंठा पैदा करो और ऊपरवर्णित उत्कृष्टता को प्राप्त हो अपने जीवन चरित्र को सुन्दर व पावनता का प्रतीक बना, इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त कर लो। क्या यह सबको मंजूर है?

हाँ जी।

तो फिर बोलो:-

जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे,
हनुमान जी दे वचनां ते चल चल कर
हम जन्म की बाजी जीतेंगे, जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे



दिल भी तेरा दिमाग भी तेरा
दिल भी तेरा दिमाग भी तेरा
मुझमें तो कुछ नहीं है मेरा
दिल भी तेरा दिमाग भी तेरा

तू चाहे तो मुझे अपना बना ले
तू चाहे तो गले से लगा ले
दिल भी तेरा दिमाग भी तेरा
मुझमें तो कुछ नहीं है मेरा

सुर भी तेरा ताल भी तेरा
मुझे बनाया कमाल भी तेरा
दिल भी तेरा दिमाग भी तेरा







पावन धरा वसुन्धरा

वसुन्धरा है सब सजनों की, गरीबों की अमीरों की,
इस धरा का सजनों-होय, इस धरा का सजनों क्या कहना,
वसुन्धरा है सबका गहना-- हो--हो ।

यहाँ सब सजन रहते हैं, इक दूजे को सजन कहते हैं।
यहाँ गाती हैं सुरतें-होय, यहाँ नाचें सुरतें मस्ती में,
मस्ती है सबकी हस्ती में हो---- ॥

हर दिल में प्यार अनोखा है, जो भेदभाव को धोता है।
हर मन में ही साजन ----होय, हर मन में ही साजन बसता है,
हाँ खिड़-खिड़ कर वह हँसता है--हो --हो ॥

घड़ी वैर-विरोध मिटाने की, मिलजुल कर जीवन बिताने की,
यहाँ टूटे रिश्ते- होय, यहाँ टूटे रिश्ते जुड़ते हैं।
यहाँ उजड़े हुए भी बसते हैं हो--हो ॥

खुद पर रखते विश्वास हैं हम, सतयुग के लिए तैयार हैं हम,
ये खेल-खिलाड़ी होय, ये खेल-खिलाड़ी कहता है,
जो सबके दिलों में रहता है हो हो ॥

हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे

हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे
हर सूँ शहनाईयाँ बजने लगे।
हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे ॥

सब हँसें तो होंगी खुशहालियाँ
सब कहते हैं हँसने से किस्मत जगे।
हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे ॥

हँसना मस्तिष्क को संतुलित रखे
तो चिंता-तनाव से मुक्ति मिले।
हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे ॥

हँसने से खिलती हैं मुख कांतियाँ
तभी तो वह सजन सबको सुन्दर लगे।
हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे ॥

हँसना है कसरत अंग-अंग की
इससे शरीर निरोगी रहे।
हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे ॥

हँसना है चित्त की निर्विकारता
जिससे जीव परउपकारी बने
परोपकारी बने सदाचारी बने।
हम हँसें तुम हँसो तो जग ये हँसे ॥

इसलिए तो कहते हैं केवल हँसने वाला ही आत्मिक शक्ति का भरपूर प्रयोग कर पाता है। जीवन-लक्ष्य प्राप्ति हेतु जो करना आवश्यक है वह सब कर पाता है।



शरीर निरोगी रहे।



शुभ संकल्प

आओ इस नववर्ष को
आत्मसिद्धि के प्रति समर्पित करने का उद्यम दिखा
अपना जीवन सफल बनाएं

सजनों जैसा कि हम जानते ही हैं कि
हम मिथ्या शरीर नहीं नित्य आत्मा हैं
तो हमारे लिए बनता है कि हम
परिस्थितियों अनुसार बदलने वाले
शारीरिक भाव-स्वभाव धारण करने की भूल कदापि न करें
वरन् अपने ख्याल को
यथार्थ आत्मिक स्वरूप में जोड़े रखने का पुरुषार्थ दिखा
ब्रह्ममय हो आत्मकल्याण करने के प्रति तत्पर हो जाएं।
आओ इसी जीवन हितकारी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए
इस नववर्ष की मंगल बेला पर यह शुभ संकल्प लें कि
हम शास्त्रविहित शब्द ब्रह्म विचारों का चिंतन व मनन करते हुए
अपने स्वभावों का ताना-बाणा निर्मल बना
उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल हो जाएंगे

और

आध्यात्मिक विद्या के यथोचित प्रयोग द्वारा आत्मविश्लेषण करते हुए
मनोवृत्तियों को विकृत करने वाले दुःखदाई रोगों से मुक्त हो
परिपूर्ण चेतन अवस्था को प्राप्त होने का अथक पुरुषार्थ दिखाएंगे

ए विध्

आत्मिक शक्ति पर दृढ़ विश्वास रखते हुए
निरंतर निष्काम भाव से आगे ही आगे बढ़ते जाएंगे

और

आत्मसिद्धि कर श्रेष्ठ मानव बनने में अवश्यमेव कामयाब हो जाएंगे।



2020

ए विध आत्मिक शक्ति पर
दृढ़ विश्वास रखते हुए
निरंतर निष्काम भाव से
आगे ही आगे बढ़ते जाएंगे
और
आत्मसिद्धि कर श्रेष्ठ मानव बनने में
अवश्यैव कामयाब हो जाएंगे।

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा मनाया गया मानवता-फेस्ट-2019 का किया गया मध्य आयोजन

साहसक गुरु
 फरीदाबाद। सतयुग दर्शन ट्रस्ट प्रथम वर्ष अगले फीसल में वीथी बसत में संस्कृत के युवा सदस्यों का नौवथा मार्गदर्शन करने हेतु मानवता-फेस्ट का आयोजन करता है परंतु इस वर्ष तो नववर्ष मिलनक मकाने हेतु विद्यमान पाठ को संघ आयु में ही ट्रस्ट द्वारा मध्य मानवता-फेस्ट का आयोजन किया गया। शीत ऋतुओं का रुठ दिखने हेतु लगभग सा अतिक्रम बने खलद इस फेस्ट में न आयु पशुपु संस्कृत सिखाते नने अंशसे से विराति ही थी। ट्रस्ट के प्रथम निता वसुधा फीसल में दश के विभिन्न भाग से अरु लैकडों बनने में बड़-बड़ कर द्रमो भाग शिष्य।
 यहाँ बच्चों को जीवन के अखणभूत क्रान्तिगत अविष्कार ज्ञान को अखणभूत प्रति में साधना अरु



द्वारा स्मृति में विद्यमान है और उसका विनियमनक बोध करवा है जो लोका को सहाय मय तकि बने अतिक्रम ज्ञान के व्याख्यातिक लक्षिके प्रोत्साह उत्साह नौवधखण के प्रेषण प्रयोग करके में निरुत्त बन जाए। । इसके अतिरिक्त बच्चों को प्रोत्साह को अरु अरु के प्रेषण को अरु

सतयुग दर्शन ट्रस्ट ने मनाया मानवता फेस्ट



पुनर्जीति म्युज, फरीदाबाद। मानवी विधात वसुधा में सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से मानवता-फेस्ट का आयोजन किया गया। प्रितम सेकण्टी बच्चों ने हिरल किया। यहाँ बच्चों को साधना के अखण के बारे में सहाय मय। बच्चों में बसनाओं का भाग अने के शिष्य उन्हीं अंगुलर हवन करने की विधि, सुनि अरु समझा कर, प्रतिक्रमक साग से हवन करवा मय।

हिन्दुस्तान
 बुधवार, 01 जनवरी 2020

युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए

फरीदाबाद। साहसक गुरु
 सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित मानवता-फेस्ट-2019 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए।



सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करने के दौरान साहसक गुरु के साथ युवाओं का समूह फोटो में दिखाया गया है।

कानून, सुधारा 01 जनवरी 2020

12 ज्योति दर्पण हस्तगत

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित मानवता-फेस्ट-2019



सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित मानवता-फेस्ट-2019 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए।

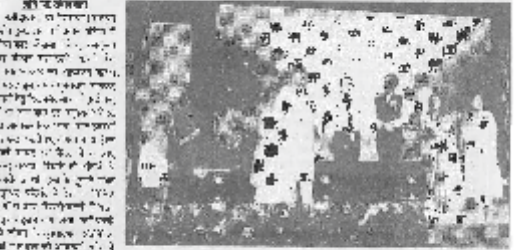
नववर्ष के उपलक्ष्य में सतयुग दर्शन ट्रस्ट ने आयोजित किया मानवता-फेस्ट, युवाओं ने बढ़वढ़ लिया हिस्सा

फरीदाबाद। सतयुग दर्शन ट्रस्ट नववर्ष के उपलक्ष्य में मानवता-फेस्ट का आयोजन करता है। इस अवसर पर युवाओं ने बढ़वढ़ लिया हिस्सा। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए।



कानून, सुधारा, सुधारा, 01 जनवरी, 2020

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित मानवता-फेस्ट-2019



सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित मानवता-फेस्ट-2019 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए।

सतयुग दर्शन ट्रस्ट ने आयोजित किया मानवता-फेस्ट-2019 कार्यक्रम

फरीदाबाद। सतयुग दर्शन ट्रस्ट मानवता-फेस्ट का आयोजन करता है। इस अवसर पर युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए।



SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)



SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES

Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities
www.satyugdarshandispensaries.org



SATYUG DARSHAN VIDYALAYA

Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.
www.satyugdarshanvidyalaya.net



SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH

B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.
www.sdier.org



SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY

UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities.
Affiliated to J.C. Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.
www.satyug.edu.in



DHYAN KAKSH

World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.
www.schoolofequanimity.com



SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA

Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. 17 Centers in operation. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.
www.satyugdarshansangeet.org



SATYUG GRAM SHIKSHA KENDRA

Aimed to upgrade the education levels of School-going children of weaker sections of the society through after-school study classes, and creating livelihood opportunities for out-of-school children by setting up Vocational Training Centers.

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics



**INTERNATIONAL
HUMANITY OLYMPIAD**
www.humanityolympiad.org



**HUMANITY
DEVELOPMENT CLUB**
www.awakehumanity.org